@Qpatrika @qaumipatrika hindi instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका

राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

शनिवार, 20 सितंबर 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 311 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

भारत अपने पड़ोसियों के साथ रिश्तों के मामले में भाग्यशाली नहीं रहा : राजनाथ

रक्षा मंत्री ने 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में शामिल हुए अधिकारियों और सैनिकों से बातचीत की

एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के 60 वर्ष पूरे होने पर साउथ ब्लॉक में उस युद्ध में शामिल हुए अधिकारियों और सैनिकों के साथ शुक्रवार को बातचीत की। उन्होंने कहा कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ रिश्तों के मामले में कभी भी भाग्यशाली नहीं रहा है, लेकिन हमने इसे नियति नहीं माना है। किसी भी राष्ट्र का वास्तविक भाग्य खेतों, कारखानों, प्रयोगशालाओं में और रणभूमि में बहाए गए पसीने से बनता है। भारत अपना भाग्य किसी और के भरोसे नहीं छोड़ता, भारत अपना भाग्य खुद गढ़ता है। इसका एक उदाहरण हमें ऑपरेशन सिंदूर के

दौरान एक बार फिर देखने को मिला उन्होंने कहा कि 1965 का युद्ध कोई छोटा-मोटा संघर्ष नहीं था, बल्कि वह भारत की ताकत की परीक्षा थी। उस दौर की परिस्थितियों को देखते हुए पाकिस्तान ने सोचा था कि घुसपैठ या गुरिल्ला हमलों से वह भारत को डरा देगा, लेकिन भारत की मिट्टी में पला हर जवान इस भावना के साथ पला-बढ़ा होता है कि चाहे कुछ भी हो जाए, लेकिन इस देश की संप्रभुता और अखंडता पर आंच नहीं आने देगा। रक्षा मंत्री ने कहा कि कोई भी युद्ध केवल लड़ाई के मैदान में नहीं लड़ा जाता, बल्कि युद्ध में मिली जीत पूरे राष्ट्र के सामूहिक संकल्प का परिणाम होती है। उन्होंने कहा कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों के मामले में भाग्यशाली नहीं रहा है, लेकिन हमने अपनी नियति स्वयं तय की है, जिसका ताजा उदाहरण ऑपरेशन सिंदूर है। रक्षा मंत्री ने 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दिग्गजों के साथ बातचीत में कहा कि हम पहलगाम की भयावह घटनाओं को भूले नहीं हैं। इस घटना को याद करते ही हमारा दिल भारी हो जाता है और मन क्रोध से भर जाता है। पहलगाम की घटना ने हम सभी को झकझोर दिया, लेकिन हमारे मनोबल को नहीं तोड़ पाई। हमने ऑपरेशन सिंदूर में दुश्मनों को दिखा दिया कि हमारा प्रतिरोध कितना मजबूत और शक्तिशाली है। हमारी पूरी टीम के करिश्मे ने साबित कर दिया कि जीत अब कोई अपवाद नहीं है। जीत एक आदत बन गई है और हमें इस आदत को हमेशा बनाए रखना चाहिए।

भारतीय चुनाव आयोग की बड़ी कार्रवाई

474 'आरयूपीपी' को सूची से हटाया, 359 पर कार्रवाई शुरू

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने बड़ी कार्रवाई की है। आयोग ने चुनावी प्रणाली को स्वच्छ और पारदर्शी बनाने के अपने अभियान को और तेज करते हुए 18 सितंबर को 474 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों (आरयूपीपी) को अपनी सूची से हटा दिया। साथ ही 359 आरयूपीपी पर कार्रवाई शुरू की। आयोग की यह कार्रवाई जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के तहत की गई, जिसमें प्रावधान है कि यदि कोई राजनीतिक दल लगातार छह वर्षों तक किसी भी चुनाव में भाग नहीं लेता, तो उसे पंजीकृत दलों की सूची से हटाया जा सकता है। इस कदम के साथ, पिछले दो महीनों में कुल 808 आरयूपीपी को सूची से हटाया जा चुका है, जिसमें 9 अगस्त को हटाए गए 334 आरयूपीपी शामिल हैं। आयोग ने 2019 से एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है, जिसका उद्देश्य उन आरयूपीपी की पहचान करना और हटाना है जो निर्धारित

शर्तों को पूरा करने में विफल रहे हैं। इस अभियान का मकसद निष्क्रिय या अनुपालक दलों को हटाकर चुनावी प्रक्रिया को साफ-सुथरा बनाना है। पंजीकृत दलों को प्रतीक चिन्ह, कर छूट जैसे विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, लेकिन इनके लिए नियमों का पालन अनिवार्य है दूसरे चरण में, ईसीआई ने 359 अन्य आरयूपीपी की पहचान की है, जो पिछले तीन वित्तीय वर्षों में अपने वार्षिक लेखापरीक्षित खाते जमा करने में विफल रहे हैं या जिन्होंने चुनाव लड़ा, लेकिन आवश्यक चुनाव व्यय रिपोर्ट दाखिल नहीं की। ये दल देश के 23 विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से हैं। इन दलों को हटाने से पहले, निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए, संबंधित राज्यों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए हैं।

राहुल गांधी के बयान पर भड़कीं कंगना, कहा- उन्हें देश की छवि की चिंता नहीं

एजेंसी

कुल्लू । लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा चुनाव आयोग पर लगाए गए 'वोट चोरी' के आरोपों पर भाजपा सांसद कंगना रनौत ने तीखी प्रतिक्रिया दी। कंगना ने कहा कि राहुल गांधी लगातार देश को शर्मसार करने वाले बयान दे रहे हैं। उनकी करतूतें ही ऐसी हैं। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि राहुल गांधी की हरकत और बयान से यह पता चलता है कि उनको कुछ पता नहीं रहता है। वे चुनाव आयोग पर भी झूठा आरोप लगा रहे हैं। जनता को सब पता चल गया है। जनता गुमराह नहीं होने वाली है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के जेन-जी वाले पोस्ट पर रनौत ने कहा कि राहुल गांधी को कुछ पता नहीं रहता है। वह कभी भी कुछ भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट कर देते हैं। पहले उनको जानकारी लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उनकी इस सोशल मीडिया पोस्ट से देश की छवि खराब हो रही है। उनको इसकी चिंता

कभी नहीं रहती है। वह कभी भी कुछ भी बयान दे देते हैं। सांसद ने कहा कि राहुल गांधी पहले भी विदेश जाकर भारत के खिलाफ बयान दे चुके हैं। मुझे लगता है यह उनके लिए कोई नई बात नहीं होगी। वे समय-समय पर इस तरह के बयान देते रहते हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने अमेरिका जाकर कहा था कि हमारे देश को बचाओ। अब भी उनकी यही सोच जारी है। यह दुखद है कि वे ऐसे बयान देने से बाज नहीं आ रहे। लगता है कि जैसे वे सुबह उठकर सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट कर देते हैं। कंगना ने आगे कहा कि राहुल गांधी को यह समझना चाहिए कि नेपाल में जेन-जी ने नेपोटिज्म सरकार को गिराया है।

सिख प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री से की गुरु गोबिंद सिंह की पादुकाएं 'जोरें साहिब' के संरक्षण की मांग

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी के नेतृत्व में सिख संगत के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर दसवें सिख गुरु गुरु गोबिंद सिंह और उनकी धर्मपत्नी माता साहिब कौर जी की पवित्र पादुकाएं 'जोरें साहिब' के संरक्षण और उनके उपयुक्त सार्वजनिक प्रदर्शन को लेकर अपनी सिफारिशें सौंपीं।प्रधानमंत्री मोदी ने प्रतिनिधिमंडल की पहल की सराहना करते हुए एक्स पोस्ट में कहा कि सिख प्रतिनिधिमंडल के प्रतिष्ठित और कुशल सदस्यों का स्वागत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हुई, जिन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी और माता साहिब कौर जी के अत्यंत पवित्र और अमूल्य पवित्र 'जोरे साहिब' की सुरक्षा और उचित प्रदर्शन के संबंध में अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं। 'जोरे साहिब' जैसे महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से पवित्र अवशेष, हमारे राष्ट्र के सांस्कृतिक लोकाचार के साथ-साथ

गौरवशाली सिख इतिहास का भी उतना ही हिस्सा हैं। ये पवित्र अवशेष आने वाली पीढ़ियों को गुरु गोबिंद सिंह द्वारा दिखाए गए साहस, धार्मिकता, न्याय और सामाजिक सद्भाव के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे। पुरी ने एक्स पर जानकारी दी कि पवित्र 'जोरें साहिब' में गुरु गोबिंद सिंह के दाहिने पैर की पादुका (11 इंच × 3.5 इंच) और माता साहिब कौर जी के बाएं पैर की पादुका (9 इंच × 3 इंच) शामिल हैं। उन्होंने कहा कि उनके परिवार को इन अवशेषों की सेवा का सौभाग्य तीन सौ वर्ष पूर्व स्वयं गुरु साहिब और माता जी से मिला था। उनके पूर्वज गुरु महाराज की प्रत्यक्ष सेवा में थे और उनकी निष्ठा से प्रसन्न होकर

● हरदीप पुरी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा सिख परंपरा और गुरु साहिबानों की शिक्षाओं के प्रति गहरी श्रद्धा और समान व्यत किया है।

गुरु साहिब ने इन्हें परिवार में संजोकर रखने की अनुमति दी। यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। पुरी ने बताया कि हाल ही में उनके चचेरे भाई सरदार जसमीत सिंह पुरी, जो इन पवित्र अवशेषों के अंतिम संरक्षक थे, का निधन हो गया। इसके बाद परिवार ने निर्णय लिया कि इन अमूल्य अवशेषों को अधिकाधिक श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर सुरक्षित रखा जाए। मंत्री ने कहा कि इस निर्णय के बाद संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से इन अवशेषों की बारीकी से जांच कराई गई। कार्बन परीक्षण द्वारा भी इनकी प्राचीनता और प्रामाणिकता की पुष्टि हुई है। इसके बाद विशेषज्ञों की एक समिति गठित की गई, जिसने 'जोरें साहिब' के संरक्षण और प्रदर्शन के लिए विस्तृत सिफारिशें तैयार कीं और प्रधानमंत्री को सौंपीं।

'विकसित भारत के रंग, कला के संग' में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का वक्तव्य

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली, 19 सितंबर। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण लगभग 10 किलोमीटर लंबा कैनवस था, जिस पर हजारों युवाओं और कलाकारों ने 'विकसित भारत' थीम पर अपनी कला के रंग बिखेरे। दिल्ली और देशभर से आए कलाकारों ने अपनी कल्पना से एक ऐसे भारत की तस्वीर पेश की, जो आत्मनिर्भर, सशक्त और विश्वगुरु बनने की राह पर अग्रसर है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि 'विकसित भारत के रंग, कला के संग' नाम जितना सुंदर है, उतना ही अद्भुत यह आयोजन भी है। हजारों युवाओं ने इस सफेद कैनवस पर भारत के भविष्य की तस्वीर उकेरी है, जो केवल कला का प्रदर्शन नहीं, बल्कि नए भारत के सपनों का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वास्तव में विकसित भारत युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे कैसा भारत और कैसा भविष्य गढ़ना चाहते हैं। इस आयोजन के माध्यम से सेवा पखवाड़ा को जन-जन तक जोड़ने का जो प्रयास हुआ है, वह अत्यंत सराहनीय और ऐतिहासिक है। मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि यह देश किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि हम सभी 140 करोड़ भारतीयों का है। इसलिए इसे किस स्वरूप में गढ़ना है और भविष्य में किस दिशा में आगे बढ़ाना है, यह हमारी सामूहिक

जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने अद्वितीय नेतृत्व और अथक परिश्रम से भारत को पूरे विश्व मंच पर एक नई पहचान दिलाई है। आज भारत एक मजबूत, आत्मविश्वासी और वैश्विक सहयोग देने वाला राष्ट्र बनकर उभरा है। मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि केवल प्रधानमंत्री जी का प्रयास ही पर्याप्त नहीं होगा। जब तक देश का हर नागरिक अपनी भूमिका को समझकर उसका निर्वहन नहीं करता, तब तक भारत के सपनों को साकार करना संभव नहीं है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि आत्मनिर्भर भारत और विश्वगुरु भारत का निर्माण युवाओं के सक्रिय सहयोग से ही संभव है। मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि युवा पीढ़ी अपने दैनिक जीवन में भी छोटे-छोटे कार्यों के माध्यम से बड़ा योगदान दे सकती है, चाहे वह स्वच्छता अभियान में भागीदारी हो, हरियाली और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाना हो, जरूरतमंद और गरीबों की सहायता करना हो, यातायात नियमों का पालन करना हो या समाज सेवा में आगे बढ़ना हो। उन्होंने कहा कि ऐसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कदम मिलकर राष्ट्र की प्रगति और गौरव को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाएंगे।

नेक्सा एवरग्रीन घोटाला

2,700 करोड़ रुपए की ठगी, मुख्य आरोपी जुगल किशोर गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने एक बड़े निवेश घोटाले का पर्दाफाश करते हुए 57 वर्षीय जुगल किशोर शर्मा को गिरफ्तार किया है। जुगल पर आरोप है कि उसने धोलेरा, अहमदाबाद में प्लॉट और 3 प्रतिशत साप्ताहिक रिटर्न का लालच देकर देशभर के निवेशकों से 2,700 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की। जुगल किशोर ने इस दौरान झूठा दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस प्रोजेक्ट के 'ब्रांड एंबेसडर' हैं, जिससे लोगों का विश्वास जीता जा सके। यह धोखाधड़ी नेक्सा एवरग्रीन प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी के माध्यम से की गई। जांच में सामने आया है कि इस मामले में देश भर में 150 से अधिक एफआईआर दर्ज हैं, जिनमें से अधिकांश राजस्थान से हैं। इस मामले में पहले भी दो आरोपी, सुभाष बिजारणिया और ओपेन्द्र बिजारणिया को दिसंबर 2024 में गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस को 98 पीड़ितों की शिकायत मिली थी, जिन्होंने

बताया कि कंपनी के निदेशक जुगल किशोर और विनोद कुमार ने उन्हें धोलेरा में प्लॉट देने और प्रति सप्ताह 3 प्रतिशत का भारी रिटर्न देने का आश्वासन दिया था। जुगल निवेशकों को लुभाने के लिए जूम मीटिंग्स करते थे और प्रधानमंत्री के वीडियो दिखाकर झूठा प्रचार करते थे। वे आकर्षक उपहारों जैसे मोबाइल फोन, लैपटॉप और रॉयल एनफील्ड बाइक का भी लालच देते थे। जनवरी 2023 से, कंपनी के पदाधिकारी फरार हो गए और उनकी वेबसाइट व मोबाइल ऐप बंद हो गई। इसी पैटर्न पर राजस्थान के सीकर और मध्य प्रदेश के ग्वालियर में भी मामले दर्ज हुए हैं।

जांच में पता चला है कि पीड़ितों से वसूले गए पैसे नेक्सा एवरग्रीन डेवलपर्स धोलेरा और 9 ओक डेवलपर्स धोलेरा के बैंक खातों में जमा किए गए थे। जुगल किशोर इन फर्मों का अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता था और दिल्ली के शाहदरा से अपना ऑफिस चला रहा था। पुलिस ने बताया कि अधिकांश पीड़ित सरकारी कर्मचारी हैं।

एआईएमआईएम कार्यकर्ताओं ने रोकी तेजस्वी की बिहार अधिकार यात्रा, महागठबंधन में शामिल करने की मांग

एजेंसी

दरभंगा। दरभंगा के सुपौल बाजार में शुक्रवार को नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा के दौरान ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के कार्यकर्ताओं ने उनकी वैन को रोककर नारेबाजी की। उन्होंने महागठबंधन में अपनी पार्टी को शामिल करने की मांग की।

इससे पहले, यात्रा के तीसरे दिन गुरुवार रात मधेपुरा जिले के सिंहेश्वर प्रखंड अंतर्गत झिटकिया में भी तेजस्वी को विरोध का सामना करना पड़ा था। जब उनकी यात्रा सिंहेश्वर से मधेपुरा की ओर बढ़ रही थी, तभी बड़ी संख्या में स्थानीय मुस्लिम युवा सड़क पर उतर आए और 'गठबंधन नहीं तो वोट नहीं' के नारे लगाने लगे थे। युवाओं की मांग थी कि यदि आरजेडी मुसलमानों की जनसंख्या के अनुपात में उन्हें राजनीति में

हिस्सेदारी नहीं देती तो वे वोट नहीं देंगे। शुक्रवार को तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा का चौथा दिन रहा। इस दौरान वे मधेपुरा से सहरसा पहुंचे, जहां उन्होंने तीन जगहों पर जनता को संबोधित किया। अपने भाषण में तेजस्वी ने बिहार की सबसे बड़ी समस्याओं पलायन और बेरोजगारी को मुद्दा बनाया। उन्होंने कहा कि आज भी लाखों बिहारी युवाओं को रोजगार की तलाश में अपने घर से दूर जाना पड़ता है। यह स्थिति बताती है कि राज्य में सुशासन पूरी तरह विफल हो चुका है। तेजस्वी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तंज कसते हुए कहा कि अब वे अचेत अवस्था में हैं और बिहार को संभालने की क्षमता उनमें नहीं बची है। उन्होंने युवाओं से अपील की कि बिहार को अब एक युवा मुख्यमंत्री चाहिए, क्योंकि खटारा सरकार अब चलने वाली नहीं है। तेजस्वी ने बेरोजगार युवाओं को भरोसा दिलाया कि अगर उन्हें मौका मिला तो जिसके पास डिग्री होगी, उसे नौकरी दी जाएगी। साथ ही उन्होंने भ्रष्टाचार को लेकर भी तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि बिहार में बिना घूस दिए कोई काम नहीं हो रहा है और यह स्थिति आम लोगों के लिए बेहद अपमानजनक है।

● शुक्रवार को तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा का चौथा दिन रहा।

प्रधानमंत्री शनिवार को गुजरात का देंगे 34,200 करोड़ के विकास परियोजनाओं की सौगात

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 20 सितंबर को गुजरात का दौरा करेंगे। इस दौरान वे भावनगर में आयोजित होने वाले 'समुद्र से समृद्धि' कार्यक्रम में शामिल होंगे और लगभग 34,200 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री इस अवसर पर जनसभा को भी संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, प्रधानमंत्री भावनगर में लगभग 7,870 करोड़ रुपये की समुद्री क्षेत्र से जुड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। इनमें मुंबई अंतरराष्ट्रीय क्रूज़ टर्मिनल, कोलकाता स्थित श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट पर नए कंटेनर टर्मिनल, पारादीप पोर्ट पर नए कंटेनर बर्थ व कार्गो सुविधाएं, कांडला स्थित दींडयाल पोर्ट पर मल्टी-पर्पज कार्गो बर्थ और ग्रीन बायो-मेथनॉल प्लांट, एन्नोर और

चेन्नई पोर्ट पर तटीय सुरक्षा कार्यों सहित कई परियोजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा, प्रधानमंत्री गुजरात में 26,354 करोड़ रुपये से अधिक की केंद्रीय और राज्य सरकार की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इनमें चारा पोर्ट पर एचपीएलएनजी रीगैसिफिकेशन टर्मिनल, गुजरात आईओसीएल रिफाइनरी में एक्रिलिक्स एवं ऑक्सो अल्कोहल परियोजना, 600 मेगावाट ग्रीन शू इनिशिएटिव, पीएम-कुसुम योजना के तहत 475 मेगावाट सौर फीडर, 45 मेगावाट बदेली सोलर प्रोजेक्ट तथा धोरडो गांव का संपूर्ण सौरकरण शामिल है। साथ ही स्वास्थ्य, राजमार्ग और शहरी परिवहन से जुड़ी परियोजनाओं की भी शुरुआत होगी।

प्रधानमंत्री मोदी धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (डीएसआईआर) का हवाई सर्वेक्षण करेंगे, जिसे सतत औद्योगिकीकरण, स्मार्ट अवसंरचना और वैश्विक निवेश केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु शनिवार को जाएंगी बिहार, श्री विष्णुपद मंदिर में करेंगी पूजा

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु शनिवार को बिहार के गया दौरे पर जाएंगी। अपने दौरे के दौरान वे प्रसिद्ध श्री विष्णुपद मंदिर में पूजा-अर्चना करेंगी। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु कल (20 सितंबर) बिहार के गया दौरे पर जाएंगी। अपने दौरे के दौरान वे प्रसिद्ध श्री विष्णुपद मंदिर में पूजा-अर्चना करेंगी। उल्लेखनीय है कि श्री विष्णुपद मंदिर गया का प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है। माना जाता है कि यहां भगवान विष्णु के चरणचिह्न अंकित हैं। यह मंदिर फल्गु नदी के तट पर स्थित है और पितृपक्ष में पिंडदान के लिए आने वाले श्रद्धालुओं का प्रमुख आस्था केंद्र माना जाता है।

दीपोत्सव के मौके पर अयोध्या को फ्लोटिंग रेस्टोरेंट का तोहफा देने आ रहे सीएम योगी

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार अयोध्या को दीपोत्सव के मौके पर फ्लोटिंग रेस्टोरेंट का तोहफा देने जा रही है। यह रेस्टोरेंट सरयू नदी के किनारे बनेगा और पर्यटकों के लिए एक नया अनुभव होगा। कंपनी के अधिकारी ने बताया कि यह फ्लोटिंग रेस्टोरेंट 20.5 मीटर लंबा और 8 मीटर चौड़ा है। इसमें 12.6 मीटर का हिस्सा रेस्टोरेंट के लिए उपयोग होगा। एक बार में 35 पर्यटक बैठकर इसका आनंद ले सकते हैं। इसकी लागत 3.59 करोड़ रुपये है। इस फ्लोटिंग रेस्टोरेंट को मुंबई की लिटमस मरीन कंपनी ने बनाया है। यह अयोध्या में पर्यटक निगम का तीसरा व्यावसायिक प्रतिष्ठान होगा। रेस्टोरेंट पूरी तरह से वातानुकूलित है। इसमें आधुनिक लाइटिंग सिस्टम के साथ-साथ एक सुसज्जित किचन भी है। इस तैयार करने में डेढ़ माह का समय लगा और करीब 20 कारीगरों ने तैयार किया है। इसकी खासियत यह है कि यह रेस्टोरेंट 10 से 15 मीटर गहरे पानी में चलेगा। फ्लोटिंग रेस्टोरेंट न सिर्फ खाने-पीने की सुविधा देगा, बल्कि पर्यटकों के लिए फोटोग्राफी का भी बेहतरीन स्थल बनेगा। नदी के बीच से दिखाई देने वाली राम की पैड़ी, घाटों और दीपोत्सव के समय जगमगाती अयोध्या की झलक पर्यटकों के कैमरे में कैद होकर जीवनभर की यादगार बन जाएगी। यह जगह सेल्फी पॉइंट के रूप में भी तेजी से लोकप्रिय हो सकती है।

भारतीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर को अमेरिकी पुलिस ने गोली मारी, पिता ने लगाई मदद की गुहार

महबूबनगर (एजेंसी)। अमेरिका में रह रहे एक तेलंगाना के सॉफ्टवेयर इंजीनियर की पुलिस ने गोली मारकर हत्या कर दी। घटना 3 सितंबर को कैलिफ़ोर्निया के सांता क्लारा में हुई। तेलंगाना के महबूबनगर जिले के रहने वाले 29 साल के मोहम्मद निजामुद्दीन के परिवार का कहना है कि यह घटना कैलिफोर्निया में रूममेट के साथ झगड़े के बाद हुई। निजामुद्दीन के पिता मोहम्मद हसनुद्दीन ने बताया कि उन्हें बेटे की मौत की जानकारी एक दोस्त से मिली। उनका कहना है कि झगड़ा रूममेट से एक मामूली बात को लेकर हुआ था। उन्होंने विदेश मंत्री जयशंकर को पत्र लिखकर मदद मांगी है। सांता क्लारा पुलिस के मुताबिक, 3 सितंबर सुबह 6:18 बजे उन्हें इमरजेंसी कॉल मिली। पुलिस ने बताया कि निजामुद्दीन ने झगड़े के दौरान अपने रूममेट को चाकू मार दिया था और जब पुलिस पहुंची तो वह चाकू लेकर दोबारा हमला करने की कोशिश कर रहे थे। पुलिस ने जबरन घर में प्रवेश कर उन्हें काबू करने की कोशिश की, इसी दौरान गोली चलाई गई। घायल निजामुद्दीन को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस के अनुसार, इस कार्रवाई से कम से कम एक जान बची। मौके से दो चाकू बरामद हुए। हसनुद्दीन ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर को पत्र लिखकर बेटे का शव महबूबनगर लाने में मदद मांगी है। उन्होंने लिखा, मुझे नहीं पता कि पुलिस ने उसे क्यों गोली मारी, कृपया तत्काल मदद करें। मजलिस बचाओ तहरीक के प्रवक्ता अमजद उल्लाह खान ने भी परिवार की अपील मीडिया के साथ साझा करते हुए सरकार से हस्तक्षेप की मांग की है।

103 यात्रियों वाले एयर इंडिया के विमान से टकराया पक्षी, कराना पड़ी इमरजेंसी लैंडिंग

विशाखापत्तनम (एजेंसी)। विशाखापत्तनम से हैदराबाद जा रहे एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान से एक पक्षी आकर भिड़ गया। विमान में 103 यात्री सवार थे। कहीं कोई समस्या पैदा न हो इसके लिए आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। अधिकारियों के अनुसार, उड़ान भरने के तुरंत बाद विमान के इंजन में तकनीकी खराबी आ गई, जिसके पीछे हवा में किसी पक्षी से टकराने का संदेह है। विशाखापत्तनम हवाई अड्डे के निदेशक एस राजा रेड्डी ने बताया कि एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान संख्या 2658 के पायलट ने उड़ान भरने के तुरंत बाद आपातकालीन लैंडिंग का अनुरोध किया और हैदराबाद की यात्रा रद्द कर दी। रेड्डी ने बताया, विशाखापत्तनम से रवाना होने के बाद, पायलट ने इंजन में कुछ समस्या की सूचना दी। इसलिए, उन्होंने आपातकालीन लैंडिंग का अनुरोध किया और विशाखापत्तनम लौट आए। विमान सुरक्षित रूप से उतरा और सभी यात्रियों को उतार लिया गया। उन्होंने आगे बताया कि एयरलाइन यात्रियों के लिए वैकल्पिक यात्रा की व्यवस्था कर रही है। निदेशक ने बताया कि विमान दोपहर 2:38 बजे विशाखापत्तनम से रवाना हुआ और केवल 10 समुद्री मील की दूरी तय करने के बाद दोपहर 3 बजे लौट आया। माना जा रहा है कि यह घटना विमान के ऊपर उठने के दौरान हुई।

केमिकल फैक्ट्री में विस्फोट, एक मजदूर की मौत और चार घायल

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पालघर में एक केमिकल फैक्ट्री में गुरुवार शाम विस्फोट हो गया। इस विस्फोट में एक मजदूर की मौत हो गई और 4 घायल हो गए। धमाका लिंबानी साल्ट इंडस्ट्रीज में गुरुवार शाम को हुआ था। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों ने बताया कि गुरुवार शाम करीब 7:30 बजे फैक्ट्री में विस्फोट हो गया, जब धातु और एसिड को मिलाया जा रहा था। इस वक्त वहां 5 मजदूर मौजूद थे। रिपोर्ट के मुताबिक पालघर जिला आपदा प्रबंधन सेल के प्रमुख ने कहा कि यह अत्यधिक रिएक्टिव प्रोसेस था, जिसके कारण विस्फोट हुआ। उन्होंने कहा कि एक मजदूर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अन्य गंभीर रूप से झुलस गए। घायलों को तुरंत अस्पताल में ले जाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। दो मजदूरों की हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है। धमाके के बाद अग्निशमन दल और आपदा प्रबंधन कर्मियों सहित आपातकालीन टीमें मौके पर पहुंचीं और हालात पर काबू पाया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

कुंतरी और धूर्मा में रेस्क्यू ऑपरेशन जारी, हटाया जा रहा मलबा

देहरादून (एजेंसी)। कुंतरी एवं धूर्मा गांव आपदा प्रभावित क्षेत्र में मलबे में दबे व्यक्तियों को निकालने के लिए दूसरे दिन रेस्क्यू जारी रहा। पुलिस, प्रशासन, एनडीआरएफ एवं एसडीआरएफ की टीमें लगातार राहत एवं बचाव कार्यों में जुटी हैं। कुंतरी लगा फाली में भी राहत बचाव टीम जुटी हुई है।

अब भाजपा ने किया राहुल पर बड़ा हमला कहा- घुसपैठियों को बनवाना चाहते हैं मतदाता

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीते कई दिनों से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी लगातार वोट चोरी का आरोप लगा रहे हैं। उनका कहना है कि लोगों के जबरियां मतदाता सूची से नाम हटाए जा रहे हैं। ऐसे ही आरोपी के बीच भाजपा ने राहुल गांधी को कटघरे में खड़ा करते हुए उन पर आरोप लगाया है कि वे घुसपैठियों को भारत का मतदाता बनवाना चाहते हैं। भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने पलटवार करते हुए कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां सभी लोग एक साथ रहते हैं, लेकिन घुसपैठियों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। राहुल गांधी घुसपैठियों को वोटर बनवाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे चुनाव आयोग ने सिरे से खारिज कर दिया है। राहुल गांधी के आरोपों पर चुनाव आयोग का जवाब बिल्कुल सही है।

मनोज तिवारी ने सवाल उठाया कि यदि राहुल गांधी के आरोपों में सच्चाई है तो उन्होंने चुनाव आयोग को शपथपत्र (एफिडेविट) क्यों नहीं सौंपा। यदि राहुल गांधी के दावे गलत साबित हुए तो उनकी संसद सदस्यता खतरे में पड़ सकती है। बिना सबूत के इस तरह के बयान लोकतंत्र को कमजोर करते हैं। एसआईआर एक सामान्य चुनावी प्रक्रिया है, जो देश के सभी राज्यों में लागू होती है। दिल्ली इस मामले में देश से अलग नहीं है। वहीं, दिल्ली सरकार के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने गुरुवार को जनकपुरी स्थित सर्वोदय कन्या विद्यालय में शहर की पहली निपुण शाला का उद्घाटन किया। यह उद्घाटन सरकार की निपुण संकल्प योजना के तहत किया गया, जिसका उद्देश्य स्कूली बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल में सुधार करना है। इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर हुई, जिसे सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान दिल्ली सरकार के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर मनाए जा रहे सेवा पखवाड़े के अंतर्गत गुरुवार को सर्वोदय कन्या विद्यालय सी-3 नंबर-1 में हमने एक निपुण शाला का उद्घाटन किया। इससे छात्राओं की बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता में सुधार होगा।

कांग्रेस ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए किया संविधान संशोधन-कानून मंत्री मेघवाल

प्रयागराज (एजेंसी)। केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा है कि संविधान बचाने की बात करने वाली कांग्रेस ने अपने शासनकाल के दौरान संविधान को तोड़ने-मरोड़ने और नष्ट करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी सांविधानिक संस्थाओं को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। इस तरह का कृत्य वह 2019 में कर चुके हैं। जिसका जवाब जनता ने उन्हें दिया था। फिर जनता उनको जवाब देगी। केन्द्रीय मंत्री मेघवाल शुक्रवार को आर्य कन्या डिग्री कॉलेज के स्थापना दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे।

कार्यक्रम के बाद वह पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कांग्रेस पर निशान साधते हुए कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए संविधान में संशोधन किया। उन्होंने संविधान का दुरुपयोग किया। पीएम मोदी ने अपने अब तक के कार्यकाल में अगर संविधान में कोई संशोधन किया है तो वह जनता के हित के लिए किया है अपने स्वार्थ के लिए नहीं किया है। उन्होंने कहा कि भारत का संसद भवन आत्मनिर्भर भारत और महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है। महिलाओं संसद में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का कार्य मोदी सरकार ने किया है। नए संसद भवन में नारी शक्ति वंदन अधिनियम लोकसभा में पारित कराकर नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया गया है।

बेंगलुरु की सड़कों पर हुए गड्ढों को लेकर सियासत शुरु, लोगों को वाहन निकालना हुआ कठिन

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु की सड़कों पर गड्ढों की भरमार है। गड्ढे ठीक होते इससे पहले यहां राजनीति शुरु हो गई है। राज्य के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार यहां एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद पत्रकारों ने उनसे गड्ढों को लेकर सवाल पूछ लिए। इस पर उन्होंने भरोसा दिलाया कि सड़कों की मरम्मत जल्द पूरी होगी इसकी व्यवस्था कर दी गई है। लेकिन जैसे ही उनसे एचडी कुमारस्वामी के एक्स पोस्ट के बारे में पूछा गया कि बेंगलुरु की खराब सड़कों के कारण आईटी कंपनियां डर रही हैं तो शिवकुमार ने पलटवार करते हुए कहा, वे खुद को प्रधानमंत्री का दाहिना हाथ कहते हैं, तो फिर बेंगलुरु के लिए 10,000 करोड़ रुपए क्यों नहीं ला पाए? उन्होंने कहा था कि मेकदाटू प्रोजेक्ट की मंजूरी 5 मिनट में ले आएंगे, क्या हुआ उसका? महादयी और अपर कृष्णा प्रोजेक्ट पर उनकी चुप्पी क्यों है? अगर वो मिट्टी का बेटा हैं, तो महाराष्ट्र द्वारा सुप्रीम कोर्ट में जाने की धमकी पर बयान क्यों नहीं दे रहे? उन्होंने ये भी कहा कि शिक्षण संस्थानों के बच्चों से प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखवाना राजनीति का हिस्सा है, अगर कुमारस्वामी को राजनीति ही करनी है तो सीधे चुनाव लड़ें।

जब उनसे पूछा गया कि इतने हजारों करोड़ खर्च होने के बावजूद गड्ढे क्यों बने रहते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, यह समस्या सिर्फ ट्वीट करने या प्रेस कॉन्फ्रेंस करने से नहीं सुलझेगी। हमने अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी है और जल्द इसका समाधान होगा। जब उनसे नारा लोकेश द्वारा कंपनियों को आंध्र प्रदेश आने का न्योता देने पर शिवकुमार ने कहा, वहां बिजनेस है ही नहीं, इसलिए बुलावा दे रहे हैं। पीएम ने खुद बेंगलुरु को ग्लोबल सिटी कहा है। यहां 25 लाख इंजीनियर हैं, जबकि कैलिफोर्निया में सिर्फ 13 लाख। यहां 2 लाख से ज्यादा विदेशी प्रोफेशनल्स काम कर रहे हैं। बेंगलुरु का टैलेंट और सिस्टम ही इसकी पहचान है। उन्होंने केंद्र पर भी आरोप लगाया कि बेंगलुरु के विकास के लिए केंद्र सरकार ने एक रुपया भी नहीं दिया।

रात 1.30 बजे ही क्यों ऑपरेशन सिंदूर अंजाम दिया गया... सीडीएस चौहान ने बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के द्वारा भारतीय सेना ने अपनी ताकत का एहसास पूरी दुनिया से कराया है। भारतीय सेना का मिशन पूरी तरह सफल रहा और इसकी दुनिया भर खासकर पाकिस्तान में इसकी खूब चर्चा हुई। पाकिस्तान को इस ऑपरेशन में भारी नुकसान हुआ। वहीं ऑपरेशन को लेकर लोगों के मन एक सवाल था कि रात 1.30 बजे ही क्यों ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया गया। इस सवाल का जवाब सीडीएस अनिल चौहान ने शुक्रवार को दे दिया।

सीडीएस चौहान ने कहा यदि सुबह 5 या 6 बजे के बीच ऑपरेशन चलाते, तब वह समय अजान का होता। इस दौरान वहां कई लोग मौजूद होते, इसकारण सेना ने तय किया कि रात 1.30 बजे कार्रवाई को अंजाम दिया जाए। सीडीएस चौहान ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने एक नए प्रकार के युद्ध की शुरुआत की है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि हमले के दौरान हर बार भारत ने पाकिस्तान को निर्णायक रूप से हराया।

सीडीएस चौहान ने रात के समय कार्रवाई के पीछे कहा कि सेना को अपनी तकनीक पर पूरा भरोसा है। सैटेलाइट इमेज और दूसरी तकनीक के द्वारा सटीक निशाना साधा जा सकता है। ऑपरेशन सिंदूर ने दिखा दिया कि लंबी दूरी के टारगेट को रात में भी कैसे हिट किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि पारंपरिक युद्ध के विपरीत युद्ध भूमि, वायु, समुद्र और साइबर क्षेत्र में लड़ा गया। जनरल चौहान ने कहा कि यहां जीत का एक पैमाना हमारे हमले की उच्च तकनीक थी जिसका प्रदर्शन वहां हुआ। रात के समय लंबी दूरी के लक्ष्यों पर सटीक हमले के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता थी। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमने हर बार पाकिस्तान को निर्णायक रूप से हराया।

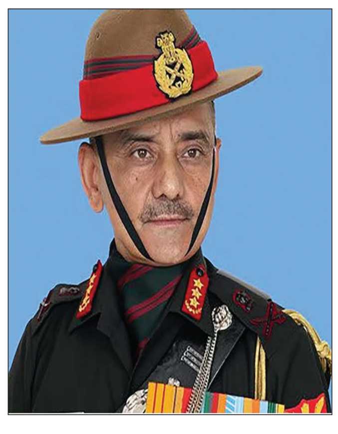

बॉम्बे हाईकोर्ट को फिर मिली बम की धमकी, अलर्ट पर मुंबई पुलिस

मुंबई (एजेंसी)। एक बार फिर मुंबई में दहशत का माहौल हो गया जब बॉम्बे हाईकोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी मिली। जानकारी के अनुसार शुक्रवार सुबह एक अज्ञात व्यक्ति ने हेल्पलाइन 112 पर कॉल करके हाई कोर्ट परिसर में बम विस्फोट होने की चेतावनी दी। इस कॉल के बाद पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। बम निरोधक दल, डॉग स्क्वॉड और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और कोर्ट परिसर को खाली करवाकर सघन तलाशी अभियान चलाया। मगर कहीं भी कोई संदेहस्पद सामान नहीं मिला। फिलहाल हाई कोर्ट परिसर में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है और मुंबई पुलिस इस बात की जाँच कर रही है कि कॉल असली थी या फर्जी। उधर एक हफ्ते के अंदर दूसरी बार धमकियाँ मिलने से नागरिकों और कोर्ट कर्मचारियों में डर का माहौल है।

*** मुंबई पुलिस ने अलर्ट जारी किया**

मुंबई पुलिस ने बम विस्फोट की धमकी के बाद तुरंत अलर्ट जारी किया है। सुरक्षा कारणों से पूरे शहर में कड़े एहतियाती कदम उठाए गए हैं। कोर्ट परिसर में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और शहर के महत्वपूर्ण चौराहों, रेलवे स्टेशनों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में गश्ती दलों की संख्या बढ़ा दी गई है। साथ ही, तटीय इलाकों और प्रमुख समुद्री मार्गों पर कड़ी जाँच शुरू कर दी गई है। नौसेना और तटरक्षक बल से भी लगातार संपर्क बनाए रखा जा रहा है। मुंबई पुलिस ने नागरिकों से शांत रहने की अपील की है और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना देने का अनुरोध किया है। आधिकारिक तौर पर कहा गया है कि पुलिस किसी भी संभावित भ्रम से बचने के लिए पूरी तरह तैयार है।

*** अज्ञात कॉलर की तलाश जारी**

मुंबई पुलिस के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि अदालत को प्राप्त 112 धमकी भरे कॉल के स्रोत का पता लगाने का काम तत्काल शुरू कर दिया गया है। तकनीकी टीमें और साइबर अपराध शाखा की एक टीम मामले पर काम कर रही है। पुलिस अब कॉल रिकॉर्ड, नंबर के लोकेशन डेटा, वॉयस कॉल के सिग्नेचर और अन्य डिजिटल सुरागों की गहन जाँच कर रही है। साथ ही, कॉल के कुछ संभावित चैनलों जैसे वॉयसओवर-आईपी, इंटरनेट-आधारित ऐप या स्थानीय सिम की जाँच करके असली कॉलर का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस ने कहा कि तकनीकी विश्लेषण से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर ही जाँच की दिशा तय की जाएगी, इसलिए बिना किसी निष्कर्ष पर पहुँचे सावधानीपूर्वक जाँच की जा रही है।

सुरक्षा उपायों के साथ हेलीकॉप्टर सेवा शुरु, अब आसान होगी चारोंधाम यात्रा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने मॉनसून अंतराल के बाद 15/16 सितंबर 2025 से चारधाम यात्रा 2025 के लिए हेलीकॉप्टर परिचालन फिर से आरंभ करने की स?वीकृति दे दी है। नागर विमानन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू के नेतृत्व में गहन समीक्षा के बाद चारधाम यात्रा और अधिक सुरक्षित बनाने हेतु महत?वपूर्ण पहल की गई है। सुरक्षा में कोई चूक बिल?कुल बर्दाश्त न करने के स्पष्ट आदेश के साथ, डीजीसीए को सख्त कदम उठाने और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अनुसार नायडू ने डीजीसीए, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, राज्य सरकार और उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने के लिए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साथ देहरादून और दिल्ली में कई समीक्षा बैठकें कीं। नागर विमानन मंत्री के निर्देशों के अनुसार, डीजीसीए ने अपनी टीम द्वारा सभी हेलीपैड, हेलीकॉप्टरों, संचालकों की तैयारियों और सहायता सुविधाओं का व्यापक निरीक्षण/आकलन किया। इसके बाद उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण और हेलीकॉप्टर ऑपरेटरों को संचालन फिर से आरंभ करने की स?वीकृति दी गई।

इसके अलावा, नागर विमानन महानिदेशालय द्वारा सभी हेलीकॉप्टर संचालक कंपनियों और पायलटों को चुनौतियों तथा तीर्थयात्रा संचालन से संबंधित परिपत्र में अपनाए गए अतिरिक्त सुरक्षा उपायों की जानकारी दी गई। डीजीसीए चारधाम यात्रा हेलीकॉप्टर संचालन पर कड़ी और निरंतर निगरानी रखेगा। मई-जून 2025 में चारधाम सेक्टर में कई हेलीकॉप्टर दुर्घटनाओं के बाद, विभिन्न उच्चाधिकार प्राप्त समितियों ने सुरक्षित हेलीकॉप्टर संचालन में सुरक्षा उपायों की सिफ़ारिश की थी, जिनमें भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण - एएआई द्वारा हवाई यातायात नियंत्रकों, भारतीय मौसम विभाग द्वारा मौसम विज्ञान अधिकारियों और उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूसीएडीए) द्वारा नियंत्रण कक्षों में योग्य कर्मियों की तैनाती शामिल है। सुरक्षा निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए आकस्मिक जांच और आकलन किए जाएंगे। डीजीसीए उच्चतम स्तर की विमानन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है और उसने फिर दोहराया है कि यात्रियों और चालक दल की सुरक्षा सर्वोपरि है। चारधाम यात्रा के लिए हेलीकॉप्टर सेवा फिर से आरंभ होने से श्रद्धालुओं को इन पवित्र तीर्थस्थलों तक परिवहन का एक सुरक्षित, कुशल और भरोसेमंद साधन उपलब्ध होने की उम्मीद है।

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक 24 को, एसआईआर और 'वोट चोरी' पर होगा मंथन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आगामी बिहार विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस पार्टी ने 24 सितंबर को पटना में अपनी विस्तारित कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक बुलाने का ऐलान किया है। इस बैठक में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, प्रदेश कांग्रेस कमेटियों और विधायक दलों के नेता, साथ ही कार्यसमिति के स्थायी व आमंत्रित सदस्य शामिल होंगे।

बैठक का मुख्य एजेंडा बिहार में पार्टी की चुनावी रणनीति तैयार करना, सीट-बंटवारे पर चर्चा करना और चुनाव आयोग द्वारा चलाए जा रहे स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसईआर) की प्रक्रिया पर सवाल उठाना होगा। कांग्रेस का आरोप है कि एसईआर के बहाने बड़े पैमाने पर दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और गरीब वर्गों के नाम मतदाता सूची से हटाए जा रहे हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं ने कई जगहों पर मृत या डुप्लीकेट नाम जोड़े जाने और जीवित मतदाताओं के नाम काटे जाने की शिकायतें भी दर्ज कराई हैं।

बैठक में 'वोट चोरी' का मुद्दा भी जोरदार ढंग से उठने की उम्मीद है। राहुल गांधी ने हाल में अपनी सभाओं में इस आरोप को लगातार दोहराते हुए कहा है कि जनता के अधिकारों से खिलवाड़ हो रहा है और मतदाता सूचियों में हेरफेर किया जा रहा है। इधर बिहार में महागठबंधन के सहयोगी दलों के बीच सीट बंटवारे पर मतभेद बने हुए हैं। कांग्रेस चाहती है कि उसे पर्याप्त सीटें दी जाएँ, जबकि अन्य दल पिछले नतीजों के आधार पर कम सीटें देने के पक्ष में हैं। इसी बीच कांग्रेस ने प्रदेश चुनाव समिति का गठन कर संभावित उम्मीदवारों और सीट वितरण की रूपरेखा तैयार करने का काम शुरू कर दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पटना में बैठक कर कांग्रेस पार्टी न सिर्फ अपने कार्यकर्ताओं को संदेश देना चाहती है कि केंद्रीय नेतृत्व राज्य की लड़ाई में पूरी ताकत से उतरेगा, बल्कि यह भी दर्शाना चाहती है कि पार्टी चुनाव से पहले पारदर्शिता, मतदाता अधिकार और गठबंधन की मजबूती जैसे अहम मुद्दों पर गंभीर है।

नीरव ने प्रत्यर्पण की प्रक्रिया को फिर से खोलने की मांग रखी, लग सकता है भारत को झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब नेशनल बैंक घोटाले में फंसे कारोबारी नीरव मोदी ने एक नई चाल चली है। उन्होंने ब्रिटेन की अदालत ने उस अपील को स्वीकार कर लिया है, जिसमें उसने अपनी प्रत्यर्पण की प्रक्रिया को फिर से खोलने की मांग रखी। इससे उसे जल्द भारत लाने की कोशिशों को झटका लग सकता है। इस फैसले के बाद भारत सरकार और जांच एजेंसियां लंदन को जवाब भेजने की तैयारी में हैं, ताकि लंबी कानूनी लड़ाई से बचा जा सके। सीनियर अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, नीरव मोदी ने अपनी कानूनी टीम के जरिए पिछले महीने यूके की वेस्टमिंस्टर कोर्ट में अर्जी दाखिल की थी, जिसमें उसने भारत में प्रत्यर्पण के खिलाफ अपील को फिर से खोलने की मांग की। अदालत ने इसे स्वीकार कर लिया है और भारत सरकार को नोटिस भेजा गया है।

नीरव ने अपनी अर्जी में दावा किया कि अगर उसे भारत भेजा गया तो कई एजेंसियां उससे पूछताछ करेंगी और इस दौरान उसे यातना का सामना करना पड़ सकता है। अदालत ने अभी इस अर्जी पर सुनवाई की तारीख तय नहीं की है। एक अन्य सरकारी अधिकारी ने कहा, हम विस्तार से जवाब देने की तैयारी कर रहे हैं, जो राजनयिक चैनलों के जरिए भेजा जाएगा। हम नीरव के दावों का खंडन करेंगे। अदालत से इस अर्जी को खारिज करने की अपील करेंगे, क्योंकि प्रत्यर्पण का आदेश 2022 में ही अंतिम हो चुका था। बता दें कि भारत सरकार यह बताने की योजना बना रही है कि अगर नीरव को प्रत्यर्पित किया गया, तो उसका मुकदमा पूरी तरह भारतीय कानून के अनुसार होगा। साथ ही, किसी भी एजेंसी की ओर से उससे पूछताछ नहीं की जाएगी। बता दें कि नीरव मोदी पर पंजाब नेशनल बैंक घोटाले में धोखाधड़ी, आपराधिक साजिश, विश्वासघात, भ्रष्टाचार, मनी लॉन्ड्रिंग और करार उल्लंघन के गंभीर आरोप हैं। 2011 से 2017 तक उन्होंने अपनी कंपनियों (जैसे फायरस्टार डायमंड, सोलर एक्सपोर्ट्स) के लिए पीएनबी के मुंबई ब्रांच से 1,200 से अधिक फर्जी लेटर्स ऑफ अंडरटेकिंग हासिल किए, जो विदेशी बैंकों से कर्ज लेने के लिए इस्तेमाल हुए।

हाईकोर्ट ने दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम में संशोधन के दिए निर्देश

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने भारतीय विधि आयोग को दिव्यांगजन अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम-2016 में संशोधन करने का निर्देश दिया है। यह संशोधन उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए रिक्त रहने वाली दिव्यांगजन कोटे की सीटों को अगले शैक्षणिक वर्ष के लिए आगे बढ़ाने का प्रावधान शामिल करने के लिए होगा। मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने इस मामले में सुनवाई करते हुए यह फैसला सुनाया। अदालत ने कहा कि बेंचमार्क दिव्यांगजनों की अनुपलब्धता के कारण रिक्त रहने वाली सीटों को अगले वर्ष के लिए स्थानांतरित करने का प्रावधान अधिनियम के उद्देश्यों को साकार करने में सहायक होगा। अदालत ने यह भी आदेश दिया कि याचिकाकर्ता की विकलांगता की सीमा का आकलन करने के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में एक नए मेडिकल बोर्ड द्वारा चिकित्सा परीक्षण कराया जाए। यह आदेश जाह्नवी नागपाल द्वारा दायर एक याचिका के जवाब में आया, जिसमें याचिकाकर्ता ने केंद्र सरकार और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग से नीट-यूजी 2022 चक्र में दिव्यांगजन श्रेणी की रिक्त सीटों में से एक सीट आवंटित करने की मांग की थी। याचिकाकर्ता ने आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम की धारा 32(1) को असंवैधानिक घोषित करने की भी मांग की थी। अदालत ने याचिका का निपटारा करते हुए कहा कि अधिनियम की धारा 32 (उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण) और धारा 34 (सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण) के बीच विरोधाभास मौजूद है। अदालत ने केंद्र सरकार से कहा कि वह याचिकाकर्ता द्वारा उठाए गए मुद्दों का समाधान करे, ताकि दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने के लिए अधिनियम के प्रावधानों को पूरी तरह लागू किया जा सके।

पीएम मोदी के आगमन से पूर्व मुख्यमंत्री ने आयोजन स्थल का भी किया स्थलीय निरीक्षण

कौमी पत्रिका

ग्रेटर नोएडा, 19 सितंबर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो मार्ट सभागार में पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आगामी उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो ([illegible]–2025) की तैयारियों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को आयोजन की तैयारी, सुरक्षा, व्यवस्थापन और प्रतिभागियों की सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह आयोजन प्रदेश की समृद्ध परंपरा, हुनर और उत्पादों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के साथ-साथ वोकल फॉर लोकल और मेक इन इंडिया अभियानों को बढ़ावा देगा। उन्होंने सभी जिलों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने, [illegible]स्टॉल्स और शैक्षणिक संस्थानों में व्यापक ब्रांडिंग पर जोर दिया। इसके अलावा युवाओं को प्रत्यक्ष अनुभव और उद्यमिता के अवसर प्रदान करने, खादी व ग्रामोद्योग को प्रोत्साहित करने और विदेशी बायर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए कि आगामी यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो ([illegible]–2025) में प्रदेश के प्रत्येक जिले की सक्रिय और प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित की जाए। प्रत्येक जिले के वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओडीओपी) से जुड़े उत्पादों के लिए विशेष स्टॉल स्थापित किए जाएंगे, ताकि स्थानीय हस्तशिल्प, खाद्य, हस्तकला और उद्योग संबंधी उत्पादों को वैश्विक खरीदारों और निवेशकों के सामने प्रदर्शित किया जा सके। उन्होंने कहा कि यह केवल प्रदर्शनी नहीं होगी, बल्कि यूपी की विविधता, सांस्कृतिक विरासत और व्यावसायिक प्रतिभा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण अवसर होगी। इसके माध्यम से स्थानीय उत्पादों और उद्यमियों को नई संभावनाओं, व्यापारिक नेटवर्क और निवेश के अवसर प्राप्त होंगे, जिससे प्रदेश के विकास और युवाओं के रोजगार सृजन में भी मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश

दिए कि यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआईटीएस–2025) की पहचान को मजबूत करने के लिए प्रदेश के सभी जिलों और शैक्षणिक संस्थानों में इसकी व्यापक ब्रांडिंग और प्रचार-प्रसार किया जाए। इसका उद्देश्य युवाओं और छात्रों को आयोजन के महत्व से अवगत कराना और उन्हें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। इसके तहत कॉलेज, यूनिवर्सिटी और अन्य शैक्षणिक संस्थान अपने कैंपस में यूपीआईटीएस के पोस्टर, डिजिटल डिस्प्ले और इवेंट जानकारी साझा करेंगे, ताकि छात्र, फैकल्टी और स्थानीय समुदाय सीधे इस आयोजन से जुड़ सकें और युवाओं में उद्यमिता तथा नवाचार के प्रति जागरूकता बढ़े। सीएम योगी ने गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को आयोजन से जोड़ने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे युवाओं को प्रत्यक्ष अनुभव और रोजगार/उद्यमिता के अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए कि यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो के अंतर्गत आयोजित होने वाले फैशन शो में देशभर की फिल्म सिटी से जुड़े विशेषज्ञों को भी शामिल किया जाए। इसका उद्देश्य हथकरघा, हैंडीक्राफ्ट और ग्रामोद्योग से जुड़े उत्पादों को व्यापक दृश्यता और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस माध्यम से न केवल उत्तर प्रदेश की हस्तकला और पारंपरिक उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि युवा डिजाइनर्स और स्थानीय कारीगर भी नए अवसरों और बाज़ार तक पहुंच बनाने में सक्षम होंगे। फैशन शो में खादी और ग्रामोद्योग के उत्पादों को पेश करने के लिए विशेष कैटवॉक और प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी, जिससे इन उत्पादों की गुणवत्ता और सौंदर्य का प्रभाव वैश्विक स्तर पर दिखाया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि इस पहल से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और युवाओं को उद्यमिता, नवाचार और रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए कि आयोजन में प्रतिभाग करने वाले वृद्धजनों और वरिष्ठ नागरिकों की सुविधा के लिए विशेष इंतजाम किए जाएं। इसके तहत नासा पार्किंग स्थल से शटल सेवा उपलब्ध कराई जाएं, ताकि उन्हें सहज और आरामदायक तरीके से आयोजन स्थल तक पहुंचने में मदद मिल सके। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि सुरक्षा और संचालन की पूर्ण जिम्मेदारी सुनिश्चित की जाए। किसी भी ई-रिक्शा या वाहन का संचालन नाबालिग चालक द्वारा न किया जाए। इसके अलावा, आगंतुकों के लिए सुरक्षा, मार्गदर्शन और सुविधा संबंधी निर्देश भी स्पष्ट किए जाएं, ताकि सभी प्रतिभागियों को सुरक्षित, व्यवस्थित और स्वागतपूर्ण अनुभव प्राप्त हो। सीएम ने विदेशी बायर्स और मेहमानों की सुरक्षा, आवास, परिवहन और संपूर्ण रहन-सहन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि विदेशी मेहमानों को सहज, सुरक्षित और स्वागतपूर्ण अनुभव मिलना चाहिए ताकि उत्तर प्रदेश की छवि मजबूत हो। बैठक में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री राकेश सचान, औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी समेत अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण मौजूद रहे। अपर मुख्य सचिव, एमएसएमई विभाग आलोक कुमार ने पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से मुख्यमंत्री को अब तक की तैयारियों से अवगत कराया।

भलस्वा लैंडफिल को केंद्रीय मंत्री मनोहर खट्टर ने लिया गोद, अब साइट को मिलेगी नई पहचान

नई दिल्ली। भलस्वा लैंडफिल को कूड़ा मुक्त करने और क्षेत्र को विकसित करने की कमान केंद्र सरकार ने संभाल ली है। केंद्रीय शहरी विकास एवं आवास मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने इस लैंडफिल साइट को गोद लिया है और एक साल के भीतर इसे कूड़ा मुक्त करने का लक्ष्य तय किया है। अब तक यह काम उपराज्यपाल संभाले हुए थे लेकिन केंद्र सरकार के हस्तक्षेप से परियोजना को नई दिशा मिलने की उम्मीद है। खट्टर ने स्पष्ट कर दिया है कि भलस्वा को दिल्ली के लिए मॉडल साइट के रूप में विकसित किया जाएगा। जून 2022 में ड्रोन आकलन से पता चला था कि भलस्वा लैंडफिल पर 73 लाख मीट्रिक टन कचरा जमा है। अब तक 62.36 लाख मीट्रिक टन लीगेसी कचरे की बायो-माइनिंग हो चुकी है। नौ जुलाई 2025 तक यहां 32.34 लाख मीट्रिक टन ताजा कचरा और मलबा भी डाला गया। फिलहाल 42.98 लाख मीट्रिक टन कचरा प्रोसेसिंग के लिए बचा है। एमसीडी के आंकड़ों के मुताबिक मई 2025 में 3,04,899 मीट्रिक टन, जून में 2,85,843 मीट्रिक टन और जुलाई के पहले नौ दिनों में ही 1,18,549 मीट्रिक टन कचरे की बायो-माइनिंग की गई। साइट पर 18 ट्रोमेल मशीनें लगातार काम कर रही हैं और अतिरिक्त मशीनें भी लगाई गई हैं। मूल योजना दिसंबर 2026 तक 100 प्रतिशत बायो-माइनिंग पूरी करने की थी, लेकिन खट्टर की देखरेख में इसे एक साल के भीतर पूरा करने का प्रयास होगा। कचरे से खाली होने वाली लगभग 70 एकड़ जमीन पर एमसीडी ने पुनर्विकास की योजना बनाई है। 50 एकड़ पर आधुनिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) सुविधाएं, ट्रांसफर स्टेशन और मटीरियल रिकवरी फैसिलिटी (एमआरएफ) सेंटर, 10 एकड़ में 500 टन प्रतिदिन क्षमता वाला बायो-मीथेनेशन/बायो-सीएनजी प्लांट, 10 एकड़ में हरित पट्टी और प्रतिपूरक पौधरोपण करेगी। साइट पर बांस लगाए जाएंगे जो प्रदूषण सोखने में मदद करेंगे और मिट्टी को मजबूत भी बनाएंगे। साइट की बाउंड्री पर घना वन क्षेत्र विकसित करने की योजना है। ताकि आसपास की बस्तियों पर प्रदूषण का असर कम होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि एक साल में पूरे लैंडफिल को कूड़ा मुक्त करना आसान काम नहीं है। इसमें न केवल मशीनों और संसाधनों की जरूरत होगी, बल्कि नई ताजा डंपिंग को भी रोकना एक बड़ी चुनौती होगी। एमसीडी और केंद्र सरकार दोनों के सामने यह परीक्षा की घड़ी होगी कि क्या वे तय समय सीमा के भीतर दिल्ली को इस कचरे के पहाड़ से निजात दिला पाएंगे।

पार्किंग विवाद में पड़ोसी ने पांच को रॉटवीलर कुत्ते से कटवाया, एक की हालत गंभीर; आरोपी फरार

दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के वेलकम स्थित सुभाष पार्क इलाके में महज बाइक पार्क करने को लेकर हुए विवाद में पड़ोसी ने एक परिवार पर लाठी-डंडों और लोहे की रॉड से हमला कर दिया। मारपीट के दौरान आरोपी के पालतू रॉटवीलर कुत्ते ने पांच लोगों को काटकर जख्मी कर दिया। आरोपी अपने दोस्तों के साथ मौके से फरार हो गया। हमले में एक ही परिवार के छह लोग घायल हो गए हैं।पीड़ित परिवार का आरोप है कि पुलिस ने बेहद हल्की धाराओं में मामला दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक सुभाष पार्क के गली नंबर-12 निवासी अरविंद राठौर का ज्वेलरी बॉक्स बनाने का कारोबार है। रविवार रात घर के सामने पड़ोसी शालू स्वामी ने अपनी बाइक खड़ी की थी। वह दोस्तों के साथ बाइक पर बैठकर बात कर रहा था। अरविंद ने शालू से बाइक हटाने के लिए कहा तो वह भड़क गया। अरविंद के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। अरविंद ने इसका विरोध जताया। पिता से बदसलूकी पर बेटे केतन ने शालू स्वामी को कॉल किया। शालू ने केतन को बुलाकर तीन-चार दोस्तों के साथ केतन पर लाठी-डंडे और लोहे की रॉड से हमला कर दिया। आवाज सुनकर उसके परिजन बचाने पहुंचे। आरोपियों ने केतन के पिता अरविंद राठौर, भाई आशीष चाचा पंकज, चचेरे भाई हर्ष और पत्नी निशा पर हमला कर दिया। शालू अपने पालतू रॉटवीलर कुत्ते को परिवार पर छोड़ दिया। कुत्ते ने अरविंद, केतन, आशीष, पंकज और हर्ष को काट लिया। घायलों को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां से अरविंद को निजी अस्पताल रेफर कर दिया गया।

रेल ट्रैक पर स्लीपर रखकर नौचंदी एक्सप्रेस को पलटाने की साजिश, 20 मिनट तक खड़ी रही ट्रेन

रायबरेली। प्रयागराज से सहारनपुर जा रही नौचंदी एक्सप्रेस के आगे स्लीपर रखकर मंगलवार की रात ट्रेन को पलटाने की साजिश की गई। घटना ऊंचाहार के अरखा व प्रतापगढ़ के परियावां स्टेशन के बीच हुई। स्लीपर ट्रेन के इंजन से टकराकर टूट गया। लोको पायलट ने मामले की जानकारी कंट्रोल रूम को दी। इस पर मौके पर पहुंची ऊंचाहार जीआरपी ने पड़ताल की। करीब बीस मिनट तक ट्रेन खड़ी रही, उसके बाद ऊंचाहार स्टेशन पर इंजन की जांच की गई और फिर ट्रेन सहारनपुर के लिए रवाना हुई। मंगलवार रात करीब 8 बजे नौचंदी एक्सप्रेस प्रयागराज से सहारनपुर जा रही थी। अरखा और परियावां स्टेशन के बीच रेल ट्रैक पर ट्रेन को पलटाने के लिए रखे स्लीपर से नौचंदी का इंजन टकरा गया। तेज आवाज के साथ स्लीपर टूट गया। इस पर लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को रोका। जांच की गई तो पता चला कि ट्रैक पर स्लीपर रखा गया था। लोको पायलट ने घटना की सूचना ऊंचाहार स्टेशन को दी। इस पर आरपीएफ ऊंचाहार व प्रतापगढ़ की नवाबगंज पुलिस मौके पर आई और घटना की जांच की।

NAME CHANGE
I, Aakash Deep Singh Tanwar S/o Satyavir Singh Tanwar born on 19.03.1994, residing at WZ-300, 3rd Floor, Gali No-8, Sadh Nagar, Palam Colony, New Delhi-110045, have changed my name from Aakash Deep Singh to Aakash Deep Singh Tanwar in future for all purposes , vide affidavit dated 12.09.2025 before Notary Prabha Rani.

NAME CHANGE
I, KHAIRUN NISHA W/O ABRAR AHMED, R/O F11/9, F BLOCK, JOGA BAI EXT, JAMIA NAGAR, OKHLA, NEW DELHI-110025, have changed my name from KHARUN NISA to KHAIRUN NISHA for all purpose.

NAME CHANGE
I, SUSHILA DEVI, W/O VIKASH, R/O GAGARWAS (71), POST BAWANIA, MAHENDERGARH-123034, HARYANA, HAVE CHANGED MY NAME TO SUSHILA FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, VIMLA DEVI, W/O SATISH KUMAR, R/O B-1/36, SEWAK PARK EXT., UTTAM NAGAR, DWARKA, DELHI-110059, HAVE CHANGED MY NAME TO BIMLA DEVI FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, KRISHAN KUMAR son of KESHU RAM residing at H NO-C-5/3, 4TH FLOOR, MIAWALI NAGAR, PASCHIM VIHAR, NEAR MAXFORT SCHOOL, DELHI-110087 have changed my name to KRISHAN KUMAR GARG for all future purpose.

NAME CHANGE
I, Mohammad Sakir s/o Mohammed Sabir R/o 2262/5B, Mandir Wali Gali, New Ranjit Nagar, Patel Nagar, J J Colony, New Delhi-110008 have changed my name to Mohammed Sakir for all future purposes.

NAME CHANGE
I, SOURABH JUNEJA S/O SATISH KUMAR JUNEJA R/O A35, 1st FLOOR, KIBITHU HOMES MEYFIELD GARDEN ,VIKAS MARG, SS PLAZA, SECTOR-47, SOUTH CITY-II, GURGAON, HARYANA-122018, HAVE CHANGED MY NAME TO SAURABH JUNEJA FOR ALL FUTURE PURPOSE.

NAME CHANGE
It is for general information that I, SHALU GUPTA D/o JAYPRAKASH, and W/o AJEET KUMAR R/o Mohalla Matkota, Sikardra Rao, Hathras, Uttar Pradesh-204215, declare that name of my father has been wrongly written as AJEET KUMAR in my PAN Card No. BZDPG1368L. The actual name of my father is JAYPRAKASH, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, RAJ KUMAR S/o SHYAM SUNDER, R/o 433, Pooth Kalan Village, North West Delhi, Delhi-110086, have changed the name of my minor son AKSHIT aged 15 years and he shall be hereafter known as AKSHIT KAUSHIK.

NAME CHANGE
I, RAJ KUMAR S/o SHYAM SUNDER, R/o 433, Pooth Kalan Village, North West Delhi, Delhi-110086, have changed the name of my minor son KESHAV aged 13 years and he shall be hereafter known as KESHAV KAUSHIK.

NAME CHANGE
I hitherto known as EKTA D/o MAHIPAL, and W/o MANOJ KUMAR, R/o H.No. 71, Redi Malakpur, Saharanpur, Nalheda Guzar, PO: Saharanpur, Dist. Saharanpur, Uttar Pradesh-247001, have changed my name and shall hereafter be known as POOJA DEVI.

NAME CHANGE
I, MANOJ PUROHIT S/o DEVI DUTT PUROHIT R/o TA-708, Parsavnath Edens 7 th Floor Alpha-2, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh-201308, have changed the name of my minor daughter VAISHNAVI alias VAISHNAVI PUROHIT aged 14 years and she shall hereafter be known as VAISHNAVI PUROHIT.

सार्वजनिक सूचना
[19/09, 20:55] Indian Publisiti Agency: सम्मन वास्ते करारवाद उगुर रानकीह तलब (आदेश 5 कायया । मर्मे6) न्सम्मन वास्ते करारवाद उगुर रानकीह तलब (आदेश 5 कायया । मर्मे6) न्यायालय सिविल जज (जू0वि0) प्रथन हापुड मूलवाद सं0 155 बनान सन् 2024 श्रीमति हसीना व 6 अन्य मुशी खां पुत्र आहगद सईद आयु करीब 42 वर्ष निवासी ग्राम अल्लीपुर मुगलपुर परगना प तहसील व जिला हापुड वादी। बनाम 1-श्रीमत्ति हसीना पत्नी स्व0 अली हसन आयु करीब 65 वर्ष
2- शौकीन आयु करीब 40 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 3-निसार आयु करीब 38 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 4-इसरार आयु करीब 36 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 5- बाबू मलिक पुत्र गौधीन आयु करीब 22 वर्ष
6-रिजवान पुत्र मौबीन आयु करीब 20 वर्ष निवासीगण बुद्धविहार मंडौली उत्तर पूर्वी दिल्ली- 110093
प्रतिवादीगण सं0 । त 09 हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालश गवत बैनामा दिनांक 11-4-2023 को निरस्त कराने एवं स्थाई निषेध त्मक आज्ञा का प्राद के दायर की है लिहाजा आपको सुषम लेटा है कि जाप बारीख 20 माह सन् 2025 बावका 10-80 बजे दिन को असालतन या मार्फत यकील के जो मुकदमें के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुताल्लिका मुकदमा का जराव दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके, हाजिर हों और पजबावदेही दावा की करें और आपको लाजिम है कि उसी सेज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईव अपनी जबावदेही के इस्तदमाल करना चाहते हों।
आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमूज और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज बतारीख 23 माह सन् 2025 ई0 जारी किया गया। मुंतरिम (vil Judge (Dr. Div.) First Hapur न्यायालय वि जज (जेडिक) प्रथम हापुडयायालय सिविल जज (जू0वि0) प्रथन हापुड
मूलवाद सं0 155 बनान सन् 2024
श्रीमति हसीना व 6 अन्य मुशी खां पुत्र आहगद सईद आयु करीब 42 वर्ष निवासी ग्राम अल्लीपुर मुगलपुर परगना प तहसील व जिला हापुड वादी। बनाम 1-श्रीमत्ति हसीना पत्नी स्व0 अली हसन आयु करीब 65 वर्ष 2-शौकीन आयु करीब 40 वर्षपुत्र स्व0 अली हसन 3-निसा आयु करीब 38 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन %इसरार आयु करीब 36 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन, 5- बाबू मलिक पुत्र गौधीन आयु करीब 22 वर्ष
6-रिजवान पुत्र मौबीन आयु करीब 20 वर्ष निवासीगण बुद्धविहार मंडौली उत्तर पूर्वी दिल्ली- 1100
प्रतिवादीगण सं0 । त09 हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालश गवत बैनामा दिनांक 11-4-2023 को निरस्त कराने एवं स्थाई निषेध त्मक आज्ञा का प्राद के दायर की है लिहाजा आपको सुषम लेटा है कि जाप बारीख 20 माह सन् 2025 बावका 10-80 बजे दिन को असालतन या मार्फत वकील के जो मुकदमें के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुताल्लिका मुकदमा का जराव दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके, हाजिर हों और पजबावदेही दावा की करें और आपको लाजिम है कि उसी सेज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईव अपनी जबावदेही के इस्तदमाल करना चाहते हों।
ह्रश्चश्चआपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमूज और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज बतारीख 23 माह सन् 2025 ई0 जारी किया गया। मुंतरिम (vil Judge (Dr. Div.) First Hapur न्यायालय वि जज (जेडिक) प्रथम हापुड
[19/09, 20:55] Indian Publisiti Agency: सम्मन वास्ते करारवाद उगुर रानकीह तलब (आदेश 5 कायया । मर्मे6) न्सम्मन वास्ते करारवाद उगुर रानकीह तलब (आदेश 5 कायया । मर्मे6) न्यायालय सिविल जज (जू0वि0) प्रथन हापुड मूलवाद सं0 155 बनान सन् 2024 श्रीमति हसीना व 6 अन्य मुशी खां पुत्र आहगद सईद आयु करीब 42 वर्ष निवासी ग्राम अल्लीपुर मुगलपुर परगना प तहसील व जिला हापुड वादी। बनाम 1-श्रीमत्ति हसीना पत्नी स्व0 अली हसन आयु करीब 65 वर्ष
2- शौकीन आयु करीब 40 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 3-निसार आयु करीब 38 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 4-इसरार आयु करीब 36 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन 5- बाबू मलिक पुत्र गौधीन आयु करीब 22 वर्ष
6-रिजवान पुत्र मौबीन आयु करीब 20 वर्ष निवासीगण बुद्धविहार मंडौली उत्तर पूर्वी दिल्ली- 110093
प्रतिवादीगण सं0 । त 09 हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालश गवत बैनामा दिनांक 11-4-2023 को निरस्त कराने एवं स्थाई निषेध त्मक आज्ञा का प्राद के दायर की है लिहाजा आपको सुषम लेटा है कि जाप बारीख 20 माह सन् 2025 बावका 10-80 बजे दिन को असालतन या मार्फत यकील के जो मुकदमें के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुताल्लिका मुकदमा का जराव दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके, हाजिर हों और पजबावदेही दावा की करें और आपको लाजिम है कि उसी सेज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईव अपनी जबावदेही के इस्तदमाल करना चाहते हों।
आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमूज और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज बतारीख 23 माह सन् 2025 ई0 जारी किया गया। मुंतरिम (vil Judge (Dr. Div.) First Hapur न्यायालय वि जज (जेडिक) प्रथम हापुडयायालय सिविल जज (जू0वि0) प्रथन हापुड
मूलवाद सं0 155 बनान सन् 2024
श्रीमति हसीना व 6 अन्य मुशी खां पुत्र आहगद सईद आयु करीब 42 वर्ष निवासी ग्राम अल्लीपुर मुगलपुर परगना प तहसील व जिला हापुड वादी। बनाम 1-श्रीमत्ति हसीना पत्नी स्व0 अली हसन आयु करीब 65 वर्ष 2-शौकीन आयु करीब 40 वर्षपुत्र स्व0 अली हसन 3-निसा आयु करीब 38 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन %इसरार आयु करीब 36 वर्ष पुत्र स्व0 अली हसन, 5- बाबू मलिक पुत्र गौधीन आयु करीब 22 वर्ष
6-रिजवान पुत्र मौबीन आयु करीब 20 वर्ष निवासीगण बुद्धविहार मंडौली उत्तर पूर्वी दिल्ली- 1100
प्रतिवादीगण सं0 । त09 हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालश गवत बैनामा दिनांक 11-4-2023 को निरस्त कराने एवं स्थाई निषेध त्मक आज्ञा का प्राद के दायर की है लिहाजा आपको सुषम लेटा है कि जाप बारीख 20 माह सन् 2025 बावका 10-80 बजे दिन को असालतन या मार्फत वकील के जो मुकदमें के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुताल्लिका मुकदमा का जराव दे सके या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि जो जबाव ऐसे सवालात दे सके, हाजिर हों और पजबावदेही दावा की करें और आपको लाजिम है कि उसी सेज अपने जुमला दस्तावेज पेश करें जिन पर आप बताईव अपनी जबावदेही के इस्तदमाल करना चाहते हों।
ह्रश्चश्चआपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमूज और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज बतारीख 23 माह सन् 2025 ई0 जारी किया गया। मुंतरिम (vil Judge (Dr. Div.) First Hapur न्यायालय वि जज (जेडिक) प्रथम हापुड

PUBLIC NOTICE
General public is hereby informed that my client ANWAR HUSAIN, S/O AJAZ HUSAIN, R/o A-219 TRANSIT CAMP, GOVIND PURI, KALKAJI SOUTH DELHI - 110019, Aged 51 Years, certify that he has now cut off all his relations with his son SABIR SABRI and have disowned and debarred his son from all his movable and immovable property due to misbehaviour and misconduct towards him and his wife namely Shaheen. That my client will not be responsible for his acts and action and any person dealing with him shall be at their own responsibilities. That SABIR SABRI OR ANY PERSON ASSOCIATED WITH HIM shall have no rights against the property owned by my client.
Mayank Tushamar & Associates
Advocates
Ch. No.544, Lawyers Block, Saket Courts Complex,NewDelhi-17,

NAME CHANGE
I, SUSHMA DEVI wife of ASHWANI KUMAR residing at H.NO-66, RANA JI ENCLAVE, NAJAFGARH, DELHI-110043, have changed my name from SUSHMA THAKUR to SUSHMA DEVI for all future purposes.

NAME CHANGE
I, ASHWANI KUMAR son of BALI RAM residing at H.NO-66, RANA JI ENCLAVE, NAJAFGARH, DELHI-110043, have changed my name from ASHWANI THAKUR to ASHWANI KUMAR for all future purposes.

NAME CHANGE
I,IRSHAD S/O NAUSE KHAN H.NO -90 DDA FLATS JJ COLONY CAMP NO-3 NANGLOI DELHI-110041. I have changed my name to IRSHAD KHAN Permanently

NAME CHANGE
I, RAJ SINGH S/O ROOP CHAND R/O 40, SATBARI GAON, SATBARI SOUTH DELHI, DELHI - 110074, I have changed my name from SHRIRAJ TO RAJ SINGH for all future purpose.

NAME CHANGE
I, ANTAR PREET KAUR D/o Gurcharan Singh R/o K-92 A, Krishna Park extn., Pastry Place, Tilak Nagar, Delhi-110018, have changed my name to ANTERPREET KAUR permanently.

NAME CHANGE
I, MANVINDER W/o Gurcharan Singh R/o K-92 A, Krishna Park extn., Pastry Place, Tilak Nagar, Delhi-110018, have changed my name to MANVINDER KAUR permanently

NAME CHANGE
I, JOGINDER CHAUDHARY s/o Ram Kripal Choudhary R/o P-30, Sharma Colony, Phase-2, Budh Vihar, Delhi-110086, have changed my name to JOGINDER CHOUDHARY permanently

NAME CHANGE
I, SUMAN S/o Joginder Choudhary R/o P-30, Sharma Colony, Phase-2, Budh Vihar, Delhi-110086, have changed my name to SUMAN CHOUDHARY permanently

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Pooja is the owner of Freehold Residential Plot area measuring 150 sq. yard., i.e., 125.41 sq. mtrs., out of Khasra no. 874., Situated at Andar Old Abadi in Village Tilpata Karanwas Pargan & Tehsil Dadri District Gautam Budh Nagar U.P. by virtue of Sale Deed dated 20.07.2024 Vide Doc no. 38037, Vol no. 28104 Page no. 73-92 SR- Dadri., in the chain documents below mentioned documents not available i.e. SMC of Late Shri Vidharam & Partition Deed between Mr. Vintaram & Mr. Vidharam & Mr. Brijesh Kumar in respect of Plot area measuring 500 sq. yard., i.e., 418 sq. mtrs., now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mrs. Sapna Pandey and same has been finance by Piramal Capital & Housing Finance Ltd. Branch: Loni Ghazibaad Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the‘ right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Ram Balak Shah S/o Mr. Bheekh Shah is the owner of Leasehold Residential Built-up First Floor on Flat No.271-B Having Super Area Measuring 24.16 Sq. Mtrs. Situated at Block S.K., Sector-66, Noida District Gautam Budh Nagar, and U.P. by virtue of Transfer Deed dated 22.01.2025 Vide Doc no.656, Book No.1, Volume No.14433, on Page Nos.21-40, Registered on 22.01.2025, in S.R-II Noida. (Regarding Mr. Bheekh Shah and Mr. Bairo Shah is the same person.) now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and same property Sold too be Mrs. Sandhya Tiwari W/o Mr. Narendra Tiwari and same has been financed by AAVAS FINANCIERS LIMITED Branch: Noida Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the‘ right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि श्रीमती नेहा, पत्नी श्री कृष्ण कुमार राय, श्री जय प्रकाश चौरसिया से एक आवासीय संपत्ति क्रय करने का इरादा रखती हैं। यह संपत्ति प्लॉट संख्या 447 के एक भाग पर निर्मित है, जिसका क्षेत्रफल 48 वर्ग गज है, जो ग्राम साहिबाबाद, कॉलोनी श्याम पार्क मेन, तहसील एवं जिला गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित है। उक्त संपत्ति को श्री जय प्रकाश चौरसिया ने श्रीमती मनीषा शर्मा से विक्रय विलेख दिनांक 20.11.2014 के माध्यम से खरीदा था, जो दस्तावेज़ संख्या 9171 के रूप में पंजीकृत है। दस्तावेज़ों की श्रंखला के अनुसार, श्री दौ दयाल शर्मा का निधन हो चुका है और उनके पश्चात केवल एक वैध उत्तराधिकारी के रूप में उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी उर्फ श्रीमती शीला देवी शेष हैं। कृपया ध्यान दें कि संपत्ति से संबंधित दस्तावेजों की श्रृंखला में से एक मूल दस्तावेज़ खो गया है — विशेष रूप से विक्रय विलेख जो दस्तावेज़ संख्या 7645, बुक संख्या 01, वॉल्यूम संख्या 9316, पृष्ठ संख्या 265-292, दिनांक 18.11.2011 को उप-पंजीयक प्रथम, गाज़ियाबाद के कार्यालय में पंजीकृत किया गया था। उपरोक्त दस्तावेज़ के गुम हो जाने के संबंध में दिनांक 19.09.2025 को पूर्वी जिला अपराध शाखा, दिल्ली में एक ऑनलाइन प्राथमिकी (लॉस्ट रिपोर्ट संख्या 3226168/2025) दर्ज कराई गई है। कृपया यह भी अवगत हों कि उक्त संपत्ति वर्तमान में जीआईसी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड, शाखा- यूजीएफ-10 ए-ई, कंचनजंघा बिल्डिंग, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली के द्वारा वित्तपोषित की जा रही है। यदि किसी व्यक्ति को उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया इस सूचना की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति नीचे दिए गए पते पर पंजीकृत डाक के माध्यम से एवं ई-मेल द्वारा अधोहस्ताक्षरी को भेजी जा सकती है। यदि निर्दिष्ट अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती है, तो उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी दावा अमान्य और निष्प्रभावी माना जाएगा।
[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE
I, BIBI ZOHRA W/O ABDUL RASHID R/O FD-33 SHAHEEN BAGH LANE 24 ABDUL FAZAL ENCLAVE PART 2 DELHI -110025 HAVE CHANGED MY NAME TO ZOHRA BEGUM

NAME CHANGE
I MOHD ARSHAD S/O MOHD ZABIR R/O HOUSE NO-483 P-4 BLOCK SULTAN PURI C BLOCK NORTH WEST DELHI 110086 HAVE CHANGED MY NAME TO MD ARSHAD ALAM

NAME CHANGE
I DARAKHSHAN W/O MD ARSHAD ALAM R/O H NO- 483 P/4 BLOCK SULTAN PURI NORTH WEST DELHI 110086 HAVE CHANGED MY NAME TO DARAKSHA

NAME CHANGE
I Mohd Sultan S/O Mohammed Salim R/O. H-1-93/94, H-1-Block, New Seelampur, Delhi-110053 changed my name to Mohammad Sultan Attari.

NAME CHANGE
I Mohd Saleem Khan S/O. Yusoof Jama R/O. H-1-93/94, H-1-Block, New Seelampur, Delhi-110053 changed my name to Mohammed Salim.

NAME CHANGE
I, Naval Kishore S/O Ram Charan R/O A-101/ LG-1, Block -A, Dilshad Colony, jhilmil, PO: Jhilmil , Dist: East Delhi , Delhi -110095, have changed the name of my minor Son Deepak aged 16 years and he shall hereafter be known as Deepak Naval Kishore

NAME CHANGE
NEETU BHARADWAJ W/O SANDEEP SHARMA H/O ,D- 85 GURUDWARA ROAD SHANKAR DAIRY UTTAM NAGAR DELHI - 110059 , I have changed my name to NITU SHARMA Permanently

सार्वजनिक सूचना
आम जनता को यह जानकारी दी जाती है कि हमारी ग्राहक आम जनता को सूचित किया जाता है कि हमारे मुवक्किल श्रीमती शारदा रानी पत्नी श्री अशोक कुमार फ्रीहोल्ड आवासीय संपूर्ण भूतल की मालकिन हैं, जिसकी छत के अधिकार के बिना नगर निगम संख्या WZ-119 है, जो प्लॉट संख्या B-54 के दाहिनी ओर 25 वर्ग गज भूमि क्षेत्र पर निर्मित है, खसरा संख्या 2020 और 2070 का हिस्सा, ग्राम तिहाड़ के क्षेत्र में स्थित है और कॉलोनी बी-ब्लॉक हरि नगर क्लॉक टॉवर नई दिल्ली 110064 के रूप में जानी जाती है। विक्रय विलेख दिनांक 29.07.2025 का दस्तावेज़ संख्या के रूप में गुण। 2025/25/आई/21323 पृष्ठ संख्या 151-164 एसआर-पश्चिम जनकपुरी पर। आज तक और श्रीमती चरणजीत कौर द्वारा श्री विनय कुमार के पक्ष में बुक नंबर 1 वॉल्यूम नंबर 17004 में पेज नंबर 138-143 एसआर- II जनकपुरी पर डॉक नंबर 13911 के तहत निष्पादित अपना मूल विक्रय पत्र खो गया है/गुम हो गया है। और मूल बिक्री विलेख दिनांक 04.03.2010 को श्री विनय कुमार द्वारा (1) एस मनमोहन सिंह बिंद्रा, (2) श्रीमती हरजीत कौर बिंद्रा, (3) एस राम राय सिंह बेदी और (4) श्रीमती हरविंदर कौर बेदी के पक्ष में दस्तावेज़ संख्या 4521 के तहत पुस्तक संख्या 1 खंड संख्या 17425 में पृष्ठ संख्या 187-191 एसआर-द्वितीय जनकपुरी पर निष्पादित किया गया। और ऑनलाइन एफआईआर संदर्भ संख्या 430/2014, एलआर संख्या 3225951/2025 दिनांक 19.09.2025 अब हमारा ग्राहक घोषणा कर रहा है कि उक्त संपत्ति पर किसी अन्य व्यक्ति का कोई अधिकार नहीं है, और इसे श्रीमती किरण मिश्रा पत्नी श्री शत्रुघ्न मिश्रा को बेचा जाएगा और इसे उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड शाखा- शादीपुर, दिल्ली द्वारा वित्तपोषित किया गया है। यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त संपत्ति में अधिकार@स्वामित्व या हित के संबंध में कोई आपत्ति या दावा है तो इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 07 दिनों के भीतर हमसे संपर्क करें या उसी को संपर्क करें। यदि किसी को मिला तो अधोहस्ताक्षरित। इसके बाद किसी भी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा
Naveen Kumar Verma (advocate)
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

RAMGARHIA CO-OPERATIVE BANK LTD.,
1/4, Desh Bandhu Gupta Road, Pahar Ganj, New Delhi - 110 055.
SYMBOLIC POSSESSION NOTICE [SECTION 13(4)
(For Immovable property)

Whereas :
The undersigned being the Authorised Officer of the **Ramgarhia Co-operative Bank Ltd.** under Securitization And Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 (Act 54 of 2002 (hereinafter referred to as "the Act") and in exercise of powers conferred under Section 13(2) read with Rule 3 of the Security Interest (Enforcement) Rules 2002, issued a Demand Notice details given as below we had pasted the same notice on the property calling upon the Borrower/Guarantor Borrower/ Co Borrower to repay the amount mentioned in the notice, respectively within 60 days from the date of receipt of the said notice.

The borrower having failed to repay the amount, notice is hereby given to the borrower and the public in general that the undersigned has taken possession of the property described herein below in exercise of powers conferred on him / her under section 13(4) of the said Act, read with Rule 8 & 9 of the said Rule on this **23rd day of October of the year 2025.**

S. No.	Name of the Borrower/ Guarantor/ Borrower/Co-Borrower	Property Details	Date of issuing 13(2)	Date of issuing 13(4)	Amount
1.	**Sh. Lekhraj Guarantor : 1. Sh. Shiv Ram 2. Sh. Vinod Kumar**	**All Piece and Parcels of the Property bearing No.250-251, measuring 52 Sq Yds, situated a Ghee Mandi, Paharganj, New Delhi - 110 055 registered vide registration No.7,253 in Book No.1, Vol No.12,944 on pages 174 to 181 dated 12-09-2008 in the office of the Sub-Registrar, SR-III, New Delhi/Delhi.**	02/07/2021	17/09/2025	**Rs.12,25,266/- (Rupees Twelve Lakh Twenty Five Thousand Two Hundred Sixty Six only) as on 31/05/2021 + further interest and legal charges**

The borrower's attention is invited to the provisions of Section 13(8) of the Act, in respect of time available, to redeem the secured assets.

Authorized Representative
Phone : 011- 40192447, 011- 45595302
E-mail : rcbl_ho@ramgarhiabank.com

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

अग्रसेन भवन ट्रस्ट के फैसले के खिलाफ धरना देकर जताया रोष

एजेंसी

हिसार। महाराजा अग्रसेन भवन ट्रस्ट के एक फैसले के विरोध में इवेंट एसोसिएशन के सदस्यों ने धरना देकर रोष जताया। धरनारत पदाधिकारी व सदस्य ट्रस्ट द्वारा टेंट, लाइटिंग और डेकोरेशन का काम एक ही व्यक्ति को सौंपने का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि इससे सैकड़ों परिवारों की आजीविका प्रभावित होगी। उधर, ट्रस्ट के प्रधान अंजनी कुमार का कहना है कि यदि इस फैसले से किसी को नाराजगी है या रोजी-रोटीका सवाल खड़ा होता है, तो इसे जल्द ही वापस ले लिया जाएगा।इवेंट एसोसिएशन के आह्वान पर पदाधिकारियों व सदस्यों ने सुबह दो घंटे सांकेतिक धरना दिया। अनूप बिंदल और सतीश गोयल ने बताया कि ट्रस्ट के इस निर्णय से लगभग 500 परिवारों का रोजगार छिन जाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि यदिएक ही व्यक्ति को यह काम सौंपा गया, तो वह मनमाने ढंग से अधिक शुल्क वसूलेगा। प्रदर्शनकारियों ने याद दिलाया कि अग्रसेन भवन के लिए यह जमीन पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भजनलाल ने रियायती दरों पर दी थी, जिसका उद्देश्य अग्रवाल समाज सहित गरीब लोगों की मदद करना था। शहर के बीचोबीच स्थित होने के कारण यहां अधिकतर लोग शादी-विवाह, भजन-कीर्तन और अन्य धार्मिक आयोजन करते हैं।

36 घंटे से लापता मासूम की साइकिल ड्रेन में मिली, एसडीआरएफ के जवान कर रहे तलाश

झज्जर। बहादुरगढ़ शहर के लाइनपार क्षेत्र के अशोक नगर से 36 घंटे पहले लापता हुए 11 वर्षीय आनंद का अभी तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। उत्तरी बाइपास के निकट ड्रेन में उसकी साइकिल तो मिल गई, लेकिन बच्चे का अभी तक कोई पता नहीं है। उसके डूबने की पूरी आशंका जताई जा रही है। दो दिन से स्थानीय निवासियों के अलावा लाइनपार थाना पुलिस ने एसडीआरएफ और गोताखोरों की टीम के साथ दिनभर सर्च अभियान चलाया। नाव की मदद से भी उसकी तलाश की जा रही है। दरअसल, सुबह उत्तरी बाइपास के पास बनाए जा रहे बॉक्स के नजदीक बच्चा साइकिल समेत ड्रेन में गिर गया था। उसकी साइकिल तो मिल गई, लेकिन ड्रेन में पानी करीब 10 फीट तक होने के कारण अभी बच्चे का सुराग नहीं लगा है। सुबह से शाम तक एसडीआरएफ ने नाहरा नाहरी मार्ग से लेकर छोटूराम नगर और रोहतक-दिल्ली रो तक बच्चे को तलाश किया, लेकिन अभी उसका पता नहीं चला है। बच्चे को ढूंढने में सात एसडीआरएफ के जवान, चार गोताखोर के अलावा पुलिस के जवान भी जुटे रहे। लापता आनंद लाइनपार के निजी स्कूल में पांचवीं कक्षा में पढ़ता है। मूल रूप से यह परिवार उत्तर प्रदेश के गाजीपुर का रहने वाला है, लेकिन कई साल से बहादुरगढ़ के अशोक नगर में रहता है।

तीव्र गति से प्रगति कर रहा पालतू पशु उद्योग : प्रो. विनोद कुमार वर्मा

हिसार। लाला लाजपत राय पशु-चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अंतर्गत कैंपस प्लेसमेंट सेल 'पशु-चिकित्सा नवाचार को आगे बढ़ानाः पालतु पशु चिकित्सकों के लिए उभरती तकनीकें' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा रहे। कुलपति ने गुरुवार को विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पालतू पशु उद्योग तीव्र गति से प्रगति कर रहा है और आने वाले समय में इस क्षेत्र में विशेषज्ञों की भारी मांग होगी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को चाहिए कि वे केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाएं। निजी प्रैक्टिस की चुनौतियां कठिन जरूर हैं, लेकिन यदि छात्र उन्हें साहस और सकारात्मक सोच के साथ अपनाएं तो ये चुनौतियां आगे चलकर उनके करियर को नई दिशा देंगी। डॉ. वर्मा ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि 'आसमान ही सीमा है'। दृढ़ निश्चय, निरंतर कौशल-विकास और सतत सीखने की प्रक्रिया से विद्यार्थियों के सामने सफलता के अपार द्वार खुल सकते हैं।इस अवसर पर मैक्सपेट्ज़ इंडिया के निदेशक एवं विश्वविद्यालय के गौरवशाली पूर्व छात्र डॉ. कुनाल देव शर्मा विशेष आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

उपायुक्त ने हरियाली बढ़ाने के लिए चलाया पौधारोपण अभियान

सोनीपत। सोनीपत सेवा पखवाड़ा के तहत उपायुक्त सुशील सारवान ने राजस्व कॉलोनी में पौधारोपण किया। इस मौके पर उप वन संरक्षक रेनू बाला समेत अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे। उपायुक्त ने बताया कि जिले के सभी स्कूलों और आंगनवाड़ियों में मोरिंगा और आंवला के पौधे लगाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मोरिंगा को सुपरफूड माना जाता है, इसमें विटामिन, कैल्शियम, पोटैशियम और प्रोटिन भरपूर मात्रा में होता है। वहीं आंवला प्राकृतिक शक्ति का बड़ा स्त्रोत है, जिसके नियमित सेवन से सेहत और तंदुरूस्ती में सुधार होता है। कार्यक्रम के दौरान वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे पौधारोपण अभियान को व्यापक स्तर पर चलाएं, ताकि हरियाली बढ़े और लोगों को प्राकृतिक औषधीय गुणों वाले पौधों का लाभ मिल सके।

भवनों और सड़कों के निर्माण में गुणवत्ता से समझौता नहीं होगा : नायब सिंह सैनी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि भवनों व सड़कों के निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या खामी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि ड्राइंग और निविदा दस्तावेजों में जानबूझकर त्रुटियां छोड़कर कार्य आवंटित करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण सामग्री की गुणवत्ता से किसी भी स्तर पर समझौता स्वीकार्य नहीं होगा।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी आज लोकनिर्माण विभाग की बुलाई गई कैबिनेट सब-कमेटी की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में लोक निर्माण मंत्री रणबीर गंगवा भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने दिए कई अहम प्रोजेक्ट्स को मंजूरी

बैठक में मुख्यमंत्री ने नाहर सिंह स्टेडियम, फरीदाबाद के निकट बन रहे पैरा ओलंपिक भवन, महेंद्रगढ़ में न्यायिक परिसर में सिविल जज (जूनियर व सीनियर) के पांच आवासीय परिसरों, तथा चरखी दादरी के ढिगावा जाटान में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के भवन निर्माण कार्य की इन्हांसमेंट को स्वीकृति प्रदान की।

खेल विश्वविद्यालय राई के लिए दो माह में डीपीआर तैयार करने के निर्देश

मुख्यमंत्री ने हरियाणा खेल विश्वविद्यालय, राई (सोनीपत) के प्रशासनिक भवन, शैक्षणिक भवन, हॉस्टल, स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर भवन और पूरे विश्वविद्यालय परिसर के कार्यों की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) दो महीने के भीतर तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खेलों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय का डिजाइन तैयार किया जाए ताकि यह खिलाड़ियों के लिए विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त हो।

बैठक में लोक निर्माण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग अग्रवाल, माध्यमिक शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विनीत गर्ग, खेल विभाग के प्रधान सचिव नवदीप विर्क सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

गुरुग्राम में मेट्रो की सभी परियोजनाओं को तेज करें: राव इंद्रजीत सिंह

एजेंसी

गुरुग्राम। केंद्रीय सांख्यिकी, कार्यक्रम कार्यान्वयन व योजना राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राव इंद्रजीत सिंह ने गुरुग्राम के विकास की परियोजनाओं को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि मेट्रो विस्तार व राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से कनेक्टिविटी के नए लिंक तथा दिल्ली-गुरुग्राम-एसएनबी आरआरटीएस (नमो भारत कॉरिडोर) को धरातल पर जल्द साकार करने की सभी आवश्यक प्रक्रिया तेज की जाए। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार के साथ समन्वय करने के साथ ही नई दिल्ली में नीति आयोग के माध्यम से भी पूरा सहयोग किया जाएगा। राव इंद्रजीत सिंह ने गुरुग्राम में मेट्रो के विस्तार को लेकर जारी कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी ली। मेट्रो विस्तार के दौरान यातायात प्रबंधन को लेकर भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए। गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि गुरुग्राम में मिलेनियम सिटी से साइबर सिटी तक (28 किलोमीटर) के पहले चरण मिलेनियम सिटी से सेक्टर-9 (15 किमी) तक निर्माण आरंभ हो गया है। वहीं दूसरे चरण के निर्माण से संबंधित प्रक्रिया भी आरंभ हो चुकी है।

इस परियोजना का वर्ष 2028 में पूरी हो जाएगी। इसके अतिरिक्त पालम विहार से नई दिल्ली के द्वारका सेक्टर-21 तक कनेक्ट करने का प्रस्ताव भेजा गया है। डीएमआरसी से एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन की इफको चौक तक नए लिंक का प्रस्ताव दिया है। केंद्रीय राज्य मंत्री ने दोनों लिंक पर अधिकारियों के साथ चर्चा की और इन विषयों से जुड़ी आगामी प्रक्रिया को लेकर आवश्यक निर्देश दिए।

राहुल गांधी जी पर नकारात्मकता इतनी हावी हो चुकी है कि अब उनकी शब्दावली भी नकारात्मक हो गईः अनिल विज

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने आज कांग्रेस नेता राहुल गांधी की हालिया प्रेस कॉन्फ्रेंस पर हाईड्रोजन बम इत्यादि की टिप्पणी पर तीखी नाराज़गी जताई और कहा कि ÷राहुल गांधी ऐसे पहले नेता हैं जो अपने ही देश पर हाइड्रोजन बम छोड़ने जैसी बातें कर रहे हैं। यह बेहद गैर-जिम्मेदाराना और देशहित के खिलाफ है। आज मीडिया कर्मियों के सवालों का जवाब देते हुए विज ने कहा कि राहुल गांधी विपक्ष के नेता हैं, उन्हें प्रेस कॉन्फ्रेंस करने और अपनी बात रखने का पूरा अधिकार है। लेकिन जिस तरह की नकारात्मक शब्दावली का वे प्रयोग कर रहे हैं, वह बिल्कुल उचित नहीं है। ÷देश के संदर्भ में 'हाइड्रोजन बम' और 'एटम बम' जैसे शब्दों का इस्तेमाल जनता के मन में भय और भ्रम पैदा कर सकता है। उन्होंने कहा कि विपक्ष का कर्तव्य सरकार की नीतियों पर सवाल उठाना है, लेकिन ऐसी बयानबाज़ी देशहित में नहीं है। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी को अपने आरोपों के समर्थन में सबूत प्रस्तुत करने चाहिए, लेकिन इस प्रकार की भाषा का इस्तेमाल केवल

नकारात्मक सोच को दर्शाती है। विज ने कहा कि 'राहुल गांधी जी पर नकारात्मकता इतनी हावी हो चुकी है कि अब उनकी शब्दावली भी नकारात्मक हो गई है। यही वजह है कि वे अच्छे शब्दों की बजाय देश को आहत करने वाले शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं÷उल्लेखनीय है कि विज ने आज अपनी एक्स हैंडल पर लिखा कि ''राहुल गांधी जी विश्व के पहले ऐसे राजनेता हैं जो अपने ही देश में एटम बम और हाइड्रोजन बम गिराने की भावना रखते हैं। आप को पत्रकार वार्ता में कुछ भी बात रखने का अधिकार है। यदि आपकी भावना अच्छी है तो आप इसी बात के लिए कोई और शब्दावली इस्तेमाल कर सकते थे परन्तु हकीकत यह है कि आप पर नकारात्मकता इतनी हावी हो चुकी है कि न आप अच्छा सोचते हैं और न ही अच्छा बोलते हैं''। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने हाल ही में प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि 'वोट चोरी की सच्चाई पूरे देश को पता लगने वाली है। एटम बम से बड़ा हाइड्रोजन बम होता है, वो आ रहा है।' इससे पहले उन्होंने 7 अगस्त और 11 सितंबर को भी वोट चोरी के मुद्दे पर प्रेस से बात करते हुए 'डायनामिक एक्सप्लोसिव सबूत' पेश करने की बात कही थी।

आत्मनिर्भरता से सिद्धि तक पहुंचेगा विकसित भारत संकल्पः डॉ अरविंद

एजेंसी

सोनीपत। कारागार, निर्वाचन, विरासत और पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हर वर्ग के लिए आत्मनिर्भरता का माहौल तैयार किया है। उनका लक्ष्य वर्ष 2047 तक विकसित भारत का सपना साकार करना है। अगर युवा पीढ़ी उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण करे तो भारत दुनिया के मंच पर और मजबूती से खड़ा होगा। डॉ शर्मा गोहाना स्थित सिंचाई विश्राम गृह में सेवा पखवाड़ा के दौरान आयोजित पेंटिंग और प्रदर्शनी का उद्घाटन करने पहुंचे। प्रदर्शनी संयोजक कुलदीप कौशिक द्वारा प्रधानमंत्री मोदी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी में उनके बचपन, युवावस्था और राजनीति के माध्यम स जनसेवा संकल्प की यात्रा को चित्रों में दर्शाया गया। मंत्री ने कार्यकर्ताओं संग प्रदर्शनी का अवलोकन किया और कहा कि प्रधानमंत्री का जीवन कठिन परिस्थितियों से लड़कर राष्ट्रसेवा को समर्पित रहा है। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती से लेकर गुजरात में शासन और अब देश की बागडोर

संभालते हुए मोदी ने गरीब, किसान, महिला और युवाओं के उत्थान की दिशा में काम किया है। महिलाओं को शिक्षा, राजनीति और स्वरोजगार में अवसर देकर नारी शक्ति को सशक्त किया गया है, जिस कारण उन पर जनता का विश्वास और गहरा हुआ है। सेवा पखवाड़ा के संदर्भ में उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री ने मध्यप्रदेश से स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान शुरू किया है। इसके तहत हर माता, बहन और बेटी की निशुल्क स्वास्थ्य जांच होगी ताकि बीमारियों की पहचान समय पर हो सके। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक कुलदीप कौशिक, मण्डल अध्यक्ष भूपेन्द्र मुदगिल, प्रवीण खुराना, महिला मोर्चा अध्यक्ष रीना शर्मा समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत की विरासत को नई पहचान और रफ्तार मिली : बड़ौली

एजेंसी

चंडीगढ़। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि पीएम मोदी ने स्वाभिमान की भावना को जाग्रत करने का काम किया है। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत की विरासत को नई पहचान व नई रफ्तार मिली है। उन्होंने कहा कि आज भाजपा सरकार में देश और प्रदेश का सर्वांगीण विकास हो रहा है। बड़ौली ने एथनिक इंडिया टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स, राई में आयोजित कार्यक्रम 'विरासत की हिफाजत' में सहभागिता कर लोगों को देश की सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और सुरक्षित रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमारी विरासत देश की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा पुंज है। उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि युवा शक्ति विरासत को सहेजने के साथ-साथ स्वच्छता का संकल्प लें और आने वाली पीढ़ियों के लिए

बेहतर भारत का निर्माण करें। विरासत की हिफाजत कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी पेंटिंग्स के माध्यम से पर्यावरण, स्वच्छता और विरासत संरक्षण पर शानदार संदेश दिए। इस मौके पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बड़ौली ने आयोजकों और प्रतिभागियों को इस नेक कार्य के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि हम अपनी 'विरासत' से वैश्विक पर्यटकों को जोड़ेंगे। युवाओं व विद्यार्थियों को अपनी विरासत का भ्रमण करवाते हुए इतिहास से जोड़ा जाएगा। बड़ौली ने कहा कि पीएम मोदी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे इस सेवा पखवाड़ा के दौरान ऐतिहासिक धरोहरों, स्मारकों, मंदिरों, गुरूद्वारों, झीलों, पार्कों एवं पर्यटक स्थलों पर विशेष सफाई अभियान चलाया जाएगा। बड़ौली ने कहा कि पीएम मोदी के 75वें जन्म दिन पर हरियाणा ने नया इतिहास रचा है। हरियाणा के हर जिले में भाजपा परिवार के कार्यकर्ताओं और समाज के हर वर्ग ने मिलकर महाश्रमदान कर स्वच्छता की मिसाल पेश की है। यह केवल एक स्वच्छता अभियान नहीं था, बल्कि मोदी जी को सेवा का अनूठा उपहार था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का मंत्र ÷स्वच्छता ही सेवा÷ आज जन-जन का संकल्प बन गया है। बड़ौली ने कहा कि हमें सेवा पखवाड़े को जनसेवा का महा अभियान बनाना है और नायब सरकार की योजनाओं का लाभ हर जरूरतमंद तक पहुंचाना है।

केवल पर्यावरण नहीं अपितु स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है प्लास्टिक :डॉ अर्चना गुप्ता

एजेंसी

चंडीगढ़। सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत भाजपा द्वारा विभिन्न सेवा एवं समाज में जागरूकता के कार्य किए जा रहे है। इसी कड़ी में भाजपा प्रदेश महामंत्री डा. अर्चना गुप्ता ने भाजपा नेताओं के साथ पानीपत में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग के रोकथाम के लिए कपड़े के बने हुए थैले वितरित कर दुकानदारों और ग्राहकों को जागरूक किया। भाजपा प्रदेश महामंत्री डा. अर्चना गुप्ता ने कहा कि प्लास्टिक के उपयोग न केवल पर्यावरण को नुकसान हो रहा है, बल्कि इससे हमारे स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक पेट्रोलियम पदार्थों से निकलने वाले कृत्रिम रेजिन से बनाया जाता है। रेजिन में अमोनिया एवं बेंजीन को मिलाकर प्लास्टिक के मोनोमर बनाए जाते हैं। इसमें क्लोरीन, फ्लुओरिन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन एवं सल्फर के अणु होते हैं। लंबे समय तक अपघटित न होने के अलावा भी प्लास्टिक अनेक अन्य प्रभाव छोड़ता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। डा. अर्चना गुप्ता ने कहा कि थर्मोकोल से बनी थाली और प्लेट में गर्म भोजन करने से कई तरह की असाध्य बीमारी होने की आशंका रहती है। इसके स्थान पर पत्तों से निर्मित प्लेट का उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक को ना कहें और कपड़े को हां कहें। प्लास्टिक प्रदूषण हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों के लिए हानिकारक है, जबकि कपड़े के थैले टिकाऊ, पुनः प्रयोज्य और पर्यावरण के लिए बेहतर विकल्प हैं। बाज़ार जाते समय कपड़े के थैले साथ ले जाएँ और प्लास्टिक के थैलों के इस्तेमाल का विरोध करें। इस मौके पर उनके साथ जिला अध्यक्ष दुष्यंत भट्ट, जिला महामंत्री सुनील कंसल, मंडल अध्यक्ष सचिन सिंगला, बाजार के प्रधान सतीश सहगल विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सीएम फ्लाइंग ने धर्मशाला निर्माण में गड़बड़ी की जांच को दूसरी बार मारा छापा

एजेंसी

हिसार। जिले के गांव बालसमंद में खटीक समाज की धर्मशाला निर्माण राशि में गड़बड़ी के आरोपों की जांच करने सीएम फ्लाइंग टीम गांव में दूसरी बार पहुंची।

खटीक समाज की शिकायत पर पहुंची टीम ने मौके पर पहुंचकर न केवल धर्मशाला का निरीक्षण किया बल्कि खटीक समाज के लोगों व संबंधित अधिकारियों से विस्तृत बातचीत कर रिकॉर्ड भी खंगाला। खटीक समाज के सुनील कुमार ने बताया कि खटीक समाज धर्मशाला कमेटी व खटीक समाज ने आरोप था कि सरकार की ओर से धर्मशाला के कमरे निर्माण के लिए 10 लाख 57 हजार रुपये की अनुदान राशि स्वीकृत की गई थी, लेकिन पिछले दो-तीन वर्षों से धर्मशाला में किसी प्रकार का निर्माण कार्य दिखाई नहीं दे रहा है। खटीक समाज को जानकारी मिली थी कि अधिकारियों व कुछ लोगों की मिलीभगत से अनुदान राशि का फर्जी तरीके से उपयोग कर गबन किया गया है। इस

संबंध में खटीक समाज ने सरकार को शिकायत भेजकर निष्पक्ष जांच की मांग की थी।

सुनील कुमार ने बताया कि शिकायत पर कार्रवाई करते हुए सीएम फ्लाइंग हिसार रेंज इंचार्ज सुनैना अपनी टीम के साथ गांव पहुंची। इस मौके पर जिला परिषद एसडीओ विजय सिंह, जेई मोहित, एएसआई सुरेंद्र और एचसी विजय, पूर्व जेई ऋषि तथा समाज व गांव के अनेक गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। टीम ने पहले धर्मशाला का निरीक्षण किया, जहां यह पाया गया कि मौके पर किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं हुआ है।

जिला परिषद अधिकारियों ने टीम को बताया कि खटीक समाज की धर्मशाला निर्माण के लिए मंजूर की गई राशि में से कुछ रकम केवल निर्माण सामग्री के लिए एक फर्म को एडवांस भुगतान के तौर पर दी गई थी। अनुदान राशि पूरी तरह सुरक्षित है। अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि खटीक समाज की सहमति से शीघ्र ही इस अनुदान राशि का उपयोग कर धर्मशाला में निर्माण कार्य शुरू करवा दिया जाएगा।

जांच के बाद खटीक समाज के लोगों सुनील कुमार, बंसीलाल, गोपीराम, रमन, जीवन सिंह, देवकरण और राममेहर पेंटर ने कहा कि उनकी शिकायत पर निष्पक्ष जांच करने के लिए वे सीएम फ्लाइंग हिसार रेंज इन्चार्ज सुनैना व उनकी टीम के आभारी हैं। अब उन्हें विश्वास हो गया है कि अनुदान राशि पूरी तरह सुरक्षित है और जल्द ही धर्मशाला में कमरे का निर्माण कार्य प्रारंभ होगा। ग्रामीणों व खटीक समाज ने इसके लिए सरकार और सीएम फ्लाइंग टीम का धन्यवाद किया।

जीएसटी निरीक्षक 8 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार

ज्योति दर्पण

गुरुग्राम। राज्य सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, गुरुग्राम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए जीएसटी निरीक्षक भारत भूषण मदान को रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। आरोपी को गुरुग्राम सेक्टर-32 स्थित जीएसटी भवन के सामने पार्किंग में 8,000 रुपये नकद लेते समय दबोचा गया। इस मामले में अभियोग संख्या-35, दिनांक 18.9.2025, धारा 7 पीसी एक्ट के तहत थाना राज्य सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, गुरुग्राम में मामला दर्ज किया गया है। शिकायतकर्ता ने ब्यूरो को दी गई शिकायत में बताया कि उसने अपनी माता के नाम से Laychee Studio नामक कंपनी रजिस्टर्ड करवाई थी। इसके बाद इस कंपनी के नाम से जीएसटी नंबर लेने के लिए आवेदन किया गया। इसी प्रक्रिया के दौरान शिकायतकर्ता की मुलाकात निरीक्षक भारत भूषण से हुई।

राहुल गांधी घुसपैठियों को बचाने की राजनीति कर रहे हैं : डा. सतीश पूनिया

ज्योति दर्पण

चंडीगढ़। भाजपा प्रदेश प्रभारी डा. सतीश पूनिया ने कांग्रेस पार्टी पर करारा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस देश में अराजकता फैलाने का प्रयास कर रही है। राहुल गांधी खुद कह चुके हैं कि उनका लोकतंत्र बचाने से कोई मतलब नहीं है। राहुल गांधी का एक ही मकसद है कि घुसपैठियों के वोट बैंक को कैसे बचाया जा सकता है। डा. पूनिया ने कहा कि इसलिए राहुल बार-बार झूठे और मनगढंत आरोप लगाकर भारत की संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर करना चाहते हैं।

डा. पूनिया ने कहा कि कांग्रेस की मंशा लोकतंत्र को अवैध ठहराना, अराजकता पैदा करना है। राहुल की भाषा और रणनीति शहरी नक्सलियों जैसी ही है। राहुल गांधी पर आरोप लगाते हुए डा. सतीश पूनिया ने कहा कि राहुल गांधी भारत में नेपाल-बांग्लादेश जैसी अराजकता लाने की पूरी तैयारी कर रहे हैं, इसलिए राहुल गांधी घुसपैठियों के वोट बैंक के लिए लड़ रहे हैं। राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोपों पर पलटवार करते हुए डा. पूनिया ने कहा कि झूठे आरोप लगाना और फिर भाग जाना राहुल गांधी की आदत बन गई है। घुसपैठियों और शहरी नक्सलियों को बचाने के लिए ही राहुल गांधी झूठे और निराधार आरोप लगा रहे हैं। डा. पूनिया ने कहा

कि राहुल गांधी की भाषा शैली से स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस पार्टी घुसपैठियों व अर्बन नक्सल्स को बचाने की राजनीति कर रही है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने राहुल गांधी से शपथ पत्र मांगा, लेकिन राहुल गांधी ना कोई सबूत दे पाए और ना ही उन्होंने माफी मांगी। डा. सतीश पूनिया ने राहुल गांधी की पूरी पीपीटी को त्रुटियों, तार्किक तर्कों और मूर्खतापूर्ण धारणाओं से भरा हुआ बताते हुए कहा कि राहुल गांधी अपनी विफलताओं को छिपाकर अराजकता का माहौल बनाना चाहते हैं। डा. सतीश पूनिया ने कहा कि राहुल गांधी ने बबीता चौधरी, सोनकांतले काशीनाथ और अशोक माणिक राव के नाम मतदाता सूची से हटने का जो दावा किया वह गलत है। इन तीनों मतदाताओं के नाम अभी भी चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में वैध हैं। भाजपा प्रदेश प्रभारी ने राहुल गांधी को घेरते हुए कहा कि राहुल दावा कर रहे हैं कि कर्नाटक के अलंद में वोट डिलीट कर दिए गए। उन्होंने कहा कि राहुल के बयानों ने साफ कर दिया कि राहुल गांधी की राजनीतिक समझ शून्य हो चुकी है।

NAME CHANGE
I, BIBI FARIDA W/o MD AZMAT, R/o Hossainpur Road, Near Masjid, Hossainpur, Jagdishpur, Bhagalpur City, Bhagalpur, Bihar-812002, have changed the name of my minor daughter MARZINA KHATOON aged 16 years and she shall be hereafter known as KHUSHBU.

धान उत्पादक किसानों के हित में उचित कदम उठाए भाजपा सरकार : कुमारी सैलजा

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि इस बार बाढ़ और बरसात से सबसे ज्यादा नुकसान फसलों खासकर धान की फसल को हुआ, जिसका उचित मुआवजा देने में बीमा कंपनी भी हाथ खड़ा कर रही है। इस बार दाना भी छोटा है और काला भी पड़ गया है साथ ही पिछले वर्ष की तुलना में इस बार झाड भी कम है ऐसे में भाजपा सरकार को धान उत्पादक किसानों के हित में उचित कदम उठाना चाहिए।

मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा है कि हरियाणा में धान की खेती मुख्य रूप से करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल, अंबाला, यमुनानगर, पानीपत, सिरसा और सोनीपत जैसे जिलों में की जाती है। इनमें से करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र, और जींद को धान का कटोरा कहा जाता है, खासकर करनाल को बासमती चावल के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। करनाल जो बासमती चावल के उत्पादन के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कुरुक्षेत्र धान उत्पादन में अग्रणी जिलों में से एक है। कैथल जिला भी धान का कटोरा कहलाता है और चावल उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है। अंबाला धान की खेती के लिए यह एक महत्वपूर्ण बेल्ट क्षेत्र है। यमुनानगर जिले में भी बड़े पैमाने पर धान की खेती होती है। सिरसा में भी धान की खेती बड़े स्तर पर की जाती है, खासकर धान की सीधी बुवाई की तकनीक पर भी जोर दिया जा रहा है। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि इस बार मानसून की मार से किसान कराह उठा है, खेतों में पानी भरने और अधिक दिनों तक भरा रहने के चलते धान की फसल को भारी नुकसान हुआ है। एक ओर जहां दाना छोटा है वहीं काला भी पड़ गया है, जिससे चावल की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। पूसा बासमती 1509 की कीमत और उसकी पैदावार को लेकर भी किसान बहुत परेशान है, इस बार लागत खर्च निकलने की भी संभावना नहीं दिख रही है क्योंकि मंडी में इस बार धान की कीमत पिछले वर्ष की अपेक्षा कम है। धान का झाड भी पिछले वर्ष से बहुत कम है पहले जहां एक एकड़ में 30 क्रिंटल तक झाड था इस बार 20 से 25 क्रिंटल तक सिमट गया है और कुछ जिले तो ऐसे है जहां 15 क्रिंटल प्रति एकड़ झाड रहा है। कुछ जिलों में बीमा कंपनियां धान की फसल को हुए नुकसान का मुआवजा देने में आनाकानी कर रही है ऐसे में सरकार को ही कोई उचित कदम उठाना चाहिए।

एजीआर विवाद को लेकर सुनवाई को तैयार सुप्रीम कोर्ट....राकेट बन गया वोडाफोन आइडिया का शेयर

मुंबई

घरेलू बाजार में गिरावट के बीच शुक्रवार को वोडाफोन आइडिया के शेयर में जोरदार तेजी दिखाई दी। शेयर इंट्राडे में 12 फीसदी से ज्यादा उछला। भारतीय बाजार में कारोबारी सेशन में आधा फीसदी से ज्यादा टूट गए। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट शुक्रवार को वोडाफोन आइडिया की उस याचिका पर सुनवाई के लिए सहमत हो गया, जिसमें 2016-17 तक के लिए अतिरिक्त समायोजित सकल राजस्व (एजीआर) मांगों को रद्द करने की मांग की गई है। इसके बाद वोडाफोन आइडिया के स्टॉक में पॉजिटिव सेंटीमेंट देखने को मिला। बीते काफी समय से एक दायरे में फंसे टेलीकॉम स्टॉक में बीते एक महीने में करीब 28 फीसदी का उछाल आया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ ने वोडाफोन आइडिया ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी और केंद्र का प्रतिनिधित्व करने वाले सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की दलीलों पर गौर करने के बाद याचिका पर विचार के लिए अगले शुक्रवार (26 सितंबर) की तारीख तय की। विधि अधिकारी ने कहा कि अब परिस्थितियां बदल गई हैं और संबंधित पक्ष समाधान खोजना चाहते हैं।

इस खबर के बाद वोडाफोन आइडिया के शेयर में बीएसई पर शुक्रवार को करीब आधा फीसदी की तेजी के साथ 7.89 रुपये पर कारोबार शुरू हुआ। स्टॉक गुरुवार को 7.85 रुपये पर बंद हुआ था। शुक्रवार दोपहर 2 बजे तक के कारोबार में शेयर ने 8.82 रुपये का हाई और 7.81 रुपये का लो बनाया। यह स्टॉक अपने 52 हफ्ते के हाई (13.02 रुपये) से करीब 40 फीसदी गिरावट पर ट्रेड कर रहा है।

उपभोक्ता आयोग ने मर्सिडीज-बेंज को 1.78 करोड़ से अधिक की खरीद राशि लौटाने को कहा

कार न बदलने और मानसिक पीड़ा पहुंचाने पर मर्सिडीज-बेंज को 5 लाख हर्जाना

नई दिल्ली

दिल्ली राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने एक बड़े फैसले में मर्सिडीज-बेंज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और उसके अधिकृत डीलर ग्लोबल स्टार ऑटो एलएलपी, ओखला को आदेश दिया है कि वे एक ग्राहक को उसकी इलेक्ट्रिक कार की 1.78 करोड़ से अधिक की पूरी कीमत लौटाएं।

इसके साथ ही आयोग ने मानसिक पीड़ा और उत्पीड़न के लिए 5 लाख रुपए हर्जाना और 50,000 रुपए मुकदमे की लागत का भी भुगतान करने का निर्देश दिया। यह मामला उस समय सामने आया जब शिकायतकर्ता ने नवंबर 2022 में खरीदी गई मर्सिडीज इलेक्ट्रिक कार में लगातार तकनीकी खराबी की शिकायत की। कार को एक साल के भीतर चार बार वर्कशॉप भेजा गया और अक्टूबर 2023 में आखिरी मरम्मत के बाद से ही वह कंपनी के पास ही रही। शिकायतकर्ता ने यह आरोप भी लगाया कि कंपनी को कानूनी नोटिस भेजने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

आयोग की अध्यक्ष न्यायमूर्ति संगीता ढींगरा सहगल और सदस्य पिंकी ने अपने आदेश में कहा कि बार-बार की मरम्मत से यह स्पष्ट है कि वाहन में **निर्माण संबंधी दोष** था, जिसे निर्माता ने ठीक नहीं किया और न ही वाहन बदला।

आयोग ने कहा कि कार का मॉडल अब बंद हो चुका है और वाहन अभी भी डीलरशिप के पास है, इसलिए उपभोक्ता को पूरी राशि लौटाना ही एकमात्र विकल्प है।

ल्यूपिन को मिली यूएस एफडीए से जेनेरिक कैंसर दवा की मंजूरी

मुंबई

फार्मा कंपनी ल्यूपिन को हाल ही में यूएस फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (यूएस एफडीए) से एक महत्वपूर्ण मंजूरी मिली है। यह मंजूरी लेनालिडोमाइड कैप्सूल के लिए है, जो एक जेनेरिक कैंसर दवा है। यह दवा मल्टीपल मायलोमा नामक एक प्रकार के रक्त कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होती है। लेनालिडोमाइड कैप्सूल, अमेरिका की कंपनी ब्रिस्टल-मायर्स स्क्विब के रेव्लिमिड कैप्सूल का जेनेरिक (सस्ता) वर्जन है। इसका उपयोग उन वयस्कों के लिए होता है जिन्हें ऑटोलॉगस हेमटोपोइएटिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांटेशन के बाद डेक्सामेथासोन के साथ मेंटेनेंस थेरेपी की जरूरत होती है। इस दवा का उत्पादन ल्यूपिन के मध्य प्रदेश स्थित पीथमपुर प्लांट में होगा। अमेरिका में इस दवा की वार्षिक बिक्री करीब 7,511 मिलियन डालर होने का अनुमान है, जिससे यह ल्यूपिन के लिए एक बड़ा बाज़ार है। कंपनी ने कहा है कि उनका जेनेरिक उत्पाद रेव्लिमिड का एक किफायती विकल्प होगा, जिससे मरीज़ों को फायदा होगा।

ल्यूपिन को हाल ही में यूएस एफडीए से एक और जेनेरिक दवा के लिए भी मंजूरी मिली है। यह दवा जेनेरिक कॉन्ट्रासेप्टिव टैबलेट मिंजोया है, जो यूएस बेस्ड एवियन फार्मास्युटिकल्स की बाल्कोल्ट्रा का जेनेरिक वर्जन है। इस दवा का निर्माण भी पीथमपुर प्लांट में ही किया जाएगा।

ल्यूपिन का मुख्यालय मुंबई में है और यह 100 से ज़्यादा देशों में काम करती है। कंपनी जेनेरिक दवाओं, बायोटेक्नोलॉजी प्रोडक्ट्स और एक्टिव फ़ार्मास्यूटिकल इंग्रीडिएंट्स पर ध्यान केंद्रित करती है। दुनिया भर में इसके 15 मैन्युफैक्चरिंग साइट्स और 7 रिसर्च सेंटर हैं, जिनमें 24,000 से ज़्यादा कर्मचारी काम करते हैं।

ईपीएफओ ने पोर्टल में नई सुविधाएं शुरू कीं

– सिंगल लॉगिन से मिलेगी सभी सेवाओं की जानकारी

नई दिल्ली

ईपीएफओ ने अपने डिजिटल पोर्टल को अपडेट किया है जिससे अब सदस्य एक ही सिंगल लॉगिन के जरिए सभी सेवाओं और खाते की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इससे पहले जो प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली थी, अब कहीं अधिक सरल और तेज हो जाएगी। ईपीएफओ ने 'पासबुक लाइट' सुविधा शुरू की है, जिसके तहत सदस्य जल्दी और सरल तरीके से अपने खाते का बैलेंस और लेन-देन का सारांश देख पाएंगे। पहले पीएफ सदस्य को अलग पासबुक पोर्टल में लॉगिन करना पड़ता था, जो कई बार तकनीकी कारणों से मुश्किल हो जाता था। अब पासबुक लाइट में तुरंत जानकारी उपलब्ध होगी, जबकि विस्तृत जानकारी के लिए पुराना पोर्टल भी उपलब्ध रहेगा। नौकरी बदलने पर पीएफ खाते का ट्रांसफर करना भी अब आसान हो गया है। पहले एनेक्जर के नामक ट्रांसफर सर्टिफिकेट पुराने नियोक्ता से नए पीएफ कार्यालय को भेजा जाता था, जो अक्सर देरी का कारण बनता था। नई व्यवस्था में यह सर्टिफिकेट ऑनलाइन पीडीएफ में उपलब्ध होगा और सदस्य ट्रांसफर की स्थिति भी ऑनलाइन ट्रैक कर पाएंगे।

इससे पारदर्शिता बढ़ेगी और डिजिटल रिकॉर्ड सुरक्षित रहेगा।

ईपीएफओ ने क्लेम और

ट्रांसफर की मंजूरी प्रक्रिया को भी सरल बनाया है। अब उच्च अधिकारियों के बजाय निचले स्तर के अधिकारी भी मंजूरी दे सकेंगे, जिससे क्लेम जल्दी निपटेंगे और प्रक्रिया में जवाबदेही बढ़ेगी।

1 अक्टूबर से लागू होंगे बड़े बदलाव, एनपीएस और ऑनलाइन गेमिंग में होंगे नए नियम

- अब एक ही पैन नंबर से कई स्कीमों में निवेश किया जा सकेगा

नई दिल्ली

देश में 1 अक्टूबर, 2025 से राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) और ऑनलाइन गेमिंग के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण बदलाव लागू होने जा रहे हैं। ये बदलाव आम जनता के लिए फायदेमंद और सुरक्षा बढ़ाने वाले साबित होंगे। पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) ने एनपीएस को और अधिक फ्लेक्सिबल बनाने के लिए नया ÷मल्टीपल स्कीम फ्रेमवर्क÷ लागू किया है। अब एक ही पैन नंबर से कई स्कीमों में निवेश किया जा सकेगा। इससे निवेशकों को अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार हाई-रिस्क इक्विटी या अन्य स्कीमों में निवेश करने का मौका मिलेगा। नए नियमों के तहत एनपीएस में शामिल होने और निकासी की उम्र सीमा बढ़ाई जाएगी। साथ ही, लंपसम विड्रॉल की लिमिट भी बढ़ेगी, जिससे निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार अधिक राशि निकाल सकेंगे। इसके अलावा, खाते को बिना किसी बाधा के चालू रखने के लिए ऑटोमैटिक कंटिन्युएशन की सुविधा भी दी जाएगी। सरकारी कर्मचारियों के लिए पीआरएएन खोलने पर 18 रुपए शुल्क और ऑफलाइन पीआरएएन कार्ड पर 40 रुपए शुल्क लागू होगा। हालांकि, जीरो बैलेंस वाले अकाउंट और लेनदेन पर कोई शुल्क नहीं लगेगा। वहीं केंद्रीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी

वैष्णव ने घोषणा की है कि 1 अक्टूबर से ऑनलाइन गेमिंग के लिए कड़े नियम लागू होंगे। यह नियम गेमिंग को और अधिक सुरक्षित बनाने और धोखाधड़ी रोकने के लिए बनाए गए हैं। इसके पहले गेमिंग कंपनियों, बैंकों और अन्य पक्षों के साथ अंतिम बैठक की जाएगी।

तेल उत्खनन कंपनियों को मुआवजा देने की तैयारी

सरकार ला सकती है विशेष राहत योजना

नई दिल्ली सरकार तेल और गैस क्षेत्र की अन्वेषण और उत्पादन कंपनियों की बढ़ी लागत की भरपाई के लिए एक विशेष योजना पर विचार कर रही है। हाल ही में जीएसटी परिषद ने इस क्षेत्र से जुड़ी सेवाओं और वस्तुओं पर जीएसटी दर 12 फीसदी से बढ़ाकर 18 फीसदी कर दी, जिससे कंपनियों की लागत बढ़ गई है और मार्जिन पर असर पड़ा है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने जानकारी दी कि प्रस्तावित योजना कंपनियों को मुआवजा देने और फंसे हुए कर की समस्या को सुलझाने के लिए तैयार की जा रही है। इस योजना को वित्त मंत्रालय के समक्ष जल्द ही मंजूरी के लिए पेश किया जाएगा। तेल और प्राकृतिक गैस जैसे उत्पाद अभी भी जीएसटी के दायरे से बाहर हैं, लेकिन इनके अन्वेषण और उत्पादन में उपयोग होने वाली सेवाओं व उपकरणों पर जीएसटी लगाया जाता है। ऐसे में कंपनियाँ इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ नहीं उठा पातीं, जिससे फंसे हुए कर की स्थिति उत्पन्न होती है। अधिकारी के अनुसार, इस योजना को एक वैकल्पिक राहत या प्रोत्साहन योजना के रूप में लागू किया जा सकता है।

स्टेटक्राफ्ट से 150 मेगावाट का पनबिजली संयंत्र खरीदेगी जेएसडब्ल्यू नियो एनर्जी

नई दिल्ली जेएसडब्ल्यू एनर्जी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू नियो एनर्जी ने 1,728 करोड़ रुपये में स्टेटक्राफ्ट के स्वामित्व वाले टिडोंग पावर जेनरेशन को खरीदने के लिए समझौता किया है। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने गुरुवार देर रात शेयर बाजार को बताया कि इस संयंत्र की 100 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी खरीदने के लिए स्टेटक्राफ्ट आईएच होल्डिंग एस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। कंपनी ने बताया कि यह सौदा आवश्यक नियामक मंजूरियों के अधीन है। इस लेनदेन में परिसंपत्ति का उद्यम मूल्यांकन लगभग 1,728 करोड़ रुपये है। टिडोंग पावर हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित टिडोंग घाटी में 150 मेगावाट क्षमता का पनबिजली संयंत्र बना रही है। इस संयंत्र के अक्टूबर 2026 में चालू होने की उम्मीद है और इसका उत्तर प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ 22 साल का बिजली खरीद समझौता (पीपीए) है।

तेल उत्खनन कंपनियों को मुआवजा देने की तैयारी

- सरकार ला सकती है विशेष राहत योजना

नई दिल्ली सरकार तेल और गैस क्षेत्र की अन्वेषण और उत्पादन कंपनियों की बढ़ी लागत की भरपाई के लिए एक विशेष योजना पर विचार कर रही है। हाल ही में जीएसटी परिषद ने इस क्षेत्र से जुड़ी सेवाओं और वस्तुओं पर जीएसटी दर 12 फीसदी से बढ़ाकर 18 फीसदी कर दी, जिससे कंपनियों की लागत बढ़ गई है और मार्जिन पर असर पड़ा है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने जानकारी दी कि प्रस्तावित योजना कंपनियों को मुआवजा देने और फंसे हुए कर की समस्या को सुलझाने के लिए तैयार की जा रही है। इस योजना को वित्त मंत्रालय के समक्ष जल्द ही मंजूरी के लिए पेश किया जाएगा। तेल और प्राकृतिक गैस जैसे उत्पाद अभी भी जीएसटी के दायरे से बाहर हैं, लेकिन इनके अन्वेषण और उत्पादन में उपयोग होने वाली सेवाओं व उपकरणों पर जीएसटी लगाया जाता है। ऐसे में कंपनियाँ इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ नहीं उठा पातीं, जिससे फंसे हुए कर की स्थिति उत्पन्न होती है। अधिकारी के अनुसार, इस योजना को एक वैकल्पिक राहत या प्रोत्साहन योजना के रूप में लागू किया जा सकता है।

उपभोक्ता आयोग ने मर्सिडीज-बेंज को 1.78 करोड़ से अधिक की खरीद राशि लौटाने को कहा

– कार न बदलने और मानसिक पीड़ा पहुंचाने पर मर्सिडीज-बेंज को 5 लाख हर्जाना

नई दिल्ली

दिल्ली राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने एक बड़े फैसले में मर्सिडीज-बेंज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और उसके अधिकृत डीलर ग्लोबल स्टार ऑटो एलएलपी, ओखला को आदेश दिया है कि वे एक ग्राहक को उसकी इलेक्ट्रिक कार की 1.78 करोड़ से अधिक की पूरी कीमत लौटाएं। इसके साथ ही आयोग ने मानसिक पीड़ा और उत्पीड़न के लिए 5 लाख रुपए हर्जाना और 50,000 रुपए मुकदमे की लागत का भी भुगतान करने का निर्देश दिया। यह मामला उस समय सामने आया जब शिकायतकर्ता ने नवंबर 2022 में खरीदी गई मर्सिडीज इलेक्ट्रिक कार में लगातार तकनीकी खराबी की शिकायत की। कार को एक साल के भीतर चार बार वर्कशॉप भेजा गया और अक्टूबर 2023 में आखिरी मरम्मत के बाद से ही वह कंपनी के पास ही रही। शिकायतकर्ता ने यह आरोप भी लगाया कि कंपनी को कानूनी नोटिस भेजने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। आयोग की अध्यक्ष न्यायमूर्ति संगीता ढींगरा सहगल और सदस्य पिंकी ने अपने आदेश में कहा कि बार-बार की मरम्मत से यह स्पष्ट है कि वाहन में **निर्माण संबंधी दोष** था, जिसे निर्माता ने ठीक नहीं किया और न ही वाहन बदला। आयोग ने कहा कि कार का मॉडल अब बंद हो चुका है और वाहन अभी भी डीलरशिप के पास है, इसलिए उपभोक्ता को पूरी राशि लौटाना ही एकमात्र विकल्प है।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 387, निफ्टी 96 अंक गिरा

मुंबई

भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट पर बंद हुए। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट वैश्विक बाजारों से मिलेजुले संकेतों के बीच ही मुनाफावसूली हावी होने से आई है। इसी कारण दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 387.73 अंक टूटकर 82,626.23 जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 96.55 अंक फिसलकर 25,327.05 पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान बैंकिंग शेयरों में गिरावट रही। निफ्टी बैंक 0.48 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ। वहीं निफ्टी आईटी 0.47 फीसदी), निफ्टी ऑटो 0.40 फीसदी, निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज 0.64 फीसदी और निफ्टी एफएमसीजी 0.44 फीसदी नीचे आया। निफ्टी पीएसयू बैंक 1.28 फीसदी, निफ्टी फार्मा 0.50 फीसदी , निफ्टी मेटल 0.35 फीसदी, निफ्टी रियल्टी 0.55 फीसदी औप निफ्टी एनर्जी 0.86 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ।

आज अदाणी समूह के करीब सभी शेयरों में तेजी रही। सेंसेक्स पैक में अदाणी पोर्ट्स, भारती एयरटेल, एसबीआई, एशियन पेंट्स, एनटीपीसी, सनफार्मा, मारुति, टेक महिंद्रा, एक्सिस बैंक, बजाज फिनसर्व और इन्फोसिस के शेयरों में बढ़त रही जबकि एचसीएल टेक, आईसीआईसीआई बैंक, टाइटन, ट्रेंट, कोटक महिंद्रा बैंक, एचयूएल, एमएंडएम, एचडीएफसी बैंक, पावर ग्रिड और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयरों में गिरावट रही। इससे पहले आज सुबह भारतीय शेयर बाजार की शुरुआत कमजोर रही।

सुबह बाजार गिरावट के साथ खुले। वहीं एशियाई बाजारों में बढ़त देखने को मिली। सेंसेक्स 150 अंकों की गिरावट के साथ 82,946.04 पर खुला और खुलने के कुछ ही मिनटों में यह और टूटकर 82,730.26 पर पहुंच गया। इसी तरह, निफ्टी ने 25,410.20 के स्तर पर शुरुआत की लेकिन जल्द ही 25,400 के नीचे फिसल गया। वहीं वैश्विक बाजारों की बात करें तो एशिया में जापान का निक्केई इंडेक्स 0.8 फीसदी चढ़कर रिकॉर्ड हाई पर पहुंच गया। जापान की कोर महंगाई अगस्त में घटकर 2.7 फीसदी पर आ गई, जो कि नवंबर 2024 के बाद सबसे निचला स्तर है। उधर, अमेरिका के शेयर बाजारों में भी मजबूती रही। फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में संभावित कटौती के संकेत मिलने के बाद एसएंडपी 500, नेस्डेक और डाउ जोंस में अच्छी तेजी देखी गई। इन तमाम संकेतों के बीच निवेशकों को सतर्कता बरतते हुए चुनिंदा और मजबूत कंपनियों में निवेश करने की सलाह दी जा रही है। बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है, लेकिन अदाणी ग्रुप की रिकवरी और वैश्विक रुख से सकारात्मक संकेत भी मिल रहे हैं।

चालू वित्त वर्ष में प्रत्यक्ष कर संग्रह 9.18 फीसदी बढ़ा

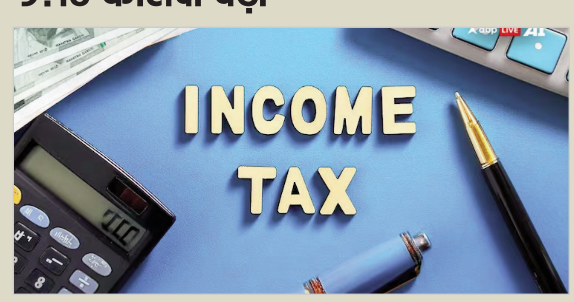

सरकार के खजाने में आए 10.82 लाख करोड़, रिफंड घटा

नई दिल्ली चालू वित्त वर्ष 2025-26 में 1 अप्रैल से 17 सितंबर तक नेट डायरेक्ट टैक्स संग्रह 10.82 लाख करोड़ रुपए से अधिक रहा, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 9.18 प्रतिशत अधिक है। इस संग्रह में व्यक्तिगत आयकर और कॉरपोरेट कर शामिल हैं। रिफंड समायोजित किए बिना सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह 12.43 लाख करोड़ रुपए से ऊपर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.39 प्रतिशत की वृद्धि है। कंपनियों से अग्रिम कर संग्रह में 6.11 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है और यह अब 3.52 लाख करोड़ रुपए से अधिक हो गया है। दूसरी ओर, गैर-कॉरपोरेट अग्रिम कर संग्रह में 7.30 प्रतिशत की गिरावट आई है और यह 96,784 करोड़ रुपए रह गया। चालू वित्त वर्ष में रिफंड राशि 24 प्रतिशत घटकर 1.61 लाख करोड़ रुपए रही। शुद्ध कंपनी कर संग्रह 4.72 लाख करोड़ रुपए से ऊपर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष के 4.50 लाख करोड़ रुपए से बेहतर है। गैर-कॉरपोरेट कर संग्रह 5.84 लाख करोड़ रुपए के करीब रहा, जो पिछले वर्ष की 5.13 लाख करोड़ रुपए से अधिक है। इसमें व्यक्तिगत करदाता और हिंदू अविभाजित परिवार (एचयूएफ) शामिल हैं। प्रतिभूति लेनदेन कर (स्ञ्झ्र) संग्रह लगभग स्थिर रहा और 26,306 करोड़ रुपए दर्ज किया गया। सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए प्रत्यक्ष कर संग्रह का लक्ष्य 25.20 लाख करोड़ रुपए रखा है, जो पिछले वर्ष से 12.7 प्रतिशत अधिक है। साथ ही, सरकार एसटीटी के जरिए 78,000 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य भी लेकर चल रही है।

एटीएम से पैसा नहीं निकले और अकाउंट से कट जाए तो घबराएं नहीं

–24 घंटे बाद भी पैसा नहीं आए तो बैंक कस्टमर केयर से करें संपर्क

नई दिल्ली

एटीएम से पैसे निकालने गए और मशीन से कैश नहीं निकला, लेकिन आपके बैंक खाते से पैसे कट गए? अगर ऐसा आपके साथ हो जाए तो घबराने की जरूरत नहीं। कुछ आसान तरीके अपनाकर पैसा वापस पा सकते हैं। आजकल लोग भले ही यूपीआई से पेमेंट करते हों, लेकिन एटीएम से कैश निकालना अभी भी जारी है।

कई बार तकनीकी खराबी की वजह से एटीएम से पैसे नहीं निकलते हैं लेकिन अकाउंट से राशि कट जाती है।

बता दें सबसे पहले पैसे निकालने के लिए जल्दबाजी न करें। अगर एटीएम से कैश नहीं निकला या अटक गया है तो थोड़ा इंतजार करें। कभी-कभी मशीन को पैसे निकालने में समय लगता है। जबरदस्ती नोट खींचने की कोशिश न करें, इससे नोट फट सकता है या मशीन खराब हो सकती है। अगर इंतजार के बाद भी पैसा नहीं निकले, तो ट्रांजेक्शन रिसिप्ट को संभालकर रखें। आपके फोन पर आए मैसेज को भी सुरक्षित रखें, जिसमें ट्रांजेक्शन की जानकारी होती है। इसके अलावा एटीएम का नंबर नोट करें, जो मशीन पर लिखा होता है।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के नियमों के मुताबिक अगर एटीएम से पैसा नहीं निकला, लेकिन अकाउंट से राशि कट गई, तो बैंक को पांच दिन के अंदर पैसा वापस करना होता है। अगर बैंक ऐसा नहीं करता, तो उसे आपको 100 रुपए हर दिन का मुआवजा देना होगा, जो 5 दिन बाद से शुरू होकर पैसे वापस आने तक मिलेगा, लेकिन इसके लिए आपको बैंक को सूचित करना जरूरी है।

24 घंटे तक इंतजार करें, क्योंकि कई बार बैंक खुद ही पैसा वापस कर देता है। अगर 24 घंटे बाद भी पैसा नहीं आता है, तो तुरंत बैंक के कस्टमर केयर से संपर्क करें। शिकायत करते समय एटीएम की लोकेशन, ट्रांजेक्शन की तारीख, समय, ट्रांजेक्शन आईडी और रसीद की जानकारी दें। अगर कस्टमर केयर से बात नहीं बनती, तो अपनी बैंक ब्रांच में जाएं या बैंक की वेबसाइट पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें।

अगर बैंक आपकी शिकायत को नहीं मानता, तो आप बैंक के इंटरनल ऑम्बुड्समैन से संपर्क कर सकते हैं। हर बैंक में एक ऑम्बुड्समैन ऑफिसर होता है, जिसकी जानकारी बैंक की वेबसाइट पर मिलती है।

अगर वहां भी समाधान नहीं होता, तो आप आरबीआई के ऑम्बुड्समैन से शिकायत कर सकते हैं। इसके लिए आरबीआई की वेबसाइट पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है या नजदीकी आरबीआई ऑम्बुड्समैन ऑफिस में संपर्क किया जा सकता है।

सेबी से अदाणी समूह को क्लीन चिट, हिंडनबर्ग के आरोपों को बताया निराधार

– गौतम अदाणी और संबंधित फर्मों को दी राहत;

नई दिल्ली भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने अदाणी समूह, समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी और उनसे जुड़ी कुछ कंपनियों को हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट में लगाए गए गंभीर आरोपों से क्लीन चिट दे दी है। सेबी ने दो अलग-अलग आदेशों में स्पष्ट किया कि जांच में कोई भी नियम उल्लंघन, धोखाधड़ी या संबंधित पक्षों के साथ संदिग्ध लेनदेन सामने नहीं आया। जनवरी 2023 में अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने अदाणी समूह पर स्टॉक की कीमतों में हेरफेर और कालेधन के लेनदेन जैसे आरोप लगाए थे। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर सेबी ने जांच शुरू की थी। जांच में सामने आया कि एडिकॉर्प एंटरप्राइजेज, माइलस्टोन ट्रेडलिंक्स और रहवर इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसी कंपनियों के साथ हुए लेनदेन को रिलेटेड पार्टी ट्रांजैक्शन नहीं माना जा सकता। सेबी ने कहा कि समूह द्वारा किए गए खुलासों में कोई अनियमितता या धोखाधड़ी नहीं पाई गई। सेबी के एक पूर्णकालिक सदस्य ने कहा कि समग्र रूप से विचार करने पर कोई उल्लंघन प्रमाणित नहीं होता, इसलिए बिना किसी दंड के मामला बंद किया गया। गौतम अदाणी ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर कहा कि पारदर्शिता और ईमानदारी हमेशा हमारी पहचान रही है। झूठ फैलाने वालों को देश से माफी मांगनी चाहिए।

अडाणी को क्लीन चिट मिलने के बाद क्या अब हिंडनबर्ग और राहुल गांधी माफी मांगेंगे

नीरज कुमार दुबे

हम आपको याद दिला दें कि हिंडनबर्ग ने अपने तथाकथित रिसर्च रिपोर्ट में अडाणी समूह पर स्टॉक मैनिपुलेशन और फर्जी अकाउंटिंग के आरोप लगाए। रिपोर्ट ऐसे समय में जारी की गई जब अडाणी एंटरप्राइजेज अपना 20,000 करोड़ रुपये का मेगा पब्लिक ऑफर लाने जा रही थी।

जनवरी 2023 में अमेरिकी शॉर्ट-सेलर कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च ने भारतीय उद्योग जगत के सबसे बड़े नामों में शुमार अडाणी समूह पर गंभीर आरोप लगाए। आरोपों का स्वरूप इतना सनसनीखेज था कि देखते ही देखते शेयर बाजार में भूचाल आ गया। करोड़ों निवेशकों की मेहनत की कमाई रातों-रात डूब गई और भारत की वैश्विक आर्थिक साख पर प्रश्नचिह्न लगाने की कोशिश हुई। यह केवल एक कॉर्पोरेट विवाद नहीं था, बल्कि भारत की औद्योगिक प्रगति को बदनाम करने की सुनियोजित साजिश थी।

हम आपको याद दिला दें कि हिंडनबर्ग ने अपने तथाकथित रिसर्च रिपोर्ट में अडाणी समूह पर स्टॉक मैनिपुलेशन और फर्जी अकाउंटिंग के आरोप लगाए। रिपोर्ट ऐसे समय में जारी की गई जब अडाणी एंटरप्राइजेज अपना 20,000 करोड़ रुपये का मेगा पब्लिक ऑफर लाने जा रही थी। इसका सीधा असर यह हुआ कि निवेशकों का विश्वास हिल गया और शेयरों में भारी गिरावट दर्ज हुई। चिंता की बात यह थी कि भारत के कुछ विपक्षी दलों ने भी इस रिपोर्ट को सच मानकर इतना दुष्प्रचार किया मानो पूरा अडाणी समूह भ्रष्टाचार और घोटालों का अड्डा हो। संसद से लेकर सड़क तक इस रिपोर्ट को हथियार बनाकर राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश हुई। इस राजनीतिकरण ने विदेशी निवेशकों में भी भ्रम फैलाया और भारत के कॉर्पोरेट जगत की विश्वसनीयता पर आघात पहुँचा।

लेकिन लगभग दो साल की लंबी और गहन जाँच के बाद भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) ने साफ कह दिया है कि अडाणी समूह के खिलाफ लगाए गए आरोप निराधार और आधारहीन थे। जाँच में पाया गया कि जिन वित्तीय लेन-देन को हिंडनबर्ग ने 'फर्जी' बताया, वे सब कानूनी रूप से वैध ऋण और पुनर्भुगतान थे। न तो धन का गबन हुआ, न ही किसी अवैध पार्टी को फायदा पहुँचाया गया। यहाँ तक कि जाँच के दौरान लिए गए सभी ऋण ब्याज समेत वापस किए गए। SEBI ने अपने आदेश में यह

भी कहा कि इन लेन-देन को 'रिलेटेड पार्टी ट्रांजैक्शन' या 'फजीर्वाड़ा' नहीं कहा जा सकता। यानी, आरोपों का कोई कानूनी या आर्थिक आधार ही नहीं था।

देखा जाये तो हिंडनबर्ग रिपोर्ट के चलते जो हुआ, वह किसी भी देश के उद्योग जगत के लिए चेतावनी है। अडाणी समूह के शेयरों में अचानक भारी गिरावट आई। छोटे-बड़े करोड़ों निवेशकों को नुकसान उठाना पड़ा। यह नुकसान केवल अडाणी का नहीं था, बल्कि भारत के वित्तीय बाजार और निवेश माहौल का भी था। गौतम अडाणी ने स्वयं कहा कि इस विवाद से उन्हें सबसे अधिक दुख इस बात का है कि आम निवेशकों को भारी नुकसान झेलना पड़ा। यह कथन उनकी व्यक्तिगत पीड़ा को दशार्ता है और यह भी बताता है कि एक सुनियोजित झूठ कितनी बड़ी आर्थिक तबाही ला सकता है।

देखा जाये तो हिंडनबर्ग की यह रिपोर्ट मात्र एक रिसर्च डॉक्युमेंट नहीं थी। यह स्पष्ट था कि इसके पीछे राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थ छिपे हुए थे। एक तरफ अमेरिकी और पश्चिमी ताकतें भारत की तेज आर्थिक वृद्धि और उसके वैश्विक प्रभाव से चिंतित थीं, दूसरी तरफ कुछ घरेलू राजनीतिक दलों ने इसे अपने लाभ के लिए हथियार बना लिया। इस साजिश का परिणाम यह हुआ कि भारत की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूमिल करने की कोशिश हुई। विदेशी मीडिया ने भी इस विवाद को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया। परंतु समय ने साबित कर दिया कि यह सब केवल भारत की औद्योगिक क्षमता को चोट पहुँचाने का प्रयास था।

अब जबकि सेबी की रिपोर्ट ने सभी आरोपों को झूठा सिद्ध कर दिया है, तो सबसे पहला कर्तव्य हिंडनबर्ग और उनके समर्थकों का बनता है कि वे भारत और निवेशकों से माफी मांगें। इसके साथ ही, भारत के विपक्षी दलों को भी आत्ममंथन करना चाहिए कि क्या केवल राजनीतिक विरोध के लिए वे ऐसी अंतरराष्ट्रीय साजिशों का हिस्सा बन सकते हैं? लोकतंत्र में असहमति और आलोचना जरूरी है, लेकिन जब बात राष्ट्रहित और निवेशकों के विश्वास की हो, तो विपक्ष को भी जिम्मेदारी दिखानी चाहिए।

हिंडनबर्ग रिसर्च तो अपनी कंपनी बंद कर चुका है, लेकिन उसकी अप्रमाणित रिपोर्ट के आधार पर देश की संसद का पूरा सत्र ठप करने वाले विपक्षी दल आज भी सक्रिय हैं। उस समय जिस तरह से उन्होंने निराधार आरोपों को हवा दी, विदेशी एजेंडे को ताकत दी और करोड़ों निवेशकों के भरोसे को चोट पहुँचाई, वह केवल राजनीतिक अवसरवाद नहीं बल्कि राष्ट्रीय हितों के साथ खिलवाड़ था। आज जबकि सच सामने आ चुका है और नियामक संस्था ने सभी आरोपों को खारिज कर दिया है, विपक्षी दलों को कम से कम देश और जनता से माफी माँगनी चाहिए।

बहरहाल, हिंडनबर्ग प्रकरण ने हमें यह सिखाया है कि किसी विदेशी रिपोर्ट या आरोप को आँख मूँदकर सच नहीं मान लेना चाहिए। इस मामले ने करोड़ों निवेशकों को झकझोरा, अडाणी समूह की छवि को धक्का पहुँचाया और भारत की साख को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चुनौती दी। परंतु अंततः सच्चाई सामने आई और स्पष्ट हुआ कि यह सब एक रचा-बसा षड्यंत्र था। अब समय आ गया है कि न केवल हिंडनबर्ग, बल्कि इस साजिश में शामिल राजनीतिक ताकतें भी देश और निवेशकों से सार्वजनिक रूप से माफी माँगें। क्योंकि भारत की औद्योगिक प्रगति किसी एक कंपनी की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की आर्थिक शक्ति का प्रतीक है। और उस पर चोट करना सीधे-सीधे राष्ट्रहित पर चोट करना है।

संपादकीय

लाठी अदालत की

सुप्रीम कोर्ट ने सर्दियां शुरू होने से पहले तीन सप्ताह के भीतर राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डो, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग व केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड.को वायु प्रदूषण रोकने के उपाय पेश करने को कहा है। उप्र, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब जैसे राज्यों से नाराजगी जताते हुए रिक्तियां भरने के लिए छह महाने का समय दिया। वायु गुणवत्ता आयोग केंद्र सरकार का वैधानिक निकाय है जिसका लक्ष्य दिल्ली एनसीआर में वायु गुणवत्ता का प्रबंधन व सुधार करना है। दिल्ली एनसीआर में हरियाणा, उप्र, राजस्थान व पंजाब के हिस्से शामिल हैं, जो प्रति वर्ष सर्दियों में भीषण वायु प्रदूषण की चपेट में आ जाते हैं। पीठ ने दंड़ प्रावधानों पर भी जोर दिया। अदालत के बार-बार कहने के बावजूद राज्य सरकारों की तरफ से वायु गुणवत्ता के सुधार के ठोस कदम नहीं उठाए जाते। आयोग के गठन के बावजूद समाधान ढूंढ़ने व राज्यों तथा एजेंसियों के बीच समन्वय स्थापित करने को लेकर परिवर्तनकारी मानक नहीं बनाए गए हैं। सर्दियां शुरू होते ही वाहनों के धुएं, धूल-मिट्टी, कारखानों व पराली जलाने के कारण पर्यावरण पर गहरी चादर छा जाती है जो श्वसन-तंत्र के लिए घातक सिद्ध होती है। वाहन उत्सर्जन मानकों को तय करने सालों-साल से चर्चा हो रही है। किसानों या पड़ोसी राज्यों को इस प्रदूषण का दोषी ठहरा कर दिल्ली अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकती। निर्माण कार्य रोकने का सीधा असर दिहाड़ी मजदूरों को झेलना पड़ता है। पुराने वाहनों की आवाजाही पर पाबंदी से साधारण यात्री की दिक्कतों का अंदाजा वातानुकूलित लग्जरी कारों में बैठने वाले नहीं लगा सकते। फिजूल बातें, अपुष्ट दावों, नौकरशाही व जिम्मेदारी से हाथ झाड़.कर सिर्फ सालोंसाल राजनीति की जाती है। बीते साल राजधानी की वायु गुणवत्ता सूचकांक पांच सौ के पार जाने पर तहलका मच गया था। मगर नागरिकों के हितों की अनदेखी और स्वास्थ्यगत जटिलताओं के प्रति उपेक्षा बरतते हुए सरकारों ने तात्कालिक उपायों पर ही जोर लगाया। ठोस कदम उठाने या संकट से निपटने की तैयारी करने के प्रति सरकारी रैवया उदासीन बना हुआ है। अदालत से फटकार के बावजूद संस्थाओं तथा आयोगों के अविवेक, अकर्मणयता व शक्तिहीनता का खमियाजा अंततः आम नागरिक को भुगतना पड़ता है। प्रदूषण के चलते सबसे अधिक दुर्दशा गरीबों व दिहाड़ी कामगारों की होती है जिस पर विचार करने में सरकार को कोताही नहीं करनी चाहिए।

चिंतन-मनन

अनमोल हैं कड़वे बोल

किसी ने कहा है कि अंधेरे में माचिस तलाशता हुआ हाथ, अंधेरे में होते हुए भी अंधेरे में नहीं होता, इस तलाश को अपने भीतर निरंतर जीवित रखना कोई साधारण बात नहीं है, परंतु जो लोग सफर की हदों को पहचानते हैं, जिन्हें हर मंजिल के बाद किसी नए सफर पर चल पड़ने की लत है, उनके भीतर से यह खोज कभी खत्म नहीं होती। अचूक शैली में, अपने क्रांतिकारी विचारों से लोगों को अपनी ही खोज के तौर तरीके बताने वाले राष्ट्रसंत मुनि तरुणसागर जी महाराज की वाणी सहज आकर्षण का विषय बन गई है। ऐसे समय में जब अपने हक में हर खुशी बटोर लेने की अदम्य लालसा लोगों को दुनिया के दु?ख दर्द से कोसों दूर ले जा रही है। मुनि श्री दुनिया को खुशी और गम की सही परिभाषा बता रहे हैं। यह सिर्फ संयोग नहीं है कि वे जहां भी पहुंचते हैं, सबसे पहले यही कहते हैं कि मैं कथा सुनाने नहीं जीवन की व्यथा सुनाने आया हूं। यह व्यथा घर-घर की कहानी है, जिसे एक बड़े आईने की शक्ल में सामने रखकर मुनि तरूण सागर जी पुकार कर कह उठते हैं कि इसे न तो ठुकराओ, न ही झुठलाने की कोशिश करो, बेहतर यही है कि इस व्यथा के बीच से ही जीवन का रस हासिल कर लो। मुनि तरुण सागर जी के बोल, सुनने वाले को भावित-प्रभावित तो करते ही हैं, उसे झकझोर कर भी रख देते हैं। उन्हें सुनते समय या पढ़ते समय आप अनुभव करते हैं कि आपकी अपनी जिंदगी एक धारावाहिक के रूप में आपकी आंखों के सामने तैरने लगी है। उनकी वाणी अतीत की जड़ता से उबारने और वर्तमान की लापरवाही के प्रति सचेत करने का काम करती है। वह आपके जख्मों को सहलाने के बदले यदि अधिक कुरदने की मुद्रा में दिख भी रही हो तो भी यह नहीं भूलना चाहिए कि मुनि श्री आपको स्थाई रूप से तंदुरूस्त बनाने का उद्यम कर रहे हैं। सूत्र शैली में संदेश देने वाले मुनि तरूण सागर जी को अपनी वाणी को कड़वे प्रवचन कहने पर इत्मीनान यदि है तो सिर्फ इसलिए कि वे जानते हैं, इंसान की प्रवृत्ति और कभी न बदलने की उसकी जिद इतनी कठिन और जटिल है कि सीधी उंगली से घी निकालना मुमकिन नहीं है। आज साहित्य, संस्कृति और समाज के हर मंच पर महिला जागृति या नारी विमर्श का दौर ही चल पड़ा है। मुनि तरूण सागर जी साफ शब्दों में कहते हैं कि समाज पुरुष प्रधान है, परंतु याद रखना चाहिए कि महिलाओं की भूमिका पुरुषों से भी बड़ी है। वे सत्य से मुंह मोड़ने या पीछे हटने वाले समाज को न सिर्फ जगाते हैं बल्कि अपने कड़वे बोल से कोसने में भी कोई गुरेज नहीं करते। सच के पाखंडी चेहरे को पहचानने वाली उनकी गहरी दृष्टि सजग करती हैं कि वास्तव में जो सत्य है उसे किसी बनावट की जरूरत नहीं है। संघर्ष में सत्य परेशान हो सकता है किन्तु पराजित नहीं होता।

मोदी-ट्रंप के सार्थक संवाद से क्या राह बदलेगी?

ललित गर्ग

नई दिल्ली में भारत-अमेरिकी व्यापार वार्ता की बाधाओं को दूर करने पर दोनों पक्षों के बीच सकारात्मक बातचीत के दौरान करीब तीन महीने बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फोन करके जन्मदिन की बधाई देते हुए रूस-यूक्रेन युद्धविराम का समर्थन करने के लिए आभार जताना, दोनों देशों के बीच रिश्तों में आई तल्खी को कम करने की कोशिश मानी जानी चाहिए। मोदी और ट्रंप के बीच हुई इस बातचीत ने दोनों देशों के रिश्तों में नई आशा और सकारात्मकता का संचार किया है। क्योंकि अमेरिका के एकतरफा टैरिफ और कुछ तीखे बयानों के बावजूद भारत ने संयम बरता एवं तीखी प्रतिक्रिया की बजाय मसले के सुलझने का इंतजार करते हुए विवेक एवं समझदारी का परिचय दिया। भारत पर थोपे गए ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को लेकर अमेरिका में साफ तौर पर दो विरोधी स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। ऐसे माहौल में जरूरी हो गया है कि दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर पर संवाद जारी रहे। इसी बात को अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने स्वीकार करते हुए यह उम्मीद जताई थी कि आखिरकार अमेरिका और भारत साथ आएंगे, यही मौजूदा वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है। मोदी एवं ट्रंप का ताजा संवाद इसी की निष्पत्ति बना है। यह संवाद मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर हुआ और इसमें अतीत की कई कड़वाहटों को पीछे छोड़कर भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। दरअसल, दोनों नेताओं की बातचीत का बड़ा कारण शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में रूस, चीन और भारत के शीर्ष नेताओं की गर्मजोशी भी बना, उससे ट्रंप की चिंताएं बढ़ी थी, इस बैठक के बाद ही पहली बार ट्रंप के रुख में नरमी के संकेत मिले थे। उसके बाद दस सितंबर को फिर ट्रंप ने कहा कि भारत-अमेरिका व्यापार वाताओं की बाधाओं को दूर करने पर बातचीत जारी है। ताजा वार्ता ने यह संदेश दिया कि भारत और अमेरिका के रिश्ते किसी एक घटना या परिस्थिति पर निर्भर नहीं, बल्कि दीर्घकालीन रणनीति और साझा हितों की नींव पर खड़े हैं।

आज की दुनिया में भारत और अमेरिका का रिश्ता केवल द्विपक्षीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक परिदृश्य को भी प्रभावित करता है। अमेरिका जहां विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति है, वहीं भारत उभरती हुई आर्थिक ताकत और सबसे बड़ा लोकतंत्र है। दोनों की साझेदारी लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता और वैश्विक शांति की आकांक्षाओं पर आधारित है। हाल के वर्षों में कभी-कभी मतभेद जरूर सामने आए-जैसे व्यापार शुल्क, वीजा नीतियां, भारत-पाक सीजफायर और रक्षा समझौते इन मतभेदों के बावजूद रणनीतिक साझेदारी मजबूत होती रही है। भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध लंबे समय से चर्चा का विषय रहे हैं। कभी शुल्क वृद्धि को लेकर तनाव हुआ, तो कभी आयात-निर्यात की नीतियों को लेकर असहमति। किंतु ट्रंप-मोदी वार्ता के बाद एक बार फिर नए समझौते और अवसर सामने आ सकते हैं। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और आईटी, सेवा क्षेत्र, ऊर्जा और तकनीकी निवेश में दोनों के बीच गहरा सहयोग है। प्रधानमंत्री मोदी ने व्यापारिक अड़चनों को दूर करने पर जोर दिया है और ट्रंप ने भी व्यापार घाटे को कम करने के लिए सहयोग का संकेत दिया। यह संकेत आने वाले समय में द्विपक्षीय व्यापार को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं।

भारत और अमेरिका का रक्षा सहयोग पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ा है। अमेरिका ने भारत को महत्वपूर्ण रक्षा तकनीक उपलब्ध कराई है और संयुक्त सैन्य अभ्यासों से सुरक्षा साझेदारी मजबूत हुई है। एशिया-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए भारत-अमेरिका का रक्षा सहयोग न केवल द्विपक्षीय है, बल्कि पूरे क्षेत्रीय संतुलन के लिए अहम है। चीनी मनमानी पर नियंत्रण के लिए अमेरिका को खासतौर पर भारतीय सहयोग की जरूरत है। इसी मकसद से क्वॉड का गठन किया गया, जिसे अमेरिकी सरकार ने तवज्जो भी दी। लेकिन, ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी की वजह से क्वॉड के भविष्य पर सवाल उठने लगे हैं। वहीं, वॉशिंगटन में यह भी चिंता बनी कि पिछले दो दशकों में भारत-अमेरिका रिश्तों में जो प्रगति हुई थी, वह ट्रंप की महत्वाकांक्षाओं एवं अतिश्योक्तिपूर्ण हरकतों से पिछले कुछ दिनों में बेकार होती हुई दिख रही थी। लेकिन देर आये दुरस्त आये की कहावत के अनुसार दोनों शीर्ष नेताओं की बातचीत से अब अंधेरे छंटते हुए दिख रहे हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संतुलन कायम रखने में और बड़ी भूमिका निभाए, वहीं भारत अपनी सामरिक स्वतंत्रता बनाए रखते हुए सहयोग को और गहरा करना चाहता है।

भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अमेरिका एक अहम सहयोगी बन सकता है। अमेरिका से तरलीकृत प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल का आयात बढ़ रहा है। यह न केवल ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा, बल्कि भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था को भी नई गति देगा। तकनीकी क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच साझेदारी मजबूत है। सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में सहयोग आने वाले दशकों के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकता है। अमेरिका में बसे भारतीय मूल के लोग दोनों देशों के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। चाहे राजनीति हो, शिक्षा, स्वास्थ्य या तकनीक-भारतीय-अमेरिकी समुदाय का योगदान उल्लेखनीय है। यह समुदाय भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों को भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार देता है। ट्रंप और मोदी की बातचीत में भारतीय प्रवासी समुदाय की प्रशंसा भी हुई, जिसने दोनों देशों के बीच विश्वास और निकटता को और बढ़ाया।

भारत और अमेरिका दोनों आतंकवाद से प्रभावित रहे हैं। 9/11 की घटना ने अमेरिका को और 26/11 ने भारत को गहरे जख्म दिए। यही कारण है कि आतंकवाद के खिलाफ दोनों का दृष्टिकोण काफी हद तक समान है। हाल की बातचीत में आतंकवाद को समाप्त करने और सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। अफगानिस्तान और मध्य-एशिया की परिस्थितियों को देखते हुए भारत और अमेरिका का सहयोग वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए निर्णायक हो सकता है। ट्रंप और मोदी की बातचीत ने यह साबित किया है कि अतीत के मतभेद रिश्तों का अंत नहीं, बल्कि नए संवाद का अवसर बन सकते हैं। व्यापार, रक्षा, ऊर्जा, तकनीक और आतंकवाद जैसे क्षेत्रों में सहयोग दोनों देशों के लिए लाभकारी है। आज जब दुनिया वैश्विक महामारी, आर्थिक संकट, युद्ध की विभीषिका और भू-राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रही है, भारत और अमेरिका की साझेदारी नई दिशा और स्थिरता का संकेत देती है।

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार-वार्ता में बेशक व्यवधान आए हों, पर भारत और यूरोपीय संघ के बीच जिस गति से वार्ता हो रही है, उससे वर्ष के अंत तक दोनों में व्यापार समझौता होने की पूरी उम्मीद है। असल में दोनों देशों के बीच पांच दौर की व्यापार वार्ता हो चुकी है, लेकिन 50 फीसदी टैरिफ लगाए जाने के बाद छठे दौर की प्रस्तावित वार्ता रुक गई थी, जो बीते मंगलवार से फिर पटरी पर लौट आई है। दरअसल, ट्रंप प्रशासन चाहता है कि भारत अपने कृषि एवं डेयरी क्षेत्र को अमेरिकी कंपनियों के लिए पूरी तरह से खोले, लेकिन भारत के लिए यह संभव नहीं है, क्योंकि यह उसके किसानों व मछुआरों के हितों के खिलाफ है। भारत पहले ही कह चुका है कि वह किसानों, डेयरी उत्पादकों एवं एमएसएमई के हितों से कोई समझौता नहीं करेगा।

सड़क सुरक्षा : व्यवस्था की पोल खोलते हादसे

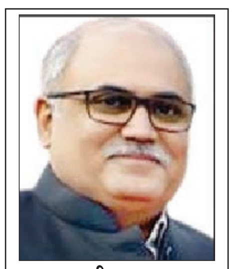

रजनीश कपूर

दिल्ली-भारत की राजधानी-जो तेजी से विकसित हो रही है, में सड़कें न केवल प्रगति का प्रतीक हैं, बल्कि मौत का भी सैलाब बन चुकी हैं। 14 सितम्बर, 2025 को दिल्ली में फिर दिल दहला देने वाली घटना घटी, जब एक बीएमडब्ल्यू कार ने एक बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में वित्त मंत्रालय के अधिकारी नवजोत सिंह की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उनकी पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गई। आए दिन देश के अलग-अलग जगहों से ऐसी घटनाओं की खबर मिलती हैं, जो देश की सड़क सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोल कर रख देती हैं। सड़क हादसों के मुख्य कारण हैं-आपातकालीन सेवाओं की कमी, यातायात नियमों की अवहेलना और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की सुस्ती। सबसे पहले, हालिया दुर्घटना को समझें। नवजोत सिंह की मौत के मामले में पुलिस जांच में पता चला कि आरोपी की कार की गति निर्धारित गति सीमा से काफी अधिक थी। लेकिन हादसे के बाद जो सबसे बड़ी लापरवाही सामने आई, वह थी प्राथमिक चिकित्सा सहायता की अनुपस्थिति। यदि 'गोल्डन ऑवर'-यानी हादसे के पहले घंटे में उचित उपचार मिल जाता तो शायद नवजोत सिंह बच जाते। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत में सड़क दुर्घटनाओं में 50 प्रतिशत मौतें प्री-हॉस्पिटल चरण में हो जाती हैं क्योंकि आपातकालीन सेवाएं अपर्याप्त हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की 2021 की रिपोर्ट के मुताबिक, देश में 1,55,622 सड़क मौतें हुई जिनमें से 69,240 दोपहिया वाहनों से जुड़ी थीं। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अनुसार, 2022 में 4,64,910 दुर्घटनाओं में 1,47,913 मौतें हुई। समस्या यह है कि भारत में एंबुलेंस सेवाएं जैसे 108 या 102, अक्सर ओवरलोडेड होती हैं। ग्रामीण और राजमार्गीय इलाकों में तो स्थिति और भी खराब है। यहां एंबुलेंस पहुंचने में औसतन 45 मिनट से एक घंटा लग जाता है।

एक अध्ययन के अनुसार, राष्ट्रीय राजमार्गों पर दुर्घटना स्थल से ट्रॉमा सेंटर तक पहुंचने में देरी से 40 प्रतिशत मौतें बढ़ जाती हैं। दिल्ली में, जहां वाहनों की संख्या 1 करोड़ से अधिक है, ट्रैफिक जाम एंबुलेंस को रोक देता है। फोरेंसिक विशेषज्ञों का मानना है कि यदि प्री-हॉस्पिटल इमरजेंसी केयर मजबूत होती तो 30-50 प्रतिशत जानें बच सकतीं। लेकिन सरकार की '5ई' रणनीति-इंजीनियरिंग, एजुकेशन, एनफोर्समेंट, इमरजेंसी केयर, में इमरजेंसी केयर पर निवेश न्यूनतम है। नतीजा? हर दिन 405 मौतें और 1,290 घायल। यह राष्ट्रीय संकट है।

यातायात नियमों की अवहेलना की बात करें। इसका बड़ा कारण 'चलता है' वाली मानसिकता है। इंटरनेट पर कई प्लेटफॉर्म्स पर चचाओं से साफ है कि लोग नियमों को 'सजावटी' मानते हैं। ओवरस्पीडिंग, बिना हेलमेट या सीटबेल्ट ड्राइविंग, लेन तोड़ना, आम हैं। क्यों? पहला, जागरूकता की कमी। स्कूलों में ट्रैफिक नियमों की शिक्षा पर्याप्त नहीं दी जाती। नतीजा, बच्चे बड़े होकर भी नियमों को महत्त्व नहीं देते। दूसरा, जनसंख्या घनत्व। 1.3 अरब आबादी वाले देश में सड़कें ओवरलोड हैं, लोग सोचते हैं, 'एक-दो नियम तोड़ लूंगा, क्या फर्क पड़ेगा?' तीसरा, सामाजिक दबाव। यदि कोई रेड लाइट पर रुकता है, तो पीछे से हॉर्न बजते हैं, गालियां पड़ती हैं, ट्रैफिक में समय की कमी से तनाव बढ़ता है, और नियम तोड़ना 'स्मार्ट' लगता है। चौथा, सांस्कृतिक पक्ष। भारत में 'जुगाड़' संस्कृति प्रचलित है। नियम तोड़ना 'चालाकी' माना जाता है।

एक सर्वे के अनुसार, अधिकांश ड्राइवरों को नियमों की पूरी जानकारी ही नहीं है। परिणामस्वरूप, 2023 में 35,000 पैदल यात्री और 10,000 बच्चे दुर्घटनाओं का शिकार बने। जनता जागरूक होती, तो ये आंकड़े कम होते। इस अवहेलना का एक प्रमुख कारण है कानून प्रवर्तन एजेंसियों की सुस्ती भी है। ट्रैफिक पुलिस की कमी भयानक है। ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डवलपमेंट के अनुसार, 85,144 ट्रैफिक पुलिस पदों में 30 प्रतिशत और 58,509 कांस्टेबल पदों में 39 प्रतिशत रिक्त हैं। बिना सख्ती के, लोग नियम तोड़ते हैं। क्यों आलसी हैं एजेंसियां? पहला, संसाधनों की कमी। कैमरे, स्पीड गन्स, बॉडी कैमरे आदि जैसे उपकरण अपर्याप्त हैं। मोटर व्हीकल एक्ट,

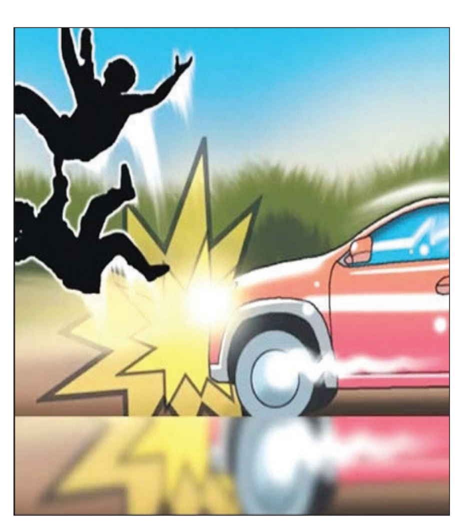

2019 में सख्त जुमार्ने जोड़े गए लेकिन ये लागू नहीं होते। दूसरा, भ्रष्टाचार, छोटे-मोटे उल्लंघनों पर 50-100 रुपये में सेटलमेंट हो जाता है, जिससे डर समाप्त हो जाता है। तीसरा, प्राथमिकताएं, पुलिस अन्य अपराधों पर फोकस करती है, ट्रैफिक को सेकेंडरी मानती है। चौथा, प्रशिक्षण की कमी, अधिकारी सड़क डिजाइन या व्यवहार समझ नहीं पाते। बीबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, खराब सड़क डिजाइन और साइनेज भी दुर्घटनाएं बढ़ाते हैं, लेकिन प्रवर्तन कमजोर है। विदेशों की तरह यदि भारत में भी सख्ती हो, तो सुधार संभव है। नवजोत सिंह जैसी मौतें हमें झकझोरती हैं, यदि हम नहीं चेते, तो और कितने परिवार बिखरेंगे? (लेख में विचार निजी हैं)

संक्षिप्त समाचार

नेपाल : जेन-जी के प्रदर्शनों में मारे गए लोगों के सम्मान में राष्ट्रीय शोक दिवस

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में बुधवार को जेन-जी के विरोध प्रदर्शनों के दौरान मारे गए लोगों के सम्मान में राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया। इस मौके पर देश के सभी सरकारी कार्यालय और शैक्षणिक संस्थान बंद रहे। गृह मंत्रालय ने कहा, जेन-जी द्वारा 8 और 9 सितंबर को आयोजित विरोध प्रदर्शनों के दौरान मारे गए लोगों की स्मृति में पूरे नेपाल में राष्ट्रीय ध्वज आधे झुके रहे। इसके साथ ही विदेशों में सभी नेपाली दूतावास और मिशन भी इस मौके पर बंद रहे। इससे पहले प्रधानमंत्री सुशीला कार्की ने घोषणा की थी कि 8 और 9 सितंबर को जनरेशन-जी के विरोध प्रदर्शन के दौरान मारे गए लोगों को बलिदानी घोषित किया जाएगा। इन हिंसक विरोध प्रदर्शनों में मारे गए 72 लोगों में 3 पुलिसकर्मी भी थे। आंदोलन के दौरान राजनीतिक नेताओं के घरों, वाहनों को फूंक दिया गया था। इस बीच देश में भारी अशांति के बाद विजयादशमी व दीपावली के त्योहारों के नजदीक आते ही लोग बाजारों में खरीदारी में भी व्यस्त हो गए हैं।

न्यूयॉर्क टाइम्स और टीएमजेड के खिलाफ अमेजन जनजाति का मुकदमा खारिज

न्यूयॉर्क , एजेंसी। कैलिफोर्निया के एक अदालत ने ब्राजील के अमेजन क्षेत्र की एक जनजाति द्वारा अमेरिकी अखबार न्यूयॉर्क टाइम्स और टीएमजेड के खिलाफ दायर मुकदमे को खारिज कर दिया है। इस मुकदमे में दावा किया गया था कि अखबार ने जनजाति के इंटरनेट से पहली बार परिचित होने पर जो रिपोर्टिंग की, उसमें जनजाति के सदस्यों को व्यापक रूप से तकनीक से प्रभावित और अश्लील सामग्री के आदी के रूप में चित्रित किया गया। यह मुकदमा मई में जावरी घाटी की मारुबो जनजाति द्वारा दायर किया गया था, जो अमेजन वर्षावन में लगभग 2,000 लोगों का समुदाय है। मुकदमे में दावा किया गया था कि टीएमजेड और याहू की खबरों ने टाइम्स की रिपोर्टिंग को बढ़ा-चढ़ाकर और सनसनीखेज बनाकर पेश किया और इससे जनजाति की बदनामी हुई। इस महीने की शुरुआत में याहू को प्रतिवादी के रूप में खारिज कर दिया गया था। अदालत ने याचिकाकर्ता के तर्क को सही नहीं माना और याचिका खारिज कर दी।

चार्ली किर्क पर टिप्पणी के लिए इल्हान उमर के खिलाफ नहीं होगी कार्रवाई

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के निचले सदन ने बुधवार को चार्ली किर्क की हत्या के बाद की टिप्पणियों के लिए अपनी ही एक सदस्य इल्हान उमर को दंडित करने से इनकार कर दिया। 214-213 मतों से पारित प्रस्ताव में दक्षिण कैरोलिना की रिपब्लिकन प्रतिनिधि नैन्सी मेस के उस प्रस्ताव को रद्द कर दिया गया, जिसमें मिनेसोटा की डेमोक्रेटिक प्रतिनिधि इल्हान उमर की निंदा करने और उन्हें सदन की दो समितियों: शिक्षा एवं कार्यबल, और बजट से हटाने का प्रस्ताव था। दोनों के बीच सोशल मीडिया पर तीखी बहस हुई है। मेस ने कहा है कि उमर, एक अप्रवासी हैं, जिन्होंने मिनियापोलिस में 2020 में जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के बाद बंदूक रखने और नस्लीय संबंधों पर किर्क के विचारों की आलोचना की थी, को उसके गृह देश सोमालिया भेज दिया जाना चाहिए। उमर ने कहा कि मेस पैसे जुटाने और गवर्नर पद के लिए अपनी दावेदारी को मजबूत करने के लिए एक झूठी कहानी गढ़ रही हैं। चार्ली किर्क की बीते दिनों गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

ऑक्सफोर्ड से मेडिकल पढ़ाई का फर्जी दावेदार प्रतिबंधित

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन के एक न्यायाधिकरण ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से मेडिकल की पढ़ाई का झूठा दावा करने वाले भारतीय मूल के वकील अनुराग मोहिंद्रू (50) को पेशेवर कदाचार के आरोप में दोषी करार देते हुए प्रतिबंधित कर दिया है। अनुराग पर 'बार स्टैंडर्ड बोर्ड' ने भ्रष्ट आचरण में शामिल होने का आरोप लगाया था, जिससे कानूनी पेशे में भरोसा खत्म होने की आशंका थी। उसने नवंबर 2012 में 23 एसेक्स स्ट्रीट चैंबर में पद का आवेदन देते समय कानूनी पेशे को बदनाम किया। बोर्ड ने इस हफ्ते जारी बयान में कहा, अनुराग ने अपने बायोडाटा में दावा किया कि उन्होंने ऑक्सफोर्ड विवि से बायोमेडिकल साइंस/मेडिसिन की पढ़ाई की है, जबकि उन्होंने ऐसा नहीं किया था। न्यायाधिकरण ने पाया कि यह बार के सदस्यों से अपेक्षित मानकों का उल्लंघन था।

ट्रम्प ने एंटीफा मूवमेंट को आतंकवादी संगठन घोषित किया

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने वामपंथी, फासीवाद विरोधी एंटीफा मूवमेंट को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया है। उन्होंने ये कदम अपने करीबी और दक्षिणपंथी (Right Wing) राजनीतिक कार्यकर्ता चार्ली किर्क की हत्या के कुछ दिनों बाद उठाया है। अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में राष्ट्रपति ट्रम्प ने एंटीफा को फंड मुहैया कराने वालों को भी केतावनी देते हुए कहा है कि जो भा इस आंदोलन की मदद करेगा, उसके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी और नियमानुसार गहन जांच की जाएगी। राष्ट्रपति ट्रम्प ने ट्रुथ सोशल पर लिखा, मुझे अपने सभी अमेरिकी देशभक्तों को यह सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि मैं एंटीफा, एक बीमार, खतरनाक, कट्टरपंथी वामपंथी आपदा, को एक प्रमुख आतंकवादी संगठन घोषित कर रहा हूँ। मैं यह भी दृढ़ता से अनुशंसा करता हूँ कि एंटीफा को वित्तपोषित करने वालों की उच्चतम कानूनी मानकों और प्रथाओं के अनुसार गहन जाँच की जाए। इस मामले पर ध्यान देने के लिए धन्यवाद!

क्या है एंटीफा मूवमेंट : एंटीफा फासीवाद-विरोधी यानी एंटी फासिस्ट का संक्षिप्त रूप है, जिसका इस्तेमाल बिखरे हुए वामपंथी समूहों के लिए किया जाता है। यह अमेरिका में एक वामपंथी विचार वाला फासीवाद विरोधी राजनीतिक आंदोलन है, जो नस्लीय हिंसा या भेदभाव के खिलाफ आवाज बुलंद करता है। यह संगठन अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए अमूमन अहिंसक कदम उठाता रहा है लेकिन कई मौकों पर हिंसक कदम भी उठा चुका है। एंटीफा अहिंसक तौर तरीकों में पोस्टर-बैनर और फ्लायर के जरिए अपने राजनीतिक आंदोलनों को धार देता रहा है। हालांकि, कुछ लोग डिजिटल सक्रियता, डॉक्सिंग के अलावा उत्पीड़न, यहां तक की शारीरिक हिंसा और संपत्ति को नुकसान पहुँचाने जैसी रणनीतियां भी अपनाते रहे हैं। इस आंदोलन के समर्थकों का उद्देश्य दक्षिणपंथी चरमपंथियों से मुकाबला करना है। ये लोग नस्लीय भेदभाव के खिलाफ भी लड़ाई लड़ते रहे हैं।

लाल और काले झंडे का मिश्रण : सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के अनुसार, एंटीफा द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सबसे आम प्रतीकों में से एक 1917 की रूसी क्रांति के लाल झंडे और 19वीं सदी के अराजकतावादियों के काले झंडे का मिश्रण है। एंटीफा समूह अक्सर दक्षिणपंथी सभाओं और रैलियों को बाधित करने के लिए विरोध प्रदर्शन करते हैं। कहा जाता है कि वे सोशल मीडिया, एन्क्रिप्टेड पीयर-टू-पीयर नेटवर्क और सिग्नल जैसी मैसेजिंग सेवाओं के माध्यम से अपनी गतिविधियों को अंजाम देते हैं।

चार्ली किर्क ने मौत से पहले भेजे थे संदेश : इस सप्ताह की शुरुआत में, सोमवार को, व्हाइट हाउस के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ स्टीफन मिलर ने कहा कि चार्ली किर्क ने उन्हें जो अंतिम संदेश भेजा था, उसमें हिंसा को बढ़ावा देने के आरोपी वामपंथी समूहों के खिलाफ एक मिलजुलकर एक कोशिश करने का आह्वान किया गया था। मिलर ने वादा किया कि संघीय सरकार उन्हें खत्म करने के लिए हर उपलब्ध संसाधन का इस्तेमाल करेगी। मिलर उपराष्ट्रपति जेडी वेंस द्वारा आयोजित द चार्ली किर्क शो पॉडकास्ट पर बोल रहे थे। करीब आधा दशक पहले, मई 2020 में, भी राष्ट्रपति ट्रम्प ने सुस्त एंटीफा आंदोलन को आतंकवादी संगठन घोषित करने की बात कही थी।

यूटा वैली यूनिवर्सिटी में किर्क की हत्या : 31 वर्षीय चार्ली किर्क की 10 सितंबर को यूटा वैली यूनिवर्सिटी में एक कार्यक्रम के दौरान हत्या कर दी गई थी। उनके गर्दन में गोली मारी गई थी। इस हमला के कुछ ही पल बाद हमलावर घटनास्थल से फरार हो गया था। हालांकि, हमलावर टायलर रॉबिन्सन को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया गया। किर्क गैर-लाभकारी राजनीतिक संगठन 'टर्निंग पॉइंट यूएसए' के सह-संस्थापक थे और ट्रंप के करीबी सहयोगी थे। राष्ट्रपति ट्रंप ने सोशल मीडिया पर उनकी मौत की घोषणा करते हुए किर्क की महान कहकर प्रशंसा की थी।

हैरिस ने अपनी किताब में खोले कई राज- बुटिजज को लड़ाना चाहती थीं उपराष्ट्रपति चुनाव

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने अपनी नई किताब में कई बड़े खुलासे किए है। इसी में एक खुलासा उन्होंने उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर किया है। हैरिस ने बताया कि 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में उनकी पहली पसंद बतौर रनिंग मेट पीट बुटिजज थे। हालांकि, उन्होंने यह जोड़ी बनने से पहले ही पीछे हटने का फैसला लिया क्योंकि उन्हें लगा कि अमेरिका एक साथ इतने बदलाव को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। हैरिस ने 107 डेज नामक किताब में लिखा कि परिवहन मंत्री पीट बुटिजज उनके लिए आदर्श चुनावी साथी होते। उन्होंने कहा, कि अगर मैं एक श्वेत पुरुष होती, तो शायद यह जोड़ी आदर्श होती। लेकिन उन्होंने माना कि अमेरिका से एक साथ महिला, अश्वेत और यहूदी पृष्ठभूमि वाले परिवार को स्वीकार करने की उम्मीद करना उस समय बड़ा जोखिम होता।

दिल तो चाहता था, लेकिन... : किताब में हैरिस लिखती हैं कि उनका मन तो कहता था कि चलो कर ही देते हैं लेकिन चुनाव की गंभीरता को देखते हुए उन्हें समझ आया कि यह दांव जोखिम भरा हो सकता है। उन्होंने कहा कि पीट और वे दोनों इस हकीकत को समझते थे और यह निर्णय उनके लिए दुखदायी भी था।

बुटिजज का राजनीतिक सफर : पीट बुटिजज इंडियाना के साउथ बेंड शहर के मेयर रहे और नौसेना रिजर्व में इंटेलिजेंस ऑफिसर भी। वे 2020 के राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक उम्मीदवार के तौर पर उतरे और आयोवा कॉकस में शीर्ष पर भी रहे। इसी दौरान उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि किस मोड़ पर हैरिस ने उनके साथ जोड़ी बनाने का विचार छोड़ दिया। 2024 में जब तत्कालीन राष्ट्रपति जो बाइडन ने बहस में खराब प्रदर्शन के बाद चुनावी दौड़ से हटने का एलान किया, तब डेमोक्रेटिक पार्टी का चेहरा हैरिस बनीं। अंततः उन्होंने मिनेसोटा के गवर्नर टिम वाल्ज़ को रनिंग मेट चुना। बता दें, वाल्ज की टिप्पणी ये लोग बस अजीब हैं ट्रंप और जेडी वेंस पर खूब वायरल हुई थी। इसके बावजूद हैरिस चुनाव हार गईं थीं।

बांग्लादेश में सूफी इस्लाम पर भी खतरा, 100 से ज्यादा हमले, मोहम्मद यूनुस सरकार ने ओढ़ी चुप्पी

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में बीते साल शेख हसीना को सत्ता से बेदखल किए जाने के बाद से ही कट्टरपंथी ताकतें हावी हैं। हिंदुओं, ईसाइयों पर हमले के बाद मुसलमानों का ही एक तबका इन कट्टरपंथियों के निशाने पर है। एकदम पाकिस्तान की राह पर ही चलते हुए बांग्लादेश के कट्टरपंथियों ने देश भर में 100 जगहों पर सूफी संतों की मजारों पर हमले किए हैं। इससे पहले हिंदू मंदिरों, ईसाई समुदाय की चर्चों और अहमदिया समुदाय की मस्जिदों को टारगेट किया जाता रहा है। बांग्ला संस्कृति में सूफी संतों की मजारों और दरगाहों का एक लंबा इतिहास रहा है। लेकिन वहाबी इस्लाम में किसी मजार या दरगाह आदि को स्वीकार नहीं किया जाता।

जानकारी के मुताबिक बांग्लादेश में शेख हसीना की सत्ता से विदाई होने के बाद से अब तक 100 सूफी मजारों पर हमले हो चुके हैं। अब तक ऐसे मामलों में मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने कोई ऐक्शन नहीं लिया है। माना जाता है कि सूफी संतों की मजारें और दरगाहें इस्लाम के उदार स्वरूप का हिस्सा रही हैं, लेकिन वहाबी कट्टरपंथी इनके खिलाफ रहे हैं। यही कारण है कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान से लेकर बांग्लादेश तक में इन पर निशाने साधे जा रहे हैं। इन हमलों में मजारों को तोड़ना, लूटना और वहां मौजूद लोगों की पिटाई तक शामिल है।

माना जा रहा है कि बांग्ला समुदाय में सेकुलरिज्म के मूल्यों को कमजोर करने और हिंदू समुदाय के साथ सद्भाव को खत्म करने के लिए भी इस तरह के हमले हो रहे हैं। इस्लाम की शुद्धता के नाम पर इस तरह के हमले दूसरे धर्मों के लोगों पर हो रहे हैं। दरअसल भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी परंपरा का विकास कई सदियों पुराना है और इनकी मान्यताएं हिंदुओं से भी कुछ हद तक मिलती जुलती हैं। इसके अलावा कट्टरपंथियों का कहना रहा है कि सूफी मजारें इस्लाम के उस सिद्धांत के खिलाफ हैं, जिसके तहत मूर्ति पूजा या फिर किसी ढांचे को मत्था टेकना वर्जित है।

बीएलए और मजीद ब्रिगेड को आतंकवादी संगठन घोषित करने की मांग, पाकिस्तान और चीन का संयुक्त प्रस्ताव

न्यूयॉर्क, एजेंसी। पाकिस्तान और चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) और उसकी आत्मघाती शाखा मजीद ब्रिगेड को आतंकवादी संगठन घोषित करने के लिए संयुक्त प्रस्ताव पेश किया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 1267 अल कायदा प्रतिबंध समिति के सामने यह प्रस्ताव पेश किया गया है। संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत असीम इफ्तिखार अहमद ने बुधवार को कहा कि आईएसआईएल-के, अल-कायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान, ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट, बीएलए और उसकी मजीद ब्रिगेड सहित कई आतंकवादी संगठन अफगानिस्तान से संचालित हो रहे हैं। पाकिस्तान ने दावा किया कि उसकी सीमा के पार अफगानिस्तान में 60 से ज्यादा आतंकी शिविर संचालित हो रहे हैं। पाकिस्तान वर्तमान में सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में पाकिस्तान के विशेष प्रतिनिधि अहमद ने कहा, पाकिस्तान और चीन ने संयुक्त रूप से 1267 प्रतिबंध समिति को बीएलए और मजीद ब्रिगेड को प्रतिबंधित करने का अनुरोध किया है। हमें उम्मीद है कि परिषद उनकी आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए प्रस्ताव पर जल्द कार्रवाई करेगी। पाकिस्तान वर्तमान में 15 देशों की सुरक्षा परिषद में 2025-26 के कार्यकाल के लिए एक अस्थायी सदस्य के रूप में शामिल है, जबकि चीन इस शक्तिशाली निकाय का वीटो-अधिकार प्राप्त स्थायी सदस्य है। बीएलए का आत्मघाती दस्ता है मजीद ब्रिगेड पाकिस्तान 2025 के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 1988 तालिबान प्रतिबंध समिति का अध्यक्ष और आतंकवाद-रोधी समिति का उपाध्यक्ष भी है। अहमद ने कहा कि अफगान तालिबान अधिकारियों को आतंकवाद-रोधी अपने अंतरराष्ट्रीय दायित्वों को पूरा करना चाहिए। अहमद ने कहा, अफगानिस्तान से पैदा हुआ आतंकवाद पाकिस्तान की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। साल 2011 में गठित मजीद ब्रिगेड, बीएलए का आत्मघाती दस्ता है और यह मुख्यतः पाकिस्तान में सुरक्षा बलों और चीनी हितों को निशाना बनाता है। पाकिस्तान में कई आत्मघाती हमलों में शामिल रहे हैं ये संगठन पिछले महीने, अमेरिका ने बीएलए और उसकी आत्मघाती शाखा मजीद ब्रिगेड को एक विदेशी आतंकवादी संगठन घोषित किया था। कई आतंकवादी हमलों के बाद 2019 में वाशिंगटन द्वारा बीएलए को एसडीजीटी घोषित किया गया था। साल 2024 में, बीएलए ने कराची हवाई अड्डे और ग्वादर बंदरगाह प्राधिकरण परिसर के पास आत्मघाती हमले करने का दावा किया था।

बांग्लादेश: शेख हसीना और उनके परिवार का वोटर कार्ड ब्लॉक , अगले चुनाव में वोटिंग पर रोक

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना और उनके परिवार के कई सदस्य अगले साल होने वाले चुनाव में वोट नहीं डाल सकेंगे। उनके राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईडी) कार्ड ब्लॉक कर दिए गए हैं। स्थानीय मीडिया ने यह जानकारी दी। निर्वाचन आयोग (ईसी) के वरिष्ठ सचिव अख्तर अहमद ने बुधवार को पत्रकारों से कहा कि जिन लोगों का राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईडी) ब्लॉक है, वे विदेश से वोट नहीं डाल सकेंगे। उन्होंने बताया कि जिन लोगों ने मुकदमों या अन्य कारणों से देश छोड़ा है, वे वोट डाल सकते हैं, बशर्ते उनका एनआईडी ब्लॉक न हो।

उन्होंने कहा कि विदेश से वोट देने के लिए एनआईडी नंबर के साथ ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करना होगा। पासपोर्ट से यह काम नहीं होगा। अगर किसी का एनआईडी ब्लॉक है, तो वे रजिस्टर नहीं कर सकते और वोट नहीं डाल पाएंगे। केवल एनआईडी के साथ रजिस्टर करने वालों को ही यह मौका मिलेगा। जब उनसे पूछा गया कि क्या शेख हसीना वोट दे पाएंगी, तो उन्होंने कहा, वह वोट नहीं दे पाएंगी, क्योंकि उनका एनआईडी ब्लॉक कर दिया गया है। राष्ट्रीय पहचान पंजीकरण विंग ने अपने महानिदेशक, एएसएम हुमायूं कबीर के मौखिक निर्देश के बाद हसीना और उनके परिवार के नौ सदस्यों की एनआईडी को लॉक कर दिया था।

परिवार के सदस्यों में शेख रेहाना सिद्दीकी, सजीब वाजेद जॉय, साइमा वाजेद, शाहनाज सिद्दीकी, बुशरा सिद्दीकी, ट्यूलिप रिजवाना सिद्दीकी, अजमीरा सिद्दीकी, राडवान मुजीब सिद्दीकी और तारिक अहमद सिद्दीकी शामिल हैं। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, जुलाई की शुरुआत में चुनाव आयोग ने देश में पार्टी के दशकों पुराने राजनीतिक अस्तित्व को समाप्त करने के प्रयास में हसीना की अवामी लीग पार्टी के चुनाव चिन्ह को अपनी वेबसाइट से हटा दिया था।

12 मई को मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने एक राजपत्र अधिसूचना जारी कर अवामी लीग और उसके सहयोगी संगठनों की सभी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया था। यह प्रतिबंध आतंकवाद विरोधी अधिनियम के तहत तब तक लगाया गया है जब तक कि बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी) में पार्टी और उसके नेताओं के खिलाफ मुकदमा पूरा नहीं हो जाता।

विश्लेषकों का मानना ??है कि यह ताजा घटनाक्रम पूर्व प्रधानमंत्री हसीना और उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार द्वारा की जा रही राजनीतिक प्रतिशोध की कार्रवाई का विस्तार है, जिसमें अवामी लीग को राष्ट्रीय चुनावों में भाग लेने से दूर रखने की बड़ी योजना है।

ट्रंप से मेरा कोई रिश्ता नहीं, वह कोई सम्राट नहीं हैं: राष्ट्रपति लुई इनाशियो लुला डा सिल्वा

ब्रासीलिया , एजेंसी। ब्राजील के राष्ट्रपति लुई इनाशियो लुला डा सिल्वा ने अमेरिकी समकक्ष डोनाल्ड ट्रंप के प्रति खुलकर नाराजगी जाहिर की है। उन्होंने साफ कर दिया है कि ट्रंप के साथ उनका किसी भी तरह का रिस्ता नहीं है। उन्होंने अमेरिकी की तरफ से ब्राजील पर लगाए गए टैरिफ को भी राजनीतिक दुश्मनी करार दिया है। खास बात है कि भारत की तरह ही ट्रंप ने ब्राजील पर भी 50 फीसदी टैरिफ लगाया है।

बीबीसी से बातचीत में सिल्वा ने चेताया है कि टैरिफ के चलते अमेरिकी जनता को कॉफी और मांस जैसे ब्राजीली उत्पादों के लिए ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ेगा। उन्होंने पहले कहा था, राष्ट्रपति ट्रंप ब्राजील के साथ अपने रिश्तों में जो गलती कर रहे हैं, उसका भुगतान अमेरिका के लोग करेंगे।

नहीं हुई दोनों में बात : जब सवाल किया गया कि ट्रंप से संपर्क करने की कोशिश क्यों नहीं की गई, तो इसपर सिल्वा ने कहा, मैंने कभी कॉल की कोशिश नहीं की, क्योंकि उन्हें (ट्रंप को) को कभी बात ही नहीं करनी थी। खास बात है कि ट्रंप ने का था कि ब्राजील के राष्ट्रपति उन्हें कभी भी कॉल कर सकते हैं। अब सिल्वा ने बताया कि ट्रंप प्रशासन के लोग बात नहीं करना चाहते हैं।

किस बात से हैं खफा : बीबीसी से बातचीत में सिल्वा ने ट्रंप के काम करने के तरीके पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि टैरिफ के बारे में उन्हें ब्राजील के अखबारों से पता चला। उन्होंने कहा कि यह बातचीत करने का अच्छा तरीका नहीं है। उन्हें ट्रंप के सोशल मीडिया पर टैरिफ की जानकारी पोस्ट करने पर भी आपत्ति जताई। जब उनसे ट्रंप के साथ रिश्ते को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने कहा, कोई रिलेशन नहीं है। उन्होंने कहा, मेरे ट्रंप से संबंध नहीं हैं, क्योंकि जब ट्रंप पहली बार चुने गए थे, तब मैं राष्ट्रपति नहीं था। उनके संबंध बोलसोनारो से हैं, ब्राजील से नहीं। साथ ही उन्होंने कहा, ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति हो सकते हैं, लेकिन दुनिया के सम्राट नहीं हैं।

ब्राजील और भारत, दुनिया के सिर्फ दो ही मुल्क हैं जो अमेरिका की तरफ से भारी टैरिफ का सामना कर रहे हैं। ट्रंप ने भारत पर शुरुआत में 25 प्रतिशत टैरिफ का ऐलान किया था और बाद में 25 फीसदी अतिरिक्त शुल्क लगा दिया। इतना ही नहीं उन्होंने भारत पर रूसी तेल की खरीद को लेकर जुर्माना भी लगाया था।

अफगानिस्तान को आतंक मुक्त करने के लिए यूएन में बोला भारत- लश्कर और जैश संगठनों पर वैश्विक कार्रवाई जरूरी

वॉशिंगटन, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र में भारत ने पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठनों लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद पर बड़ा हमला बोला है। भारत ने साफ कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय यह सुनिश्चित करे कि ये संगठन और उनके मददगार अफगानिस्तान की जमीन का इस्तेमाल आतंकवाद फैलाने के लिए अब और न कर सकें। यह संदेश भारत के स्थायी प्रतिनिधि पी. हरीश ने सुरक्षा परिषद की अफगानिस्तान पर बैठक में दिया।

हरीश ने कहा कि भारत लगातार अफगानिस्तान की स्थिति पर नजर रख रहा है। अफगानिस्तान और भारत के बीच गहरा सभ्यतागत रिश्ता है और इसी कारण शांति और स्थिरता भारत के लिए बेहद अहम है। उन्होंने जोर देकर कहा कि आतंकियों के लिए किसी भी तरह की जगह छोड़ना दुनिया और खासकर इस क्षेत्र के लिए खतरनाक है।

भारत की कड़ी कार्रवाई की मांग : भारत ने संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक मंचों पर इस बात पर जोर दिया है कि आतंकवाद का मुकाबला करने में सभी देशों की साझा जिम्मेदारी है। हरीश ने कहा कि यूएनएससी द्वारा घोषित आतंकी संगठन, चाहे वह आईएसआईएस हो, अल-कायदा हो या फिर पाकिस्तान समर्थित लश्कर और जैश, इन पर सख्त कार्रवाई जरूरी है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर भारत का जोर : हरीश ने कहा कि भारत अफगानिस्तान के मुद्दे पर अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय सहमति का पक्षधर है। भारत ने दोहा और अन्य क्षेत्रीय बैठकों में भी सक्रिय भागीदारी की है ताकि शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर दो बार अफगान कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी से बात कर चुके हैं। भारत ने अफगानिस्तान की ओर से 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा का भी स्वागत किया।

आतंकवाद पर नई रणनीति की मांग : भारत का कहना है कि केवल दंडात्मक कदमों से समस्या हल नहीं होगी। हरीश ने कहा कि अफगानिस्तान के लिए नई और व्यावहारिक नीति की जरूरत है। सिर्फ प्रतिबंध या पुराने तरीकों से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। उन्होंने कहा कि जैसा चल रहा है वैसा ही चलता रहे वाली नीति से कोई फायदा नहीं होगा। जरूरत है कि सकारात्मक रवैये को प्रोत्साहित किया जाए और नकारात्मक गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाए।

मानवीय सहायता में भारत सबसे आगे : हरीश ने अफगानिस्तान में आए भूकंप का जिक्र करते हुए कहा कि भारत सबसे पहले राहत पहुंचाने वाले देशों में शामिल था। भारत ने 1,000 परिवारों के लिए टेंट और 15 टन खाद्य सामग्री भेजी। इसके अलावा 21 टन राहत सामग्री जिसमें दवाएं, हाइजीन किट, कंबल और जनरेटर शामिल थे, भी भेजे गए। आने वाले दिनों में और मदद भेजी जाएगी।

अफगान जनता की मदद में भारत का योगदान : अगस्त 2021 में तालिबान के काबुल पर कब्जे के बाद भारत लगातार मदद भेज रहा है। अब तक भारत ने 50,000 टन गेहूं, 330 टन से ज्यादा दवाएं और टीके, 40,000 लीटर कीटनाशक और कई अन्य आवश्यक सामग्री भेजी हैं। इसके अलावा भारत ने यूएनओडीसी के सहयोग से महिलाओं पर केंद्रित नशामुक्ति कार्यक्रमों के लिए भी मदद दी है।

विकास परियोजनाओं के जरिए भारत का भरोसा : भारत का कहना है कि अफगानिस्तान की विकास जरूरतें पूरा करना उसकी प्राथमिकता है। भारत ने वहां 500 से ज्यादा विकास परियोजनाएं पूरी की हैं। भारत का मानना है कि शांति और स्थिरता तभी संभव है जब वहां के लोग गरीबी, बीमारी और भुखमरी से बाहर निकलें।

भारत ने दोहराया कि अफगानिस्तान की मदद के लिए उसकी प्रतिबद्धता गैर-समझौतावादी है। भारत सभी संबंधित पक्षों के साथ जुड़कर अफगानिस्तान को एक शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध देश बनाने के लिए काम करता रहेगा।

जानकारी

बादाम बनाए हड्डियां मजबूत और करे सिर दर्द दूर

याददाश्त कमजोर है, तो बादाम इसका अचूक इलाज है। बादाम की 10 गिरी रात को पानी में भिगो कर सुबह छिलका उतार कर बारीक करके 20 ग्राम मक्खन, 10 ग्राम मिसरी मिलाकर एक महीने तक खाएं। दिमाग की कमजोरी दूर हो जाएगी और आपकी याददाश्त अच्छी हो जाएगी। सिर दर्द होता है, तो बादाम का तेल आपको राहत दिला सकता है। इसके लिए नाक में एक बूंद बादाम का तेल डालें, जिसे बादाम रोगन भी कहते हैं। दूसरा उपाय यह भी है कि आप एक कप पानी में पांच बूंद बादाम का तेल मिलाकर पी जाएं।

बादाम के कुछ दाने आपको कई बीमारियों से दूर रखने में तो खास भूमिका निभाते ही हैं, इसके साथ ही कई समस्याओं में दवा की तरह भी काम आते हैं।

बच्चे को अकसर कुछ-कुछ होता रहता है, तो उसे हृष्ट-पुष्ट व निरोगी बनाने के लिए रोजाना एक से दो बादाम पत्थर पर घिसकर चटाएं। इससे हृदय रोगियों के लिए तो बादाम काफी फायदेमंद साबित होता है। इसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड अधिक होता है। यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करता है व अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। इस वजह से हृदय की नलियों में कम रुकावट होती है और इसके प्रयोग से दिल का दौरा होने की आशंका कम हो जाती है। इसके लिए बादाम की 5-6 गिरी रात में पानी में रख दें और सुबह छिलका उतारकर उन्हें ठीक से चबा-चबा कर खाएं।

बादाम के तेल में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है, जो बच्चों की हड्डियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए इस तेल से अपने बच्चे की मालिश करें। अच्छा हो अगर एक चम्मच नारियल तेल में पांच बूंद बादाम का तेल मिलाकर इससे नियमित रूप से बच्चे की मालिश करें। जरूरत महसूस करें तो आयुर्वेद विशेषज्ञ से सलाह ले लें।

हार्ट अटैक या दिल की बीमारियों से पहले आपकी त्वचा पर कुछ संकेत दिखाई देते हैं। इन संकेतों को पहचानकर अगर आप सही समय पर इलाज शुरू कर दें, तो हार्ट अटैक से बच सकते हैं। जानें हार्ट अटैक के पूर्व संकेत या पहले दिखने वाले लक्षण।

क्या आपको पता है कि दुनिया भर में सबसे ज्यादा मौतों का कारण हार्ट अटैक है? आंकड़ों को देखें तो साल 2016 में हार्ट अटैक के कारण 17 करोड़ 65 लाख लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद के सालों में हार्ट अटैक के मामले और भी कई गुना बढ़ गए हैं। क्या आपने सोचा है कि इतनी संख्या में लोग दिल की बीमारियों से क्यों मरते हैं? इसके 2 कारण हैं-

पहला यह कि लोगों आजकल लोगों का खानपान इतना खराब हो गया है कि ज्यादातर लोग कम उम्र में (25-30 साल) हाई ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल बढ़ने और मोटापे जैसे रोगों के शिकार हो जाते हैं। ये सभी रोग हार्ट अटैक के खतरे को काफी बढ़ा देते हैं।

दूसरा कारण यह है कि लोगों को हार्ट अटैक के पूर्व संकेतों के बारे में पता नहीं है, इसलिए वे सही समय पर सावधानी नहीं बरत पाते हैं। आमतौर पर लोग यही मानते हैं कि हार्ट अटैक का संकेत सीने में तेज दर्द होता है। मगर आपको जानकर हैरानी होगी कि हार्ट अटैक आने से कुछ दिनों पहले ही शरीर में कुछ संकेत दिखाई देते हैं, जिन पर हम ध्यान नहीं देते हैं। ये संकेत दिल की सेहत की गड़बड़ी के हो सकते हैं और इसका इशारा यह भी हो सकता है कि जल्द ही आपका दिल काम करना बंद कर सकता है यानी आपको हार्ट अटैक आ सकता है। इन लक्षणों को आपको जान लेना चाहिए, ताकि आप हार्ट अटैक, हार्ट फेल्योर जैसे गंभीर और जानलेवा रोगों से बच सकें।

अचानक शरीर में छोटे-छोटे दाने उभरना

शरीर में अचानक छोटे-छोटे दाने चिकने लाल दाने उभरना इस बात का संकेत हो सकते हैं कि आपका दिल बीमार है। ये दाने शरीर में कोलेस्ट्रॉल के खतरनाक स्तर तक पहुंच जाने पर दिखाई देते हैं। इसलिए ये इस बात का भी संकेत हो सकते हैं कि व्यक्ति को हार्ट अटैक हो सकता है।

आंखों के बगल में पीली-सफेद पपड़ी या वैक्स जैसी त्वचा

दोनों आंखों के बगल में कई बार व्यक्ति को सफेद-पीले रंग की पपड़ी जैसी त्वचा दिखने लगती है। ये इस बात का संकेत है कि आपके शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ रहा है। कुछ लोगों में ये त्वचा जमे हुए मोम जैसी नजर आती है। आंखों के अलावा ऐसी पपड़ी आपकी हथेलियों और पैरों के पीछे भी दिखाई दे सकते हैं। अगर आप इस संकेत के बाद भी कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल नहीं करते हैं, तो आपको हार्ट अटैक का खतरा हो सकता है।

त्वचा पर नीले या बैंगनी निशान दिखना

अगर आपको शरीर के किसी हिस्से में त्वचा नीली या बैंगनी रंग की दिखे, तो सावधान हो जाएं, क्योंकि ये आपके अस्वस्थ दिल का संकेत है। ये लक्षण ज्यादातर पैरों और तलवों में नजर आते हैं। त्वचा पर नीले या बैंगनी निशान का मतलब है कि आपके शरीर में कहीं खून जम गया है या आपके उस अंग को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही है। धमनियों में खून जमा हो जाने के कारण धमनियां ब्लॉक हो जाती हैं, जो हार्ट अटैक का कारण बन सकता है।

उंगली के पोरों में सूजन और नाखून नीचे की तरफ उगना

अगर आपके उंगली के अगले हिस्से में सूजन आ जाए और नाखून नीचे की तरफ झुकने लगें, तो ये भी हार्ट अटैक का पूर्व संकेत हो सकता है। दरअसल नाखूनों में उंगली में ये लक्षण तब दिखाई देते हैं, जब व्यक्ति को हार्ट इंफेक्शन हो या दिल की कोई दूसरी बीमारी हो। कई बार फेफड़ों की समस्या में भी ऐसे लक्षण दिख सकते हैं। मगर ये सभी बीमारियां हार्ट अटैक का कारण बन सकती हैं।

नाखूनों के नीचे नीले या बैंगनी निशान

अगर आपको अचानक अपने नाखूनों के नीचे नीले या बैंगनी रंग के निशान दिखाई देने लगें, तो सावधान हो जाएं। नाखूनों में नजर आने वाले ऐसे निशान दिल की बीमारी का संकेत हो सकते हैं। हालांकि ऐसे निशान चोट के कारण भी दिख सकते हैं, मगर यदि आपको किसी ऐसी चोट के बारे में याद नहीं है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

हाथ-पैर की उंगलियों में छोटे उभार जिसमें दर्द हो

अगर आपको अपने हाथ-पैर की उंगलियों में पिछले कुछ दिनों से किसी छोटी सी गोली जैसी सूजन नजर आ रही है और इनमें दर्द हो रहा है, तो ये भी दिल की बीमारी का संकेत हो सकता है। आमतौर पर ऐसे उभार तभी आते हैं जब आपको हार्ट इंफेक्शन हो, जिसे इंफेक्टिव एंडोकार्डाइटिस भी कहते हैं। ये उभार कुछ घंटों या कुछ दिनों में अपने आप ठीक हो जाते हैं। मगर इनके दिखने पर आपको सावधान हो जाना चाहिए और तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

सुझाव

मशरूम का उपयोग करे याद्दाश्त ठीक

पौष्टिक तत्वों और अनोखे स्वाद की वजह से मशरूम का भोजन में खूब इस्तेमाल किया जाता है। इसमें एंटीऑक्सिडेंट, एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल तत्वों से भरपूर औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। मशरूम को सुपरफूड माना गया है, क्योंकि इससे न केवल पोषक तत्व मिलते हैं, बल्कि यह कई बीमारियों से हमारा बचाव भी करता है। एंटीऑक्सिडेंट, एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल तत्वों से भरपूर मशरूम के फायदों के बारे में जानना जरूरी है।

इम्यूनिटी बढ़ाए

मशरूम में मौजूद सेलेनियम, पेनिसिलिन जैसे एंटीबायोटिक तत्व शरीर में माइक्रोबियल विकास और फंगल संक्रमण को बाधित करने में सहायक हैं और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मददगार हैं।

कैंसर सेल्स को बढ़ने से रोके

मशरूम में मौजूद फोलेट्स कैंसर सेल्स बनने से रोकते हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर को फ्री रेडिकल से बचाते हैं, जो कैंसर का कारण बनते हैं। फोलेट्स डीएनए को बनाने और रिपेयर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मशरूम में पाया जाने वाला सेलेनियम तत्व लिवर को सुचारू रूप से काम करने में मदद करता है। यह शरीर को डीटॉक्सीफाई करने में मदद करता है, जिससे कई बीमारियों से बचाव होता है।

दिल को रखे दुरुस्त

मशरूम में मौजूद फाइबर, पोटैशियम, विटामिन सी और सेलेनियम जैसे एंटीऑक्सिडेंट तत्व हमारे दिल की सेहत को प्रोत्साहित करते हैं। एंटीऑक्सिडेंट्स दिल को फ्री रेडिकल से बचाते हैं। शरीर में बुरे कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) और अच्छे कोलेस्ट्रॉल (एचडीएल) के बीच संतुलन कायम रखने में भी मदद करते हैं।

ब्लड प्रेशर को करे नियमित

पोटैशियम और सोडियम से भरपूर मशरूम का नियमित सेवन ब्लड प्रेशर को नियमित करने में मदद करता है। यह शरीर में सामान्य तरल पदार्थों के बीच संतुलन कायम रखता है।

ऑस्टियोपोरोसिस में दे आराम

धूप में रखा फ्रेश मशरूम विटामिन डी का अच्छा स्रोत होता है। मशरूम में मौजूद विटामिन डी, कैल्शियम और फॉस्फोरस हड्डियों के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और जोड़ों के दर्द, हड्डियों में घनत्व कम होने या हड्डियों के टूटने की आशंका को कम करते हैं।

टाइप 2 डायबिटीज में फायदेमंद

फाइबर से भरपूर, लेकिन कम शर्करा वाले मशरूम का सेवन डायबिटीज रोगियों के लिए फायदेमंद है। लिवर, अग्नाशय और अंत:स्रावी ग्रंथियों के समुचित क्रियान्वयन में यह मदद करता है।

याददाश्त करे दुरुस्त

इसमें मौजूद कोलीन तत्व मस्तिष्क में रक्त और ऑक्सीजन के प्रवाह को बनाए रखता है। इससे याददाश्त और लर्निंग पावर में सुधार होता है। कोलीन मेमरी के सेल मेम्ब्रेन की संरचना को मेंटेन रखता है।

इन बातों का ध्यान में रखकर एक स्वस्थ व्यक्ति नियमित रूप से 100 ग्राम मशरूम का सेवन आसानी से कर सकता है। मशरूम खरीदते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे ताजे और सूखे हों। चिपचिपे या मुरझाए मशरूम बासी होते हैं। घर लाने के बाद इन्हें फ्रिज में एयरटाइट बॉक्स में रखें। जब इन्हें बनाना हो, तभी धोएं और काटें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। किसी नजदीकी शुभचिंतक सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-5-6-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। आत्मचिंतन कर। पुराने मित्र से मिलन होगा। पुरुषार्थ का सहारा लें। यात्रा का योग बनेगा। विद्यार्थियों को लाभ। शुभांक-5-7-8

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। स्वविवेक से कार्य कर। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। शुभांक-4-6-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-4-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सभा-गोष्ठियों में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आनन्ददायक दिन रहेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा। व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-6-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। उन्नति के योग हैं। शुभांक-4-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेगे व अभिलाषाएं पूर्ण होंगी। कार्य साधक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। जो चल रहा हैं उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-7-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। शुभांक-4-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर वाले मदद करेंगे। शुभांक-5-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दे शुभांक-2-4-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम। व्यवसायिक अभ्युदय होगा और प्रसन्नताएं बढ़ेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। धार्मिक यात्रा का योग हैं। शुभांक-5-6-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। किसी पुराने संकल्प को पुरा कर लेने का दिन हैं। 'आगे-आगे गौरख जागे' वाली कहावत चरितार्थ होगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-4-6-8

काकुरो पहेली - 2592

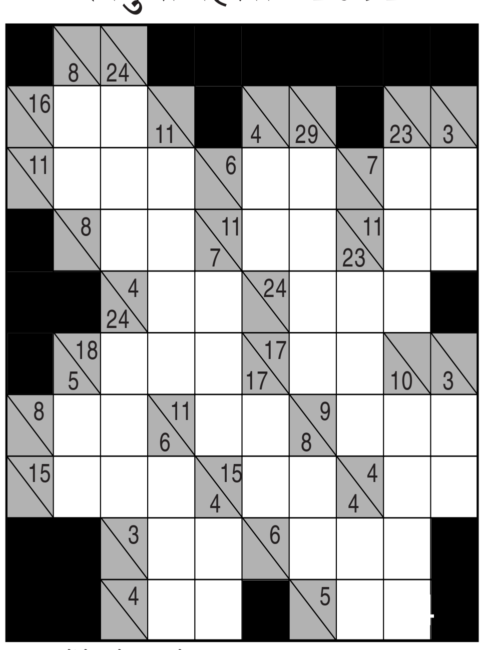

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

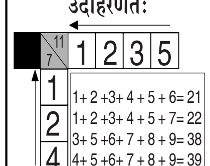

काकुरो - 2591 का हल

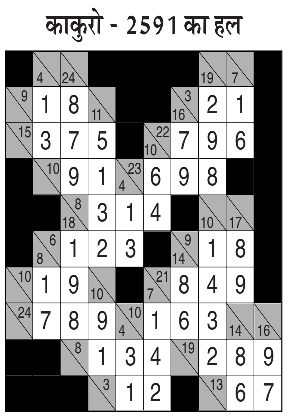

लॉफिंग ज़ोन

पुलिस अधिकारी ने अभियुक्त से पूछा, 'क्या तुम लिख-पढ़ सकते हो?'

अभियुक्त ने कहा, 'लिख सकता हूं, पढ़ नहीं सकता.'

'अच्छा, इस कागज पर अपना नाम लिखो.' पुलिस अधिकारी ने उसे आदेश दिया. अभियुक्त ने कुछ आड़ी-तिरछी रेखाएं खीच दी. इस पर पुलिस अधिकारी ने खीझकर कहा, 'यह क्या लिखा है?'

अभियुक्त - 'सर, मैने पहले ही कहा था कि मै लिख सकता हूं, लेकिन पढ़ नहीं सकता.'

☺ ☺ ☺

रेलवे स्टेशन पर प्रेमी अपनी प्रेमिका को शादी के लिए मना रहा था. जब प्रेमिका नहीं मानी तो उसने खीझकर कहा, 'ठीक है, अगर तुम मुझसे शादी नहीं करोगी तो मै आने वाली गाड़ी से कटकर मर जाऊंगा.'

प्रेमिका ने भी सिर झटकते हुए कहा, 'पहले मुझे सोचने का समय तो दो. गाड़ी का क्या है वह तो हर आधे घंटे में आती है.'

☺ ☺ ☺

एक भिखारी ने महिला से कहा, 'बहन जी! इस गरीब लाचार की मदद करो.'

महिला ने जवाब दिया, 'लेकिन तुम्हारे हाथ-पैर तो सब सलामत है फिर तुम लाचार कैसे हो गये?'

भिखारी ने जवाब दिया, 'अपनी आदत से.'

फिल्म वर्ग पहेली- 2592

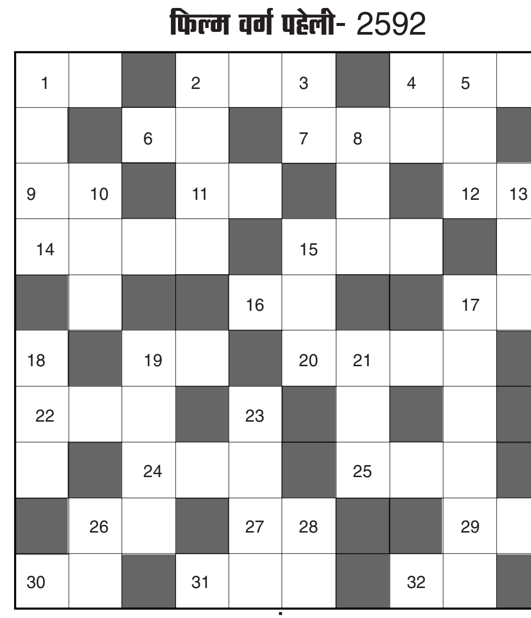

बायें से दायें:-

१. 'बरसो रे मेघा' गीत वाली फिल्म-२
२. राजेशखन्ना, धर्मेन्द्र, वहीदा की फिल्म-३
४. 'नींद कभी रहती थी आँखों में' गीत वाली फिल्म-३
६. राज सोलंकी, हिना रहमान, पायल की फिल्म-२
७. 'कहना है जो दिल से कहो' गीत वाली फिल्म-४
९. संजीवकुमार, नूतन की फिल्म-२
११. 'हम और तुम तुम और' गीत वाली फिल्म-२
१२. अभिषेक, भूमिका की फिल्म-२
१४. 'कुछ लोग यहाँ पर ऐसे है' गीत वाली फिल्म-४
१५. मकरंद देशपांडे, शबाना, श्वेता की फिल्म-३
१६. 'जब आती होगी याद मेरी' गीत वाली फिल्म-२
१७. संजय कपूर, माधुरी की फिल्म-२
१९. 'ओ रूपनगर के सौदागर' गीत वाली फिल्म-२
२०. अनिल धवन, रेहाना की फिल्म-२,२
२२. 'पर्दे में रहने दो पर्दा ना' गीत वाली फिल्म-३
२४. सुनील दत्त, साधना की फिल्म-३
२५. 'दिल जंगली कबूतर' गीत वाली फिल्म-३
२६. अभिषेक, उदय, एशा की फिल्म-२
२७. 'शरमाए काहे घबराये' गीत वाली फिल्म-२
२९. आमिर, माधुरी दीक्षित की फिल्म-२
३०. 'लगन लागी मन की लगन' गीत वाली फिल्म-२
३१. फिल्म 'मनोरंजन' में नायिका कौन थी-३
३२. शाहरूख, प्रियंका चोपड़ा की फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. ऋषि, अनिल, श्रीदेवी की फिल्म-४
२. 'नील गगन पे उड़ते बादल आ' गीत वाली फिल्म-४
३. फिल्म 'मि. बॉण्ड' में अक्षयकुमार के साथ नायिका कौन थी-२
४. जीतेंद्र, रीना राय, रामेश्वरी की 'धक धक से धड़कना' गीत वाली फिल्म-२
५. 'सपनों का शहर हो' गीत वाली अरशद वारसी, महिमा चौधरी की फिल्म-३
८. सुष्मिता की पहली फिल्म?-३
१०. 'चूड़े वाली छमिया मिला नैन रे' गीत वाली सनी, जयाप्रदा की फिल्म-३
१३. विनोद खन्ना, बिन्दू की 'दिल करने लगा है प्यार तुम्हे' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'जीना तेरी बाहों' गीत वाली सुनील शेट्टी, इंद्रकुमार, नम्रता की फिल्म-३
१७. प्रदीपकुमार, नर्गिस की 'दिल की गिरह खोल दो' गीत वाली फिल्म-२,२,२
१८. 'नजर के सामने जिगर' गीत वाली राहुल राय, अनु अग्रवाल की फिल्म-३
१९. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की 'ढपली वाले ढपली बजा' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'गोरी जो मटके बालों' गीत वाली सुनील, रवीना, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३
२३. राजेंद्र कुमार, राखी की 'तुम मेरी हो मेरे सिवा किसी' गीत वाली फिल्म-२,२
२६. 'हर एक घर में दिया' गीत वाली संजय सूरी, रेवती, गुल पनाग की फिल्म-२
२८. सनी, सलमान, करिश्मा, तब्बू की 'अभी साँस लेने की' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2591

सूडोकु -2592

2		8	5	1	9	6		7
					8			1
		7	4	6		8		9
3	2				7			8
1		9		4		7		5
4			2				9	3
6		3		5	1	9		
8			3					
7		1	9	2	6	3		4

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2591 का हल

7	1	9	8	5	3	2	6	4
4	5	3	6	2	9	7	1	8
6	2	8	4	7	1	9	5	3
9	8	2	7	3	5	1	4	6
1	3	6	9	4	8	5	7	2
5	7	4	1	6	2	8	3	9
8	4	7	5	9	6	3	2	1
3	6	1	2	8	7	4	9	5
2	9	5	3	1	4	6	8	7

शब्द पहेली - 2592

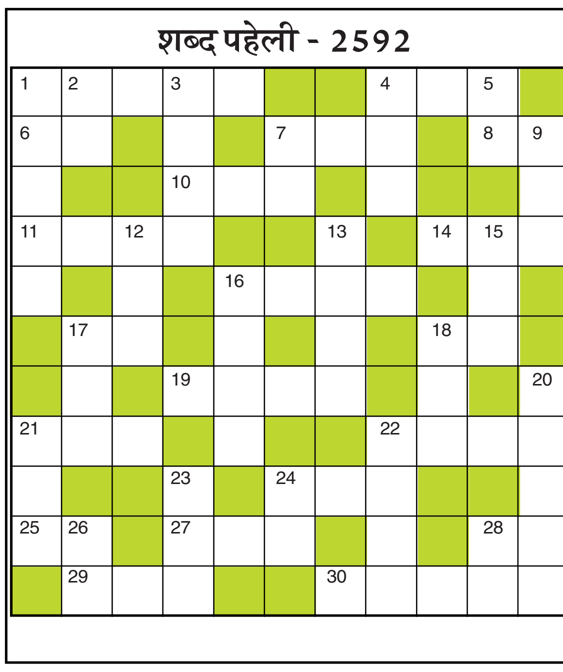

बाएँ से दाएँ

1. उड़ीसा का शहर जहां इस्पात फैक्ट्रियां हैं-5
4. कराह,टीस,लालसा-3
6. हानि,आपत्ति-2
7. दुश्मनी,बैर-3
8. इंसाफ-2
10. साठवीं जयंती-3
11. जलाऊ लकड़ी-4
14. छोटा भाई-3
16. निरंकुश,आवारा-4
17. ठाठ-बाट-2
18. आफत,मुसीबत-2
19. शैतानी,बदमाशी-4
21. सहायता-3
22. इच्छा,लालसा-4
24. कवि,गजलकार-3
25. जरा,थोड़ा-2
27. मुलायम,नाजुक-3
28. गुफा,खोह-2
29. प्रियतम,सनम-3
30. मन मोहने वाला-5

ऊपर से नीचे

1. सार्वजनिक मार्ग, आम रास्ता-5
2. उत्साह.शक्ति-2
3. बिना बाल वारा,गंजा-4
4. पंक्ति,लाइन-3
5. लड़की,पुत्री,बेटी-2
7. वहम,संदेह-2
9. जुड़वा-3
12. प्रतिज्ञा,कसम-3
13. गंगा का पानी-4
15. तीखा,तीक्ष्ण-3
16. आतुर,धैर्यहीन-4
17. संभवत:-3
18. मर्कट,कपि-3
20. गोविंदा,खुशबू की फिल्म-5
21. पानी रखने का चमड़े का पात्र-3
22. मनोकामना -4
23. साजन,प्रेमी-3
24. संध्या,सांझ-2
26. आनंद-2
28. महीना,मास-2

शब्द पहेली -2591 का हल

रांची में संदिग्ध आतंकी अशरफ दानिश केस में दिल्ली स्पेशल सेल ने सीन रिक्रिएट किया

एजेंसी

रांची। रांची से गिरफ्तार संदिग्ध आतंकी अशरफ दानिश से जुड़े मामले में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने जांच तेज कर दी। टीम ने दानिश को साथ लेकर रांची और बोकारो जिले के पेटरवार में सीन रिक्रिएट किया। दानिश ने पेटरवार के एक बीज भंडार से विस्फोटक बनाने के लिए सामग्री खरीदी थी। स्पेशल सेल ने केस को मजबूत बनाने के लिए दानिश को रांची के तबराक लॉज और पेटरवार की दुकान ले जाकर घटनाओं का पुनरावलोकन करवाया।पुलिस ने बीज दुकानदार से पूछताछ की और विस्फोटक तैयार करने की जगह की जांच की। दानिश के कपड़े तबराक लॉज से जब्त कर लिए गए। लॉज संचालक तबरक ने बताया कि टीम ने केवल दानिश के कपड़े ही लिए और इस दौरान दानिश भी उनके साथ था।दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के एडिशनल कमिश्नर प्रमोद सिंह कुशवाहा के अनुसार, दानिश सेंट्रल लीडर था, उसका पद और आईडी गजवा लीडर का था, जबकि उसका कोड नेम सीईओ था। दानिश भारत में खिलाफत घोषित करने और गंभीर आतंकी साजिश रचने की साजिश रच रहा था। उल्लेखनीय है कि दानिश को 10 सितंबर को दिल्ली स्पेशल सेल, झारखंड एटीएस और रांची पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में तबराक लॉज से गिरफ्तार किया गया था। उस से 12 दिनों तक दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल को पूछताछ की अनुमति मिली है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक मधुभाई कुलकर्णी का निधन

छत्रपति संभाजीनगर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक मधुभाई कुलकर्णी का महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे और उम्रजनित समस्याओं के कारण कुछ समय से अस्पताल में भर्ती थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को राजनीति में लाने में कुलकर्णी की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।संघ के प्रचार विभाग के मुताबिक कुलकर्णी का जन्म 17 मई 1938 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा चिकोडी में हुई। बाल्यकाल से ही उनका संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से रहा। वे संघ की शाखाओं में नियमित रूप से भाग लेते थे। उन्होंने 1954 में कोल्हापुर से 10वीं कक्षा पास की और फिर मुंबई में कॉलेज की पढ़ाई के लिए गए। बीए और बीएड की डिग्री हासिल करने के बाद कुछ समय तक उन्होंने सेल्स टैक्स विभाग में काम किया, लेकिन फिर संघ कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने का निर्णय लिया। वर्ष 1962 में संघ के प्रचारक के रूप उनको जलगांव भेजा गया। इसके बाद उन्होंने छत्रपति संभाजीनगर में जिला प्रचारक, सोलापुर में विभाग प्रचारक और पुणे में महानगर प्रचारक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 1984 से 1996 तक वे गुजरात प्रांत के प्रचारक रहे, जहां उन्होंने संघ कार्य के विस्तार में अहम भूमिका निभाई।

महाराष्ट्र के बुलढाणा में ट्रक और कार के बीच टक्कर में 4 की मौत

मुंबई। महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के मलकापुर के पास नेशनल हाइवे पर तड़के एक कार और एक ट्रक के बीच हुई जोरदार टक्कर में तीन महिलाओं सहित चार लोगों की मौत हो गई और 5 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी को जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करवाया गया है। इस घटना की छानबीन मलकापुर पुलिस स्टेशन की टीम कर रही है। इस घटना की जांच कर रहे पुलिस अधिकारी ने बताया कि आज तड़के भुसावल से मलकापुर की ओर जा रही कार अचानक अनियंत्रित होकर सामने जा रहे ट्रक से टकरा गई। इस घटना में कार चालक साजिद अजीज बागवान और 3 महिलाओं समेत कुल चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। तीनों मृतक महिलाओं की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। जबकि 5 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। गंभीर रूप से घायलों में संतोष तेजराव महाले (40), पंकज दिलीप गोपाल (22), दीपिका विश्वास (30) और टीना अजय पाटिल (45) के रुप में की गई है। एक घायल महिला की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। इसकी सूचना मिलते ही एमआईडीसी के पुलिस निरीक्षक हेमराज कोली और उनकी टीम घटनास्थल पर पहुँची। मलकापुर एमआईडीसी पुलिस ने मौका मुआयना किया और मामला दर्ज कर घटना की छानबीन शुरू कर दी है।

अगर राहुल गांधी का वोट काटने का आरोप झूठा है तो चुनाव आयोग साबित करे : कमल हासन

चेन्नई । लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मतदाता सूची में कथित फर्जीवाड़े को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में नया दावा किया। उन्होंने कर्नाटक के आलंद निर्वाचन क्षेत्र का उदाहरण देते हुए आरोप लगाया कि इस क्षेत्र में 6,018 मतदाताओं के वोट डिलीट किए गए। इस पर एमएनएम पार्टी के संस्थापक और अध्यक्ष कमल हासन ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। कमल हासन ने कहा है कि अगर राहुल गांधी के आरोप झूठे हैं तो इसे साबित किया जाना चाहिए। उन्होंने चेन्नई की टीएन राजरत्नम आर्ट गैलरी में आगामी विधानसभा चुनावों पर चर्चा के लिए क्षेत्रीय नेताओं के साथ बैठक की। मीटिंग के दौरान कमल हासन ने पार्टी की बूथ समिति की तैयारियों की समीक्षा की और चुनाव के लिए रणनीति बनाई। मीडिया को संबोधित करते हुए कमल हासन ने एमएनएम पार्टी की बूथ समिति के काम के महत्व पर जोर दिया और चुनाव प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर लगाए गए नए आरोपों पर भी टिप्पणी की।

मप्र में विज्ञान और नवाचार का संगम 26 से सितंबर से, इसरो के निदेशक आएंगे भोपाल

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में इस माह राष्ट्रीय महत्व का विज्ञान मेला बरकतउल्ला विश्वविद्यालय परिसर में 26 से 29 सितंबर 2025 तक होने जा रहा है। यह 12वां भोपाल विज्ञान मेला है। इस बार इसकी थीम विकसित भारत 2047 का आधार विज्ञान एवं नवाचार है। विज्ञान भारती (भारतीय स्वदेशी विज्ञान आंदोलन), मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) और बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के सामूहिक तत्वावधान में आयोजित इस मेले में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के निदेशक समेत देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक शामिल होंगे। इस संबंध में गुरुवार विज्ञान भारती मध्यभारत प्रांत अध्यक्ष अमोघ गुप्ता

ने बताया कि यह मेला केवल राजधानी या प्रदेश तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे राष्ट्र को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में नई ऊर्जा देने वाला मंच बनेगा। यही कारण है कि इसे राष्ट्रीय महत्व का आयोजन माना जा रहा है। उन?होंने बताया कि सन 2012 से भोपाल विज्ञान मेले का लगातार आयोजन हो रहा है और इसने पिछले वर्षों में प्रदेश और देश को अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां दी हैं। पहले हुए आयोजनों से छात्रों, शोधकर्ताओं और तकनीकि विशेषज्ञों को प्रत्यक्ष रूप से विज्ञान और तकनीकी नवाचारों का अनुभव मिला। अमोघ ने बताया कि वर्ष 2015 और 2017 के मेलों में ऊर्जा संरक्षण, जल प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण पर आधारित प्रदर्शनी ने प्रदेश के कई शैक्षणिक संस्थानों को प्रेरित किया, जिससे विद्यालय और महाविद्यालयों में विज्ञान क्लब स्थापित हुए। यही नहीं, ग्रामीण कारीगरों के नवाचारों को बड़े उद्योगों ने अपनाया और उन्हें व्यावसायिक स्तर पर आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

औरैया में बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

एजेंसी

औरैया। उत्तर प्रदेश के जनपद औरैया में सहार थाना पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया है। आरोपित लम्बे समय से कबाड़ की दुकान पर चप्पल इकट्ठा करने का काम कर रहा था। जानकारी के अनुसार पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि कबाड़ की दुकान पर काम करने वाला एक युवक स्थानीय भाषा बोलने में असमर्थ है। संदेहास्पद मामला होने पर सहार थाना प्रभारी ने टीम के साथ मौके पर पहुंचकर युवक से पूछताछ की। पूछताछ में उसने अपना नाम इस्लाम पुत्र शौरियातुल्ला निवासी ग्राम दामोदर, तहसील

फुलथला, जनपद खुलना, बांग्लादेश बताया। पुलिस के अनुसार युवक के पास भारत में निवास करने से सम्बंधित कोई वैध दस्तावेज नहीं मिले। जिसके बाद उसे हिरासत में लेकर थाने लाया गया। सहार पुलिस ने इस्लाम के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर चालान कर जेल भेज दिया गया। स्थानीय पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस मामले की सूचना सम्बंधित खुफिया एजेंसियों को भी दी गई है, ताकि आरोपी के नेटवर्क और भारत आने के कारणों की जांच की जा सके। इस गिरफ्तारी के बाद क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस और सतर्क हो गई है।

राहुल की ओर से मांगी जानकारी पहले ही पुलिस को दी जा चुकी: कर्नाटक के सीईओ

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर लगाए गए आरोपों का जवाब देने के बाद कर्नाटक के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने आगे स्पष्ट किया है कि नेता विपक्ष की ओर से प्रेस कांफ्रेस में मांगी गई सारी जानकारी पहले ही मुहैया करायी जा चुकी है। सीईओ कार्यालय ने कहा कि चुनाव आयोग के निर्देश पर कलबुर्गी के पुलिस अधीक्षक को 6 सितंबर 2023 को जांच से संबंधित सभी जानकारी मुहैया कराई गई थी। साझा की गई जानकारी में आपत्तिकर्ता का विवरण शामिल है। इसमें फॉर्म संदर्भ संख्या, आपत्तिकर्ता का नाम, उसका ईपीआईसी नंबर और लॉग-इन के लिए इस्तेमाल किया गया मोबाइल नंबर और प्रोसेसिंग के लिए आपत्तिकर्ता द्वारा प्रदान किया गया मोबाइल नंबर, सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन माध्यम, आईपी पता, आवेदक का स्थान, फॉर्म जमा करने की तिथि और समय और उपयोगकर्ता निर्माण तिथि शामिल है। सीईओ कार्यालय का यह भी कहना है कि जरूरी जानकारी मुहैया कराने के बाद समीक्षा बैठक भी हुई। इसमें सीईओ कर्नाटक, जांच अधिकारी तथा साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ शामिल रहे। सीईओ कर्नाटक ने जांच से जुड़ी मांगी गई अतिरिक्त जानकारी और दस्तावेज तक मुहैया करा दिए हैं। कार्यालय का कहना है कि दिसंबर 2022 में फार्म 7 के ऑनलाइन माध्यम से 6,018 आवेदन सम्मिट किए गए थे। इनकी सत्यता पर संदेह करते हुए हर आवेदन की जांच की गई। इनमें से केवल 24 आवेदन ही सही साबित हुई और 5994 गलत साबित हुई। इसके बाद

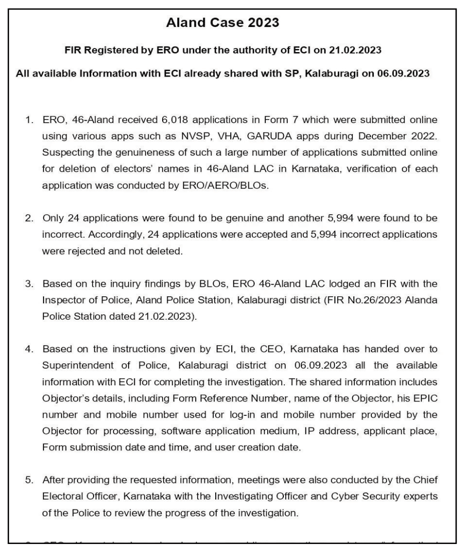

Aland Case 2023

FIR Registered by ERO under the authority of ECI on 21.02.2023

All available Information with ECI already shared with SP, Kalaburagi on 06.09.2023

1. ERO, 46-Aland received 6,018 applications in Form 7 which were submitted online using various apps such as NVSP, VHA, GARUDA apps during December 2022. Suspecting the genuineness of such a large number of applications submitted online for deletion of electors' names in 46-Aland LAC in Karnataka, verification of each application was conducted by ERO/AERO/BLOs.
2. Only 24 applications were found to be genuine and another 5,994 were found to be incorrect. Accordingly, 24 applications were accepted and 5,994 incorrect applications were rejected and not deleted.
3. Based on the inquiry findings by BLOs, ERO 46-Aland LAC lodged an FIR with the Inspector of Police, Aland Police Station, Kalaburagi district (FIR No.26/2023 Alanda Police Station dated 21.02.2023).
4. Based on the instructions given by ECI, the CEO, Karnataka has handed over to Superintendent of Police, Kalaburagi district on 06.09.2023 all the available information with ECI for completing the investigation. The shared information includes Objector's details, including Form Reference Number, name of the Objector, his EPIC number and mobile number used for log-in and mobile number provided by the Objector for processing, software application medium, IP address, applicant place, Form submission date and time, and user creation date.
5. After providing the requested information, meetings were also conducted by the Chief Electoral Officer, Karnataka with the Investigating Officer and Cyber Security experts of the Police to review the progress of the investigation.

इस पर आधारित एक जांच कराई गई और मतदाता पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) ने आलंद पुलिस थाने में 21 फरवरी 2023 को एफआईआर दर्ज कराई थी।

विदेशी गैंगस्टर हैप्पी जट्ट के नशा तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़, 25.9 किलोग्राम हेरोइन बरामद

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस की एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) बॉर्डर रेंज ने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के साथ संयुक्त अभियान में सीमा पार से संचालित नशा तस्करी मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। विदेशी तस्कर हरप्रीत सिंह उर्फ हैप्पी जट्ट के गुर्गे को गिरफ्तार करके उसके पास से 25.9 किलो (25 पैकेट) हेरोइन बरामद की है। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने गुरुवार को बताया कि पकड़ा गया अमृतसर के गांव बहिड़वाल निवासी साजन सिंह उर्फ बिल्ला अमृतसर के एक निजी सैलून में हेयर ड्रेसर के तौर पर काम करता था। हेरोइन की बड़ी खेप बरामद करने के अलावा पुलिस टीमों ने उसके कब्जे से एक आधुनिक 9 एम.एम. ग्लॉक पिस्तौल भी बरामद की है। डीजीपी ने कहा कि अमृतसर के जंडियाला गुरु का रहने वाला तस्कर हरप्रीत सिंह उर्फ हैप्पी जट्ट विदेश से इस मॉड्यूल को चला रहा था और पाकिस्तानी तस्करों के संपर्क में था, जो सीमा पार से हेरोइन की खेप गिराने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल करते थे। डीजीपी ने बताया कि हैप्पी जट्ट भगोड़ा अपराधी है और राज्य में उसके खिलाफ कम से कम 21 आपराधिक मामले दर्ज हैं तथा पंजाब पुलिस की नज़दीक उस समय गिरफ्तार किया, जब वह हेरोइन की खेप पहुंचाने जा रहा था। यह खेप एक दिन पहले ही पाकिस्तान से गांव डालेके में एक भारी ड्रोन के ज़रिए गिराई गई थी। साजन सिंह विभिन्न सोशल मीडिया

टीमें उसके प्रत्यर्पण के लिए सक्रिय हैं। उन्होंने कहा कि पूरे गठजोड़ का पर्दाफाश करने के लिए जांच की जा रही है। ऑपरेशन संबंधी विवरण साझा करते हुए एएनटीएफ बॉर्डर रेंज के एसपी गुरप्रीत सिंह ने कहा कि पुख्ता खुफिया सूचना पर कार्रवाई करते हुए साजन सिंह को गांव बहिड़वाल के एप्लीकेशनों के माध्यम से हैप्पी जट्ट के संपर्क में था और पिछले दो महीनों से सीमा पार से ड्रोन के ज़रिए गिराई जा रही हेरोइन की खेपें प्राप्त कर रहा था। एसपी ने कहा कि इस मॉड्यूल के दो और सदस्यों की पहचान कर ली गई है और पुलिस टीमें उन्हें पकड़ने के लिए तलाश कर रही हैं।

प्रधानमंत्री मोदी अहमदाबाद के लोथल में नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स प्रोजेक्ट की करेंगे समीक्षा और निरीक्षण

एजेंसी

गांधीनगर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 20 सितंबर को गुजरात के दौरे पर आ रहे हैं। वे अपने इस दौरे के दौरान अहमदाबाद जिले के लोथल में निर्माणाधीन नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा करने के साथ ही अब तक हुए कार्यों का निरीक्षण भी करेंगे। प्रधानमंत्री समीक्षा बैठक में अधिकारियों के साथ समग्र प्रोजेक्ट को लेकर चर्चा करेंगे और लोथल में चल रहे विभिन्न कार्यों की प्रगति की विस्तृत जानकारी भी हासिल करेंगे। राज्य सूचना विभाग ने इसकी पुष्टि की है। राज्य सूचना विभाग ने अपने बयान में बताया कि गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित लोथल, सिंधु घाटी सभ्यता का मुख्य व्यापारिक केंद्र होने के साथ-साथ भारत की समुद्री (मैरीटाइम) शक्ति और समृद्धि का प्रतीक भी था। ऐतिहासिक सिंधु घाटी

सभ्यता के इतिहास के गवाह लोथल में भारत की भव्य समुद्री विरासत को प्रदर्शित करने वाला नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स आकार ले रहा है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री के दिए गए 'पंच प्राण' में से एक प्राचीन विरासतों पर गर्व कर उनका संरक्षण करना है, जो नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स के निर्माण के जरिए साकार होने जा रहा है।विभाग ने बताया कि नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स में इतिहास, शिक्षा, अनुसंधान और मनोरंजन का एक सुंदर समन्वय होगा। लगभग 5 हजार वर्ष पहले लोथल न केवल एक बंदरगाह था बल्कि यहां समुद्री जहाजों की मरम्मत का काम भी होता था। उस इतिहास को यहां फिर से जीवंत किया जाएगा। आधुनिक टेक्नोलॉजी की मदद से भव्य और प्राचीन समुद्री विरासत की अनुभूति कराई जाएगी। यह हेरिटेज कॉम्प्लेक्स लोगों के लिए एक पर्यटन स्थल के अलावा अध्ययन का एक केंद्र भी बनेगा। नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स एक नए अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा और इसे दुनिया के अन्य प्रतिष्ठित म्यूजियमों के समकक्ष बनाए रखा जाएगा। यह प्रोजेक्ट पूरे भाल क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास में भी सहायक सिद्ध होगा। इसके परिणामस्वरूप यहां हजारों लोगों के लिए रोजगार के अनेक नए अवसर सृजित होंगे।

वोट काटने के मामले में सीआईडी को जानकारी नहीं दे रहा चुनाव आयोग : मुख्यमंत्री

एजेंसी

बेंगलुरु। कर्नाटक के कलबुर्गी ज़िले के अलंद निर्वाचन क्षेत्र के संबंध में फ़रवरी 2022 से फ़रवरी 2023 तक फ़ॉर्म 7 के तहत मतदाताओं के नाम हटाने के लिए चुनाव आयोग को कुल 6,018 आवेदन प्रस्तुत हुए थे। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा कि जांच से पता चला है कि केवल 24 आवेदन ही असली थे और शेष 5,994 आवेदन फ़र्ज़ी थे। उन्होंने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी साझा करते हुए बताया कि मतदाता जानकारी चुराई गई है, फर्जी लॉगिन और राज्य से बाहर के मोबाइल नंबरों के ज़रिए बेनामी आवेदन जमा किए गए हैं। परिवार की जानकारी के बिना पूरे परिवार का नाम मतदाता सूची से हटाने के लिए आवेदन जमा किया गया था। उन्होंने बताया कि इस संबंध में शिकायत दर्ज कर ली गई है और सीआईडी जांच कर रही है। राज्य सीआईडी पिछले 18 महीनों से लगातार चुनाव आयोग से तकनीकी जानकारी जैसे आईपी एड्रेस, इस्तेमाल किए गए उपकरण और ओटीपी प्राप्त करने वालों का विवरण मांग रही है ताकि पता लगाया जा सके कि इस मामले में कौन शामिल था और ये सभी कृत्य कहां से किए गए थे। लेकिन चुनाव आयोग यह जानकारी देने से इनकार कर रहा है। आज, उचित जानकारी प्रदान करके इन मांगों का जवाब देने के बजाय, चुनाव आयोग ने इन सभी आरोपों को निराधार और असत्य बताकर खारिज कर दिया है और कहा है कि एक विशिष्ट प्रक्रिया से गुजरे बिना मतदाता सूची से नाम हटाना असंभव है। सिद्धारमैया ने कहा कि एकमात्र सवाल यह है कि सीआईडी के 18 लगातार अनुरोधों के बावजूद चुनाव आयोग ने डिजिटल साक्ष्य क्यों नहीं दिए हैं।

पीएम मोदी 25 सितंबर को माही-बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा संयत्र का करेंगे शिलान्यास

एजेंसी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 सितम्बर को बांसवाड़ा से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर केन्द्र व राज्य सरकार की लगभग 1 लाख 21 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की सौगात देने जा रहे हैं। इस दौरान प्रधानमंत्री माही-बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा संयत्र का शिलान्यास करेंगे, जो कि प्रदेश को ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने में ऐतिहासिक कदम साबित होगा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में श्री मोदी राजस्थान सहित कई राज्यों की स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएं भी देशवासियों को समर्पित करेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रस्तावित बांसवाड़ा दौरे (25 सितंबर) की तैयारियों को लेकर शर्मा मुख्यमंत्री कार्यालय में उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को आपस में समन्वय स्थापित करते हुए संबंधित सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग अपनी तय जिम्मेदारियों के अनुसार काम कर कार्यक्रम का सफल आयोजन सुनिश्चित करें।

प्रधानमंत्री का पीएम कुसुम योजना के लाभार्थियों से होगा संवाद :मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री मोदी बीकानेर-दिल्ली केन्ट वन्दे भारत एक्सप्रेस, जोधपुर-दिल्ली केन्ट वन्दे भारत एक्सप्रेस एवं उदयपुर सिटी-चण्डीगढ़ एक्सप्रेस का हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ करेंगे। इस कड़ी में बीकानेर, जोधपुर एवं उदयपुर रेलवे स्टेशन पर रेलवे के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यक्रमों की तैयारियां पूर्ण की जाए। उन्होंने पीएम कुसुम योजना के लाभार्थियों एवं प्रधानमंत्री के मध्य संवाद कार्यक्रम के लिए भी ऊर्जा विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। बैठक में शर्मा ने कहा कि आयोजन स्थल पर आमजन के लिए बैठक, पेयजल, आवागमन सहित अन्य सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं, जिससे किसी भी तरह की असुविधा ना हो। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा के तहत सुरक्षा व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गृह और परिवहन विभाग यातायात प्रबंधन एवं पार्किंग की समुचित व्यवस्थाएं करें। इसके लिए विशेष तौर पर अधिकारी भी नियोजित किए जाएं।

जिला मुख्यालय से लेकर ग्राम पंचायत तक मुख्य कार्यक्रम से जुड़ें

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मुख्य कार्यक्रम के लाइव प्रसारण के माध्यम से सभी जिला मुख्यालयों, नगर निकायों एवं ग्राम पंचायतों को जोड़ा जाए। उन्होंने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, पर्यटन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग एवं संचार विभाग, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग को भी आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। इस दौरान मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे तथा संभागीय आयुक्त उदयपुर एवं जिला कलक्टर बांसवाड़ा वी.सी. के माध्यम से जुड़े।

शिविरों में हुए लोगों के काम, चेहरे पर आई खुशी

टोंक। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के पहल पर आयोजित किये जा रहे ग्रामीण एवं शहरी सेवा शिविर में आमजन की समस्याओं का मौके पर ही निस्तरण हो रहा है। इसके साथ ही कैम्पों के जरिये पात्र लोगों को सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलवाया जा रहा है ग्रामीण सेवा शिविर में ग्राम लाम्बा में आयोजित कैम्प के दौरान प्रार्थी दुर्गाशंकर ने बताया कि जमाबन्दी में दुर्गाशंकर के बजाय त्रुटिवश दुर्गालाल हो गया था। परिवादी ने अपने सभी दस्तावेज अनुसार प्रार्थना पत्र दिया। शिविर प्रभारी तहसीलदार द्वारा पटवारी से रिपोर्ट लेकर अशुद्ध नाम दुर्गालाल को शुद्ध नाम दुर्गाशंकर में बदल कर दुरुस्त किया। इस प्रकार दुर्गाशंकर को मौके पर ही नाम शुद्ध किया जाकर राहत प्रदान की गई। ग्राम श्रीरामपुरा में आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर कैम्प में प्रार्थी हजारी लाल गुर्जर द्वारा आवेदन किया कि जमाबन्दी में जाति गुर्जर की जगह कुम्हार जो की गलत है दर्ज हो रही है।

हर प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी एक-एक जनप्रतिनिधि लेकर सुनिश्चित करें गुणवत्तापूर्ण कार्यः ज्योतिरादित्य सिंधिया

एजेंसी

भोपाल। केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री तथा गुना सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने वर्चुअल माध्यम से मध्य प्रदेश के गुना शहर के विकास और सौंदर्यीकरण को लेकर अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों की बैठक लेकर विस्तृत बैठक की। इसमें शहर के विकास से जुड़े विभिन्न प्रोजेक्ट पर चर्चा हुई और स्पष्ट निर्देश दिए गए। उन?होंने कहा कि सभी प्रस्तावित कार्यों के फाइनल डिज़ाइन, लागत और समय सीमा तय कर, इन्हें निर्धारित अवधि में पूरा किया जाए। हर प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी एक-एक जनप्रतिनिधि लें, ताकि सभी प्रोजेक्ट गुणवत्तापूर्ण तरीके से समय सीमा के अंदर पूरे हो सके। सौंदर्यीकरण और थीम रोडबैठक में केन्द्रीय मंत्री सिंधिया ने मॉड्यूल एक में आर्किटेक्ट द्वारा पीपीटी के माध्यम से शहर के प्रवेश द्वारों, माधव वाटिका, सेल्फी प्वाइंट्स और थीम रोड की डिजाइन बताई। उन?होंने निर्देश दिए कि प्रवेश द्वारों का डिजाइन प्रतीकात्मक हो, जिसे देखते ही उसका महत्व समझ में आए। माधववाटिका का स्वरूप ऐतिहासिक

और सांस्कृतिक धरोहर दर्शाने वाला हो। सेल्फी प्वाइंट्स पत्थर या ब्रॉन्ज से बनाए जाएं। उन्होंने थीम रोड पर परंपरागत डिजाइन अपनाने, कम मेंटेनेंस वाले पेड़ो, हर 200 मीटर पर पार्किंग स्पेस, अतिक्रमणों को हटाने एवं ऑक्सीजन पार्क के विकास पर विस्तृत चर्चा की गई।

हेरीटेज रोड व मंदिर विकास

सिंधिया ने गायत्री मंदिर से परशुराम चौराहे तक बनने वाली हेरिटेज रोड एवं टेकरी सरकार मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण में ग्वालियर, शिवपुरी और चंदेरी स्टोन का उपयोग करने और नई बेंच लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सौंदर्यीकरण कार्य से गुना शहर की खूबसूरती नई ऊंचाइयों को स्पर्श करेगी एवं पर्यटन के साथ क्षेत्र में स्थानीय रोजगार में भी बढ़ावा होगा। ट्रैफिक व्यवस्था सुधार पर चर्चामॉड्यूल 3 में एसपी अंकित सोनी ने शहर के ट्रैफिक प्वाइंट्स का उल्लेख किया। शहर में अनावश्यक खड़ी होने वाली टैक्सियां, दुकानों का एक्सटेंशन और सड़कों पर खड़े वाहन ट्रैफिक जाम का कारण बताए। उन्होंनेट्रैफिक मित्र अभियान चलाने की जानकारी भी दी। जिसमें नागरिक वालंटियर्स के रूप में पुलिस के साथ जुड़कर व्यवस्था सुधार में सहयोग देंगे। नगर वन की परिकल्पनामॉड्यूल 4 में डीएफओ अक्षय राठौर ने नगर वन की अवधारणा प्रस्तुत की। इसमें तालाब, ओपन जिम, नक्षत्र वन, राशि वन और फूल वन शामिल होंगे। लोग अपने परिजनों की स्मृति में वृक्ष भी लगा सकेंगे। इस पर केंद्रीय मंत्री ने कहा यह एक अच्छी पहल है और इसमें नक्षत्र चिह्न पत्थर से बनाए जाएं। गुनिया नदी और खेल महोत्सवमॉड्यूल 5 में कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल ने गुनिया नदी के विकास कार्य की जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ में नक्सली सोनू उर्फ भूपति ने जारी किया पर्चा, कहा-'हथियार उठाना भूल थी'

एजेंसी

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ और देश के अन्य राज्यों में नक्सली संगठन के बड़े कैडरों के मारे जाने और आत्मसमर्पण के बाद से नक्सलियों में भय और सुरक्षा बलों का खौफ बढ़ गया है। नक्सल संगठन के पदाधिकारियों के नाम से जारी हो रहे इन पर्चों से तो कम से कम यही संकेत मिल रहा है। इन पर्चों में दावा किया जा रहा है कि नक्सलियों में सुरक्षा बलों की जहां दहशत है वहीं वे अपने संगठन की खामियों और गलतियों को भी खुले मन से स्वीकार कर रहे हैं। इस बाबत बस्तर संभाग के आईजी ने कहा कि पुलिस प्रशासन जारी हुए पर्चों की जांच कर रहा है। दो दिन पहले केंद्रीय प्रवक्ता अभय के नाम पर पर्चा जारी होने का दावा हुआ था। इसमें हथियार छोड़कर शांति वार्ता की पेशकश की थी। अब सोनू के नाम पर एक और पर्चा सामने आया है, जिसमें उन्होंने स्वीकार किया गया है कि आंदोलन ने कई गंभीर गलतियां कीं। हथियार उठाना हमारी सबसे बड़ी भूल थी, इसलिए हम जनता से खुले तौर पर माफी मांगते है। दोनों पर्चे एक ही व्यक्ति मल्लोजुला वेणुगोपाल राव उर्फ अभय उर्फ भूपति उर्फ सोनू ने लिखे हैं। एक पर्चा संगठन के आधिकारिक लेटरहेड पर जारी किया गया है जबकि दूसरा पर्चा व्यक्तिगत रूप से सोनू के नाम पर जारी किया है। नक्सली संगठन के शीर्ष नक्सली कैडरों के द्वारा लगातार एक के बाद एक पत्र जारी करना नक्सली संगठन में व्याप्त दहशत को उजागर करता है। इसके साथ ही नक्सली संगठन की कमान कौन संभाल रहा है, यह अब तक स्पष्ट नही होने से पूरा नक्सली संगठन का ताना-बाना ध्वस्त लग रहा है। वर्ष 2011 में मारे गए शीर्ष नक्सली कैडर किशनजी के भाई अभय उर्फ सोनू ने पत्र में लिखा है कि जनता के असली मुद्दे जमीन, जंगल और सम्मान थे, लेकिन हमने बंदूक का रास्ता अपनाया, जिससे न्याय मिलने के बजाय निर्दोषों पर और अत्याचार हुए। हमें स्वीकार करना होगा कि हथियारबंद संघर्ष ने आंदोलन को कमजोर किया और लोगों को पीड़ा दी। यद्यपि इन पत्रों के जारी होने के बीच बस्तर के बीजापुर और दंतेवाड़ा में दो निर्दोष ग्रामीणों की हत्या नक्सली कर चुके हैं। इस पत्र में स्पष्ट किया गया है कि नक्सली आंदोलन अब हथियार की राह नहीं बल्कि सामाजिक-संगठनात्मक आधार पर आगे बढ़ेगा । गांव-गांव के छोटे संघर्ष और महिलाओं की भागीदारी ही असली ताकत है। अगर जनता एकजुट रहेगी तो बिना बंदूक भी अपने अधिकारों की लड़ाई जीती जा सकती है। सोनू ने समर्पण और पुनर्वास नीतियों पर सरकार को घेरते हुए कहा कि नकली आत्मसमर्पण दिखाकर सरकार जनता को गुमराह कर रही है।

हरमनप्रीत की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली बार एकदिवसीय सीरीज जीतने उतरेगी भारतीय महिला टीम

मुल्लांपुर (एजेंसी)। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारतीय महिला क्रिकेट टीम शनिवार को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाले तीसरे एकदिवसीय क्रिकेट मैच को जीतकर सीरीज अपने नाम करने उतरेगी। भारतीय टीम ने स्मृति मंधाना की शानदार पारी से दूसरे मैच में रिकॉर्ड जीत हासिल की थी जिससे उसका मनोबल बढ़ा हुआ है। ऐसे में वह इस माह के अंत में होने वाले विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली एकदिवसीय सीरीज जीतना चाहेगी। भारतीय महिला टीम अभी तक एक बार भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ द्विपक्षीय एकदिवसीय सीरीज नहीं जीती है।

पहले मैच में करारी हार के बाद भारतीय महिला टीम ने अच्छी वापसी करते हुए दूसरे मैच में 102 रन से जीत हासिल की थी। ये भारतीय टीम की ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे बड़ी जीत थी।

भारतीय टीम ने इस सीरीज में कई कैच भी छोड़े हैं और उसे इस कमजोर को दूर करना होगा। भारतीय टीम को जीत के लिए प्रदर्शन में निरंतरता लानी होगी। दूसरे मैच में हालांकि गेंदबाजों ने अच्छा दबाव बनाया जो सकारात्मक संकेत है। वहीं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी करने वाली तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर और तेज गेंदबाजी ने उनकी जोड़ीदार क्रांति गौड़ ने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। वहीं स्पिनरों ने भी बीच के ओवरों में रनों पर अंकुश लगाये रखा।

तीसरे तेज गेंदबाज के तौर पर अरुंधति रेड्डी को शामिल करना भी फायदेमंद रहा है। भारतीय टीम के एक बार फिर अलग संयोजन के साथ उतरने की उम्मीद है। कप्तान हरमनप्रीत ने कहा, ''इस सीरीज में हम हर किसी को मौका देना चाहते हैं। हम कुछ नए संयोजन आजमाने सकते हैं।''

बल्लेबाजी में अब तक इस सीरीज भारत का प्रदर्शन दोनों मैच में अच्छा रहा। विशेषकर सलामी बल्लेबाज़ स्मृति मंधाना और प्रतीका रावल ने दोनों मैचों में टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई हालांकि मध्यक्रम के बल्लेबाज बड़ी साझेदारी निभाने में विफल रहे हैं। मंधाना ने पिछले मैच में शतक जमाया था और टीम को उनसे इसी तरह के प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी। अब हरमनप्रीत, हरलीन देओल और ऋचा घोष जैसी खिलाड़ियों को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। वहीं दूसरी ओर मेहमान ऑस्ट्रेलियाई टीम वापसी के लिए कोई कसर नहीं रखेगी। कप्तान एलिसा हीली ने माना है कि दूसरे एकदिवसीय में उनकी टीम खेल के हर विभाग में विफल रही। दूसरे मैच में करारी हार से भी वह उबरना चाहेगी। वह विश्व कप से पहले जीत हासिल कर लय में आना चाहेगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

भारत: हरमनप्रीत कौर (कप्तान), उमा छेत्री, हरलीन देयोल, ऋचा घोष (विकेटकीपर), क्रांति गौड़, स्मृति मंधाना, प्रतिका रावल, स्नेह राणा, अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह, तेजल हसब्निस, सयाली सतघरे, दीप्ति शर्मा, श्री चरणी, राधा यादव।

ऑस्ट्रेलिया: एलिसा हीली (कप्तान और विकेटकीपर), ताहलिया मैकग्राथ, डार्सी ब्राउन, निकोल फाल्टम, एशले गार्डनर, किम गर्थ, ग्रेस हैरिस, अलाना किंग, चार्ली नॉट, फोबे लिचफील्ड, सोफी मोलिनक्स, बेथ मूनी, एलिस पेरी, मेगन शूट, एनाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वोल, जॉर्जिया वेयरहैम।

उम्मीद नहीं थी कि सत्र का अंत ऐसा होगा: विश्व चैंपियनशिप में खिताब का बचाव ना कर पाने पर बोले नीरज चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने शुक्रवार को कहा कि विश्व चैंपियनशिप में आठवें स्थान पर रहना उनके लिए सत्र के अंत की उम्मीद के अनुरूप नहीं था लेकिन वह ब्रेक के बाद दमदार वापसी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पिछली बार के चैंपियन चोपड़ा गुरुवार को तोक्यो में 84.03 मीटर ही भाला फेंक सके और पांचवें दौर के बाद बाहर हो गए। इस दौरान वह पीठ दर्द से परेशान रहे। उन्होंने बाद में खुलासा किया कि पीठ की समस्या इस महीने की शुरुआत से ही उन्हें परेशान कर रही थी, लेकिन वह इसे अपने खराब प्रदर्शन का कारण नहीं बताना चाहते थे।

उन्होंने विश्व चैंपियनशिप में पदार्पण कर रहे सचिन यादव की सराहना की, जिन्होंने 86.27 मीटर की शानदार थ्रो के साथ उनसे बेहतर प्रदर्शन किया और चौथे स्थान पर रहे। चोपड़ा ने एक्स पर लिखा, 'मैंने तोक्यो में विश्व चैंपियनशिप के साथ सत्र का इस तरह से अंत करने की उम्मीद नहीं की थी। मैं सभी चुनौतियों के बावजूद भारत के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहता था, लेकिन वह मेरा दिन नहीं था।'

उन्होंने कहा, 'मैं सचिन के लिए बहुत खुश हूं, जिन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और वह लगभग पदक जीत ही गए थे।% स्वर्ण पदक त्रिनिदाद और टोबैगो के केशोर्न वाल्कोट (88.16 मीटर) को मिला। उनके बाद ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स (87.38 मीटर) और अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन (86.67 मीटर) का स्थान रहा। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता 27 वर्षीय चोपड़ा ने अधिक मजबूती हासिल करके दमदार वापसी करने का वादा किया। उन्होंने कहा, 'आप सभी के समर्थन के लिए आभारी हूं। इससे मुझे दमदार वापसी करने की प्रेरणा मिलती है।'

न्यूजीलैंड ने जैमीसन और सियर्स को शामिल किया

वेलिंगटन (एजेंसी)। न्यूजीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अगले माह की शुरुआत में होने वाली तीन मैचों की टी-20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज के लिए काइल जैमीसन और बेन सियर्स को टीम में शामिल किया है। इससे पहले ये दोनो ही जिम्बाब्वे में त्रिकोणीय सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम में शामिल नहीं थे। जैमीसन निजी कारणों से वहीं सियर्स फिट नहीं होने के कारण टीम से बाहर थे। इस सीरीज में नियमित कप्तान मिशेल सेंटनर की जगह पर माइकल ब्रेसवेल कप्तानी करेंगे। ब्रेसवेल ने कहा, चैपल-हैडली सीरीज गर्मियों की शुरुआत करने का एक अच्छा तरीका है। मैं ये सीरीज देखते हुए बड़ा हुआ हूं और न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाली प्रतिद्वंद्विता बेहद रोमांचक रहती है।

उन्होंने साथ ही कहा, 2016 से ये ट्रॉफी हमारे पास नहीं है। अब हम इसे बदलना चाहते हैं। घरेलू धरती पर इसके लिए खेलने का अच्छा अवसर है। यह विश्वास करना कठिन है कि ईडन पार्क में खेले गए पहले टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच को 20 साल हो गए हैं। यह देखना हैरानी की बात है कि यह प्रारूप कितना आगे बढ़ गया है और मुझे पता है कि दोनों टीमें बे ओवल में बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार रहेंगी।

न्यूजीलैंड टीम- माइकल ब्रेसवेल (कप्तान), मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, जैक फॉल्क्स, मैट हेनरी, बेवोन जैकब्स, काइल जैमीसन, डेरिल मिशेल, रचिन रवींद्र, टिम रॉबिन्सन, बेन सियर्स, टिम सीफर्ट और ईश सोढ़ी।

द्रविड़ बन सकते हैं इन तीन में से किसी एक टीम के कोच

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तीन-तीन फ्रेंचाइजियां राहुल द्रविड़ को नये सत्र के लिए अपना कोच बनाना चाहती हैं। द्रविड़ पिछले सत्र में राजस्थान रॉयल्स के कोच थे पर उन्होंने सत्र समाप्त होने के बाद पद छोड़ दिया था। तभी से वह नई भूमिका की तलाश में हैं। द्रविड़ के रहते रॉयल्स का सफर आईपीएल 2025 में अच्छा नहीं रहा पर इसके बाद भी उनका प्रभाव कम नहीं हुआ है। द्रविड़ के कोच रहते ही भारतीय टीम ने टी20 विश्वपक जीता था। ऐसे में कई फ्रेंचाइजी उन्हें अपने साथ लाना चाहती है। इसमें कोलकाता नाइटराइडर्स से लेकर लखनऊ सुपर जायंट्स और दिल्ली कैपिटल्स जैसी टीमें हैं। लखनऊ सुपर जायंट्स ~ लखनऊ सुपर जायंट्स भी नये कोच की तलाश में है क्योंकि उसने जस्टिन लैंगर को कोच बनाया था पर वह सफल नहीं रहे। इसके बाद उसने जहीर खान को टीम का मेंटॉर बनाया पर टीम की किस्मत नहीं बदली। ऐसे में अब लखनऊ फ्रेंचाइजी भी द्रविड़ को कोच बना सकती है।

कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर): केकेआर के पास अभी कोई मुख्य कोच नहीं है। गौतम गंभीर के कोच पद छोड़ने के बाद टीम ने चंद्रकांत पंडित को जिम्मेदारी दी पर वह साल 2025 में खिताब का बचाव नहीं कर पाये। कईखिलाड़ी भी उनसे नाराज थे इसलिए उन्हें पद से हटा दिया गया। ऐसे में अब कोलकाता की टीम मुख्य कोच की तलाश में है और इसके लिए वह द्रविड़ को शामिल करना चाहती है।

दिल्ली कैपिटल्स : द्रविड़ पहले भी इस टीम के साथ रहे हैं। वह साल 2016 सीजन में उनके मेंटॉर भी रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच हेमंग बदानी ज्यादा अनुभवी नहीं हैं । ऐसे में नये सत्र के लिए कैपिटल्स द्रविड़ को अपने साथ जोड़ सकती है।

श्रीलंकाई स्पिनर पिता की मौत के कारण एशिया कप छोड़कर स्वदेश लौटा

डेब्यू अच्छा नहीं रहा, पांच छक्के लगने के साथ ही पिता के निधन से दुखों का पहाड़ टूटा

दुबई (ईएमएस) । श्रीलंकाई टीम के युवा स्पिनर दुनिथ वेलालागे के लिए एशिया कप का डेब्यू मैच अच्छा नहीं रहा । उनकी गेंदों पर पांच छक्के लगे और इससे भी दुखद ये रहा कि उनके पिता की दिल का दौरा पड़ने के कारण मौत हो गयी। इस मैच में हालांकि श्रीलंकाई टीम ने अफगानिस्तान को आसानी से हरा दिया। अपना पहला ही मैच खेल रहे इस खिलाड़ी को टीम मैनेजर ने पिता के निधन के बारे में बताया। ये 22 साल के इस स्पिनर के लिए दिल टूटने वाली खबर थी। इसके बाद वह तत्काल स्वदेश लौट गये। कप्तान चरिथ असलंका ने उन्हें अंतिम ओवर के लिए बुलाया था। अफगानिस्तान के मोहम्मद नबी ने इस ओवर का पूरा लाभ उठाया नबी ने पहली तीन गेंदों मे लगातार छक्के लगाये। इसके बाद एक नो बॉल हुई और फिर उन्होंने लगातार दो छक्के लगाये। वेलालागे के ओवर में कुल 32 रन बने। वेलालागे 5 छक्के के कारण निराश थे और ऐसे में पिता की मौत की खबर से वह पूरी तरह से टूट गये।

जुरेल के शतक से भारत ए ने बनाये चार विकेट पर 403 रन

लखनऊ विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल के शतक 113 रनों की सहायता से भारत ए ने यहां ऑस्ट्रेलिया ए के ??खिलाफ जारी अनौपचारिक टेस्ट के तीसरे दिन अपनी पहली पारी में चार विकेट पर 403 रन बनाये । जुरेल ने 132 गेंदों में 10 चौके और 4 छक्के लगाकर 113 रन बनाये । जुरेल के अलावा बल्लेबाज एन जगदीशन ने 64, बी साई सुदर्शन ने 73 और देवदत्त पडिक्कल ने नाबाद 86 रन बनाये । इससे पहले सैम कोंस्टास के 109 रनों और जोश फिलिप के नाबाद 123 रनों की सहायता से ऑस्ट्रेलिया ए टीम ने अपनी पहली पारी में 6 विकेट पर 532 रन बनाये थे । इस प्रकार भारत ए की टीम अभी भी पहली पारी के आधार पर 129 रनों से पीछे हैं । आज सुबह भारत ए ने एक विकेट पर 116 रन से आगे खेलने के साथ शुरू किया । जगदीशन और सुदर्शन की जोड़ी अधिक नहीं खेल पायी । जगदीशन, 64 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये । इसके बाद मेजबान टीम ने सुदर्शन और पडिक्कल की 76 रनों की साझेदारी से स्कोर आगे बढ़ाया । सुदर्शन के आउट होने के बाद कप्तान श्रेयस अय्यर उतरे पर वह बड़ी पारी खेलने में असफल रहे । वह 8 रन ही बना पाये ।

अगर आपको 20 विकेट लेने हैं तो इस खिलाड़ी को टेस्ट टीम का हिस्सा होना चाहिए : अनिल कुंबले

नई दिल्ली । अनुभवी स्पिनर अनिल कुंबले ने बाएं हाथ के गेंदबाज कुलदीप यादव को टेस्ट टीम में शामिल करने की वकालत की है, जो अपने साथ एक 'एक्स-फैक्टर' ' लेकर आते हैं जो भारत को 20 विकेट लेने के एक कदम और करीब ले जाता है । कुलदीप इस साल की शुरुआत में भारत के इंग्लैंड दौरे के दौरान पूरी तरह से बाहर रहे । यह उनकी फॉर्म या उनके कौशल की कमी की बात नहीं थी; टीम संयोजन और बल्लेबाजी में गहराई की चाह ने उनके लिए कोई जगह नहीं छोड़ी। कुंबले ने कहा, 'मुझे लगता है कि अगर आपको 20 विकेट लेने हैं तो कुलदीप यादव को टेस्ट मैच क्रिकेट का हिस्सा होना चाहिए । हां, रवींद्र जडेजा, वाशिंगटन सुंदर और अक्षर पटेल हैं । लेकिन मुझे लगता है कि कुलदीप का एक्स-फैक्टर यह है कि उन्हें चुनना आसान नहीं है और हमने यह देखा है ।' उन्होंने कहा, 'मैं कुलदीप को प्लेइंग इलेवन में लिस्टेड स्पिनर के तौर पर नंबर एक स्पिनर के रूप में देखना चाहूंगा । और फिर उसके बाद आप जो भी करना चाहें, ऑलराउंडर, तेज गेंदबाज और फिर बाकी खिलाड़ियों को चुनें ।'

बुमराह को पाकिस्तान के खिलाफ मैच में आराम देना चाहिए, विश्व कप विजेता की गंभीर को सलाह

स्पोर्ट्स डेस्क। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने अबू धाबी के शेख जायेद स्टेडियम में ओमान के खिलाफ ग्रुप ए के अंतिम मैच से पहले गौतम गंभीर और सूर्यकुमार यादव को एक आसान सी सलाह दी है। 1983 विश्व कप विजेता टीम के दिग्गज तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को इस मैच और रविवार को पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले सुपर 4 मुकाबले से आराम देना चाहते हैं। गावस्कर ने कहा कि ऐसा करने से प्रबंधन को 28 सितंबर को होने वाले एशिया कप फाइनल के लिए इस तेज गेंदबाज को तरोताजा रखने में मदद मिलेगी।

गावस्कर ने कहा कि ओमान के खिलाफ मैच भारत को अपने बल्लेबाजों को परखने का मौका देगा। उन्होंने कहा कि संजू सैमसन, तिलक वर्मा और हार्दिक पांड्या जैसे खिलाड़ियों को क्रीज पर कुछ समय देना चाहिए। बुमराह ने अब तक एशिया कप के दोनों मैच खेले हैं, संयुक्त अरब अमीरात और पाकिस्तान के खिलाफ, जहां उन्होंने 3 विकेट लिए हैं। इस तेज गेंदबाज ने थोड़ी सुस्ती दिखाई है, इसलिए यह तय नहीं है कि प्रबंधन इस पर ध्यान देगा या नहीं।

ज़्यादा नियमित खेल समय बुमराह को जल्द से जल्द अपनी लय वापस पाने में मदद करेगा। इससे पहले, 31 वर्षीय बुमराह इंग्लैंड के खिलाफ सभी पाँच टेस्ट मैच नहीं खेल पाए थे, हालाँकि उन्होंने तीन टेस्ट मैचों में हिस्सा लिया था, जहाँ उन्होंने दो बार पाँच विकेट लिए थे।

गावस्कर ने कहा, 'मेरा मानना है कि जसप्रीत बुमराह को आराम दिया जाना चाहिए, शायद पाकिस्तान के खिलाफ मैच के लिए भी, ताकि वह रविवार 28 तारीख को होने वाले बड़े मैच के लिए उपलब्ध रहें। भारत को इसी पर ध्यान देना चाहिए। बेशक, एक बेंच खिलाड़ी को भी टीम में शामिल करना होगा, लेकिन बुमराह को आराम देने के लिए उन्हें कल के मैच से बाहर रखा जाना चाहिए।'

गुलबदीन ने भारतीय टीम को एशिया और विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीम बताया

दुबई । अफगानिस्तान के ऑलराउंडर गुलबदीन नायब ने कहा है कि भारतीय टीम एशिया ही नहीं विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीम है । गुलबदीन ने भारतीय खिलाड़ियों के स्तर की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनसे काफी कुछ सीखने को मिलता है । गुलबदीन ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में भारतीय खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने का उनका अनुभव काफी अच्छा रहा है । इस अफगान क्रिकेटर ने कहा, भारतीय टीम एशिया और दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम है, आपको इन खिलाड़ियों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है । उन्होंने कहा, मैंने आईपीएलमें उनके साथ ड्रेसिंग रूम साझा किया है और उनके खिलाफ खेले गए सभी मैचों में हमें बहुत अच्छा अनुभव मिला है । हम यह नहीं कह सकते कि टी20 क्रिकेट में कोई भी टीम प्रबल दावेदार है, जो टीम अच्छा खेलेगी वही जीतेगी । फिर भी, अगर आप स्तर को देखें, तो भारतीय टीम सबसे अच्छी है । नायब आईपीएल दिल्ली कैपिटल्स में शामिल रहे हैं, जहां उन्होंने दो मैच खेले हैं । टी20 क्रिकेट को लेकर इस ऑलराउंडर ने कहा कि कोई भी खिलाड़ी खेल का रुख बदल सकता है । उन्होंने कहा, टी20 क्रिकेट में एक खिलाड़ी खेल का रुख बदल सकता है, चाहे वह शीर्ष क्रम का हो, मध्य क्रम का हो या निचले क्रम का, या फिर स्पिनर हो, कोई भी खिलाड़ी अपने दिन खेल को बदल सकता है । खेल इसी दिशा में जाएगा । टी20 को मनोरंजन का खेल बताते हुए उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि टी20 क्रिकेट एक मनोरंजक क्रिकेट है, इसलिए हर कोई देश के लिए कुछ करना चाहता है । एशिया कप में एक जीत और एक हार के साथ अफगानिस्तान तीसरे स्थान पर बना हुआ है ।

अश्विन के आईएलटी 20 लीग खेलने की संभावना : व्हाइट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंटरनेशनल टी20 लीग (आईएलटी) 20 के मुख्य कार्यकारी डेविड व्हाइट ने कहा है कि आने वाले समय में दिग्गज स्पिनर आर अश्विन इस लीग से खेल सकते हैं। अश्विन ने हाल ही में आईपीएल से भी संन्यास ले लिया था। इसके बाद से ही वह विदेशी लीग में खेलने की संभावनाएं तलाश रहे थे। अश्विन के जिन टूर्नामेंटों में खेलने की चर्चा हो रही है। उनमें से एक आईएलटी 20 लीग भी है। ये लीग संयुक्त अरब अमीरात में खेली जाती है। इस लीग के सीईओ व्हाइट ने कहा कि हाल ही में उनकी अश्विन के साथ काफी अच्छी बातचीत हुई है और उन्होंने कहा कि अगर हम उनके स्तर के खिलाड़ी को लाने में सफल रहे तो यह टूर्नामेंट के लिए बहुत बड़ी बात होगी।

व्हाइट ने बताया, अश्विन के साथ हमारी बातचीत बहुत सकारात्मक रही है और उम्मीद है कि निकट भविष्य में वह हमारी लीग में खेल सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, अगर हमें उनके स्तर का कोई खिलाड़ी मिल जाए तो यह बहुत बड़ी बात होगी। वह एक विश्वस्तरीय खिलाड़ी हैं। उनके नाम 500 से ज्यादा टेस्ट विकेट, एक शानदार वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर है और उनका क्रिकेट का ज्ञान कमाल का है। उनका एक करिश्माई व्यक्तित्व, खेल की गहरी समझ होना उन्हें अनमोल बनाता है। अगर वह हमारी लीग में खेलते हैं तो हमें बहुत खुशी होगी।

वहीं अश्विन के खिलाड़ी और कोच दोनो ही भूमिका निभाने को लेकर व्हाइट ने कहा, मुझे लगता है कि हम ऐसी किसी भी चीज के लिए तैयार हैं। न केवल उनके खेल और कोचिंग के लिए बल्कि उनके विश्लेषणात्मक कौशल के लिए भी अहम होगा। उनकी अपनी मीडिया कंपनी है, जिस पर वे काम कर रहे हैं। वे बहुत चतुर व्यक्ति हैं। हम सभी पहलुओं का स्वागत करेंगे।

आईसीसी के आरोपों पर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड का आया बयान, यह प्रोटोकॉल के दायरे में था

अबुधाबी (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (PCB) ने शुक्रवार को अपने मीडिया मैनेजर द्वारा संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के खिलाफ एशिया कप मैच से पहले मैच रैफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट और टीम अधिकारियों के बीच हुई बैठक का वीडियो बनाने का बचाव करते हुए कहा कि यह ICC प्रोटोकॉल के दायरे में था। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजोग गुप्ता ने PCB को पत्र लिखकर खिलाड़ियों और मैच अधिकारियों के क्षेत्र (PMOA) संहिता के कई उल्लंघनों का हवाला दिया था जिसमें कोच माइक हेसन, कप्तान सलमान अली आगा और मैनेजर नवीद अकरम चीमा की बातचीत की रिकॉर्डिंग भी शामिल थी।

ICC ने PCB की उस प्रेस विज्ञप्ति पर भी सवाल उठाया था जिसमें कहा गया था कि पाइक्रॉफ्ट ने माफी मांगी है जबकि इसमें स्पष्ट किया गया था कि रैफरी ने केवल एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के स्थल प्रबंधक द्वारा की गई गलतफहमी पर खेद व्यक्त किया था। टूर्नामेंट के एक सूत्र ने बोर्ड की प्रतिक्रिया पर कहा, 'टीम का मीडिया मैनेजर टीम का हिस्सा है और उसे पीएमओए तक जाने की अनुमति है। वहां उसकी मौजूदगी कोई उल्लंघन नहीं है।'

पीसीबी के अनुसार मौजूदा प्रोटोकॉल मीडिया प्रबंधकों को PMOA में कैमरों का इस्तेमाल करने की अनुमति देते हैं। सूत्र ने आगे कहा, 'अगर मानक परिचालन प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया होता तो ICC को मैच रैफरी से यह पूछना चाहिए कि क्या इस मामले की सूचना एसीयू (भ्रष्टाचार रोधी इकाई) को दी गई थी।'

सूत्र के मुताबिक ICC मैच अधिकारी ने इस मामले को पाकिस्तानी टीम के ACU अधिकारी के सामने उठाया था और उन्होंने इसे स्वीकार भी किया था। इससे पहले वैश्विक संस्था ने PCB को भेजे ईमेल में स्पष्ट कहा था। सूत्र ने कहा, 'आईसीसी ने खेल, टूर्नामेंट और संबंधित हितधारकों के हित को बनाए रखने के लिए PCB के अनुरोध को स्वीकार कर लिया, हालांकि यह PMOA के प्रति पूर्ण अनादर दर्शाता है।'

यह सब तब शुरू हुआ जब भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पाकिस्तान के समकक्ष सलमान अली आगा से हाथ नहीं मिलाया और पीसीबी ने आईसीसी से मैच रैफरी पर खेल भावना से संबंधित प्रोटोकॉल का उल्लंघन करने की शिकायत की और उन्हें टूर्नामेंट या पाकिस्तान के मैचों से हटाने की मांग की। ICC ने PCB के दावों को खारिज कर दिया और अपने एलीट पैनल मैच रैफरी का भी समर्थन किया जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह केवल एसीसी स्थल प्रबंधक का संदेश दे रहा था।

उम्मीद है कि एशेज के पांचों टेस्ट में खेलूंगा : पीठ की समस्या से जूझ रहे पैट कमिंस ने दिया बयान

सिडनी । पीठ की समस्या से जूझ रहे ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज पैट कमिंस एशेज के सभी पांच टेस्ट मैचों में खेलना चाहते है । कमिंस ने शुक्रवार को एक कार्यक्रम के दौरान यह बात कही। खेल क्लबों के लिए जलवायु परिवर्तन से निपटने और पर्यावरण की द्दष्टि से टिकाऊ बने रहने के लिए संघीय सरकार ने 50 मिलियन डॉलर के अनुदान की घोषणा की गई । कमिंस ने स्वीकार किया कि एशेज से पहले वह पूरी तरह से प्रतीक्षा करने और देखने की स्थिति है । कमिंस ने कहा, 'लक्ष्य पांच टेस्ट मैच है । हर गर्मियों में आप पांच टेस्ट मैच खेलने का लक्ष्य रखते हैं । यह मैच थोड़ा अलग हो सकता है क्योंकि आप बाकी मैचों से थोड़े अलग अंदाज में आ रहे हैं । लेकिन शुरुआती लक्ष्य पांच विकेट लेना है। एक बार जब हम करीब पहुंच जाएंगे, तो हम शायद अधिक यथार्थवादी परिस्थितियों पर बात करेंगे । सच कहूं तो यह कहना अभी बहुत दूर की बात है, लेकिन फिलहाल हमारा लक्ष्य इन सबके लिए तैयार रहने का प्रयास करना है ।' कमिंस ने इस तथ्य की ओर इशारा किया कि पहले तीन टेस्ट मैचों के कार्यक्रम में आठ दिनों का स्पष्ट अंतराल रखा गया था, इसलिए बैकअप लेना कोई समस्या नहीं हो सकती । लेकिन उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यह संभावना नहीं है कि ऑस्ट्रेलिया पूरी गर्मियों में एक अपरिवर्तित आक्रमण के साथ टिकेगा । उन्होंने कहा, 'ज्यादातर सालों में, कम से कम एक गेंदबाज तो खेल ही जाता है । जॉश हेजलवुड पिछले साल आखिरी हाफ में नहीं खेल पाए थे । जाहिर है, परिस्थितियां बदलती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आपको बस एक नए गेंदबाज की जरूरत है, जो आकर टेस्ट मैच में बिना पलक झपकाए 40 ओवर गेंदबाजी कर सके ।'

‘बिग बॉस-19’ से बाहर होने के बाद नगमा मिराजकर ने भावुक पोस्ट

कंटेस्टेंट नगमा मिराजकर ‘बिग बॉस-19’ के घर से बाहर हो गई हैं। इससे बाहर होने के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर एक भावुक पोस्ट लिखा है। पोस्ट में नगमा ने बताया कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह इतनी जल्दी बाहर हो जाएंगी। नगमा मिराजकर ने इंस्टाग्राम पर वीकेंड का वार के एपिसोड का एक वीडियो साझा करते हुए लिखा, के दिल अभी भरा नहीं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं इतनी जल्दी बाहर हो जाऊंगी। अगर मैंने अपने फैंस को निराश किया है तो मैं उनसे माफी चाहती हूं। बिग बॉस हाउस में मेरा स्वास्थ्य थोड़ा सही नहीं था, लेकिन फिर भी मैंने अपने बारे में बहुत कुछ सीखा। ये ऐसे सबक हैं जो मैं हमेशा अपने साथ रखूंगी। इस सफर का हिस्सा बनना मेरे जीवन के सबसे बड़े अवसरों में से एक था और इसके लिए मैं बेहद आभारी हूं।
कंटेस्टेंट ने कहा कि शो में बनी हर याद उनके दिल के करीब रहेगी। उन्होंने लिखा, बिग बॉस के घर की हर हंसी, हर आंसू, हर खामोशी और अंदर की हर याद हमेशा मेरे दिल के करीब रहेगी। मुझे उस घर में रहने का एहसास बहुत याद आएगा। हालांकि मेरा सफर जल्दी खत्म हो गया, लेकिन मेरा दिल अभी भी उस घर के अंदर उन लोगों के साथ है जिन्हें मैं प्यार और सम्मान करती हूं।
नगमा ने कहा कि वह अपने लवर आवेज दरबार को बाहर से सपोर्ट करती रहेंगी। फिलहाल वे शो में एक अच्छे कंटेस्टेंट के रूप में नजर आ रहे हैं। नगमा ने उनके बारे में लिखा, मैं अपने प्यार, आवेज का समर्थन करूंगी और मैं उसे वहां चमकते हुए देखने के लिए बेताब हूं। घर में मौजूद मेरे कुछ दोस्तों का धन्यवाद जिन्होंने इस सफर को मेरे लिए खास बनाया! इस पोस्ट के अंत में उन्होंने लिखा कि यह अंत नहीं है, यह उनके जीवन का एक और अध्याय है जिसे वे हमेशा संजोकर रखेंगी। बता दें कि बहुत जल्द आवेज और नगमा शादी करने वाले हैं। बिग बॉस के घर से बाहर निकलने के बाद नगमा अपनी शादी की तैयारियों में जुट गई हैं।

ट्रेंड्स नहीं, क्रिएटिविटी के लिए काम करना मेरा मकसद

अभिनेत्री और गायिका सबा आजाद इन दिनों अपनी नई सीरीज सॉन्ग्स ऑफ पैराडाइज को लेकर चर्चा में हैं। उन्होंने हाल ही में अपने करियर के बारे में बात की। साथ ही बताया कि कैसे उन्होंने खुद को इंडस्ट्री में टाइपकास्ट होने से बचाए रखा।

सबा एक प्रोफेशनल वॉयस ओवर आर्टिस्ट और सिंगर भी हैं। उन्होंने रॉकेट बॉयज, बंदर, मुझसे दोस्ती करोगे जैसी कई फिल्मों और सीरीज में बेहतरीन काम किया है। सबा से जब पूछा गया कि अपने करियर में उन्होंने अलग-अलग किरदार निभाए हैं, यह किसी प्लानिंग का हिस्सा है या फिर अपने आप उन तक ऐसे किरदार पहुंचे। इसका जवाब देते हुए सबा ने आईएएनएस से कहा, मैं हमेशा ऐसे प्रोजेक्ट्स चुनने की कोशिश करती हूं, जो मुझे रोमांचित करें। शुक्र है कि हर प्रोजेक्ट एक-दूसरे से अलग रहा है, जिससे मुझे हर काम में खुद को पूरी तरह झोंकने और कुछ नया सीखने का अवसर मिलता है।

फिल्म इंडस्ट्री में अक्सर कलाकारों को एक ही तरह के किरदार ऑफर होते हैं या उन्हें वैसे रोल्स तक सीमित कर दिया जाता है। इससे वो कैसे बचीं? इस पर अभिनेत्री ने कहा, मैं ट्रेंड्स का पीछा नहीं करती, बल्कि सृजन की खुशी ही मेरे काम की सबसे बड़ी वजह है। क्रिएटिविटी के लिए ही मैं काम करना पसंद करती हूं। सबा आजाद इन दिनों बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन के साथ रिलेशनशिप में हैं। कुछ समय पहले लोगों ने उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल किया था और कहा था कि ऋतिक की गर्लफ्रेंड हो, तुम्हें काम करने की क्या जरूरत? उन्होंने ट्रोल्स को करारा जवाब देकर उनकी बोलती बंद कर दी थी।
सबा आजाद ने 2008 में डायरेक्टर अनिल सीनियर की फिल्म ‘दिल कबड्डी’ से बॉलीवुड में कदम रखा था। सबा आजाद बहुत जल्द फिल्म ‘बंदर’ में दिखाई देंगी। इसे टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (टीआईएफएफ) के 50वें संस्करण में प्रीमियर किया गया था। इसकी कहानी बलात्कार के आरोपी एक सुपरस्टार के इर्द-गिर्द घूमती है, जो कानूनी व्यवस्था में व्याप्त अन्याय को उजागर करती है। इसे निखिल द्विवेदी और अनुराग कश्यप ने डायरेक्ट किया है। इसमें बॉबी देओल, सान्या मल्होत्रा और सपना पब्बी जैसे सितारे भी हैं।

एआई के प्रयोग पर वरुण-जान्हवी ने जताई चिंता

इन दिनों आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जहां लोगों का काम आसान कर रहा है, वहीं कई लोग इसके गलत इस्तेमाल से चिंता में हैं। हाल ही में बॉलीवुड के कलाकार वरुण धवन और जान्हवी कपूर ने बढ़ते एआई के चलन पर चिंता जाहिर की है। दोनों ने बताया है कि एआई को लेकर क्या सावधानी बरतने की जरूरत है।

एआई पर वरुण ने रखी राय

वरुण धवन और जान्हवी कपूर अपनी अपकमिंग फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में पहुंचे थे। उन्होंने एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में एआई के गलत इस्तेमाल पर अपनी राय रखी। वरुण धवन ने कहा तकनीक का इस्तेमाल बहुत ही जिम्मेदारी का काम है। कलाकारों के हक को सुरक्षित रखने के लिए नियम कानून बनाने की जरूरत है। उन्होंने एआई के इस्तेमाल पर कहा हम ऐसे वक्त में पहुंच जाएंगे, जहां कलाकारों की जरूरत नहीं पड़ेगी हम उन्हें खुद बनाएंगे।

जान्हवी कपूर ने जाहिर की चिंता

इसी तरह से जान्हवी कपूर ने एआई के इस्तेमाल पर अपनी राय रखते हुए कहा यह सिर्फ कलाकारों के लिए खतरे की बात नहीं है, बल्कि टेक्नीशियनों के लिए भी है। मैं पिछले कई महीनों से देख रही हूं कि कैसे एआई की मदद से चीजें की जा रही हैं। पहले किरदार का लुक तय करने में वक्त लगता था। अब वह तुरंत दिखा देते हैं कि किरदार कैसा होगा और उसकी कहानी कैसी होगी। इससे जरूर पैसों की बचत होगी लेकिन मुझे लगता है कि एक रचनात्मक इंसान के पास जो कुछ है उसे संरक्षित करने की जरूरत है।

रिलीज हुआ फिल्म का ट्रेलर

इस बीच, वरुण धवन और जान्हवी कपूर की फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी का ट्रेलर रिलीज हो गया है। दो मिनट चौवन सेकंड के इस ट्रेलर की शुरुआत अभिनेता वरुण धवन द्वारा सान्या मल्होत्रा को प्रपोज करने से होती है, जिसे सान्या ठुकरा देती हैं। इसके बाद वरुण धवन, जान्हवी कपूर के साथ मिलकर उन्हें वापस पाने की योजना बनाते हैं। शशांक खेतान द्वारा निर्देशित यह फिल्म 2 अक्टूबर, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

हम दोस्त नहीं हैं...

जल्द ही ट्विंकल खन्ना और काजोल एक चैट शो ‘टू मच’ में बतौर होस्ट साथ नजर आएंगी। इस शो के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में दोनों मौजूद थीं। इनके बीच अच्छी बान्डिंग नजर आई, इसके बावजूद ट्विंकल ने काजोल को अपनी दोस्त मनाने से इंकार कर दिया।

एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं

इवेंट में ट्विंकल ने कहा, ‘मैं शो में काजोल को बहन कहती हूं। हम दोस्त नहीं हैं बल्कि बहनें हैं। हम एक-दूसरे का मजाक उड़ाते हैं, एक-दूसरे को परेशान करते हैं। लेकिन हमको एक-दूसरे पर भरोसा है। हम एक-दूसरे को सपोर्ट करते हैं। यह हमारी बॉन्डिंग का राज है।’ काजोल भी ट्विंकल की बात पर हामी भरती हैं।

कब से आएगा काजोल और ट्विंकल का शो

काजोल और ट्विंकल खन्ना का यह नया टॉक शो ‘टू मच’ 25 सितंबर से अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होने वाला है। इस शो के हालिया रिलीज ट्रेलर में कई बॉलीवुड सेलेब्स नजर आए, जो मेहमान बनकर आएंगे। शो के ट्रेलर में आमिर, सलमान खान, गोविंदा, चंकी पांडी, वरुण धवन, आलिया भट्ट, विक्की कौशल, कृति सेनन, करण जौहर और जान्हवी कपूर नजर आए।

बिग बॉस के ऑफर को तनुश्री दत्ता ने हर बार ठुकराया

अभिनेत्री तनुश्री दत्ता ने हाल ही में बिग बॉस को लेकर बड़ा खुलासा किया है। एक इंटरव्यू में उन्होंने खुलासा किया है कि उन्हें पिछले 11 वर्षों से बिग बॉस में भाग लेने की पेशकश की जा रही है। हालांकि उन्होंने इसमें हिस्सा लेने से लगातार इनकार किया है। शो में हिस्सा लेने के लिए उन्हें 1.65 करोड़ रुपये की पेशकश की गई। उन्होंने कहा कि निर्माता चाहे उन्हें चांद भी ऑफर करें तो भी वह रियलिटी शो का हिस्सा नहीं बनेंगी।

परिवार के साथ नहीं रहतीं त

बॉलीवुड ठिकाना से बातचीत में तनुश्री ने बताया कि उनके लगातार मना करने के बावजूद, मेकर्स हर साल उन्हें शो में हिस्सा लेने के लिए कहते हैं। वह उन्हें समझाती हैं कि वह ऐसी जगह कभी नहीं रह सकतीं। उन्होंने आगे कहा कि वह अपने परिवार के साथ भी नहीं रहतीं, योंकि हर किसी को अपनी जगह चाहिए होती है।

ज्यादा पैसों की पेशकश की गई

तनुश्री दाा ने कहा उन्होंने मुझे शो में भाग लेने के लिए 1.65 करोड़ रुपये की पेशकश की। उन्होंने एक दूसरी बॉलीवुड अभिनेत्री को भी इतनी ही राशि दी थी, वह भी मेरे स्तर की अभिनेत्री थीं। बिग बॉस से जुड़े एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि वह ज्यादा पैसे की पेशकश कर सकते हैं, लेकिन मैंने इनकार कर दिया। अभिनेत्री ने कहा कि बिग बॉस में पुरुष और महिलाएं एक ही बिस्तर पर सोते हैं और एक ही जगह पर लड़ते हैं। इस तरह की चीजें वह कभी नहीं कर सकतीं।

खान-पान को लेकर सजग हैं अभिनेत्री

दाा ने कहा मैं अपने खान-पान को लेकर भी बहुत सजग हूं। वह कैसे सोच सकते हैं कि मैं ऐसी लड़की हूं जो एक रियलिटी शो के लिए एक लड़के के साथ एक ही बिस्तर पर सोएगी? मैं इतनी सस्ती नहीं हूं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे मुझे कितने करोड़ देते हैं।

तनुश्री दत्ता का काम

तनुश्री दत्ता ने 2005 में इमरान हाशमी और सोनू सूद के साथ फिल्म आशिक बनाया आपने से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद, उन्होंने ढोल, भागम भाग, 36 चाइना टाउन और गुड बॉय, बैड बॉय जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया।

सेलेब्स ने पैसे देकर खरीदे फॉलोवर्स

अमीषा पटेल ने बॉलीवुड इंडस्ट्री के बारे में बताया कि कई लोग ऐसे हैं, जो उन्हें पसंद नहीं करते क्योंकि वह उनकी चापलूसी नहीं करती हैं। साथ ही शराब और सिगरेट नहीं पीती हैं। उन्होंने बताया कि कई सेलेब्स के सोशल मीडिया पर फॉलोवर्स पैसे देकर खरीदे गए हैं।

अमीषा पटेल का इनसाइडर्स पर गुस्सा फूटा। एक्ट्रेस अमीषा पटेल बेबाकी से अपनी बात रखती हैं। वह जिस फिल्म में काम करती हैं, उसके भी डायरेक्टर-प्रोड्यूसर की गलती बताने में पीछे नहीं हटतीं। उन्होंने एक इंटरव्यू में बॉलीवुड इंडस्ट्री के बारे में अपनी राय रखी हैं। कहो ना... प्यार है की सफलता के बावजूद, उन्हें उस तरह का फेम नहीं मिला, जिसकी वह हकदार रहीं। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री में कई ऐसे लोग हैं, जो उन्हें पसंद नहीं करते हैं।
एक्ट्रेस ने आगे बताया कि 90 फीसदी सेलिब्रिटीज के सोशल मीडिया फॉलोवर्स खरीदे हुए होते हैं। एजेंसियां लोगों से कॉन्टैक्ट करती है और एक मोटा पैसा मांगती है। साथ ही उसके बदले वह उन्हें लाखों फॉलोवर्स देने का वादा करती है।
हम सभी से उस एजेंसी ने कॉन्टैक्ट किया है। कई सेलिब्रिटी सोशल मीडिया अकाउंट्स के फॉलोवर्स का एक बड़ा हिस्सा पेड है। ये रियल फॉलोवर्स नहीं हैं। मुझसे कई बार पैसे मांगे गए लेकिन हमेशा मेंने मना किया। मुझे अपने असली फैंस पसंद हैं। मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे इसलिए फॉलो करें क्योंकि मैंने इसके लिए पैसे दिए हैं। अमीषा पटेल ने बातचीत में कहा, दर्शकों का प्यार मैटर करता है। चाहे आप किसी भी कैंप का हिस्सा हों। हां क्योंकि मैं किसी खास सर्कल में फिट नहीं बैठती और न शराब पीती और न स्मोक करती हूं और न ही काम के लिए चापलूसी करती हूं, जो भी कमाया है वो अपनी काबिलियत के आधार पर ही हासिल किया है। इसके कारण कुछ लोग मुझे पसंद नहीं करते हैं। मैं किसी के आगे पीछे नहीं घूमती।

अमीषा का अकाउंट है रियल

एक्ट्रेस ने बताया, मेरा इंस्टा और ट्विटर अकाउंट रियल है। मैं कभी कोई फोटोशूट नहीं पोस्ट करती। अपनी फोटो जैसी होती है, वैसी ही अपलोड करी हूं। मेरी तस्वीरों में परफेक्ट कंपोजिशन, कैप्शन और फॉन्ट सही नहीं होता। मैं चाहती हूं कि मैं जैसी हूं, वैसी ही दिखूं।

खुद को बताया आउटसाइडर

अमीषा पटेल ने आगे कहा कि खुद को आउटसाइडर कहा और बताया कि उनके लिए कितना चैलेंजिंग रहा, आपके लिए इंडस्ट्री में तब और मुश्किल होती है, जब यहां से आपका कोई बॉयफ्रेंड या फिर पति न हो। बिना खुद को पावर कपल के रूप में पेश करने पर भी मुश्किल हो जाता है। दूसरों से कम सपोर्ट मिलता है। उनके पास भी आपको सपोर्ट करने के लिए कोई खास वजह नहीं है क्योंकि आप एक आउटसाइडर हैं।

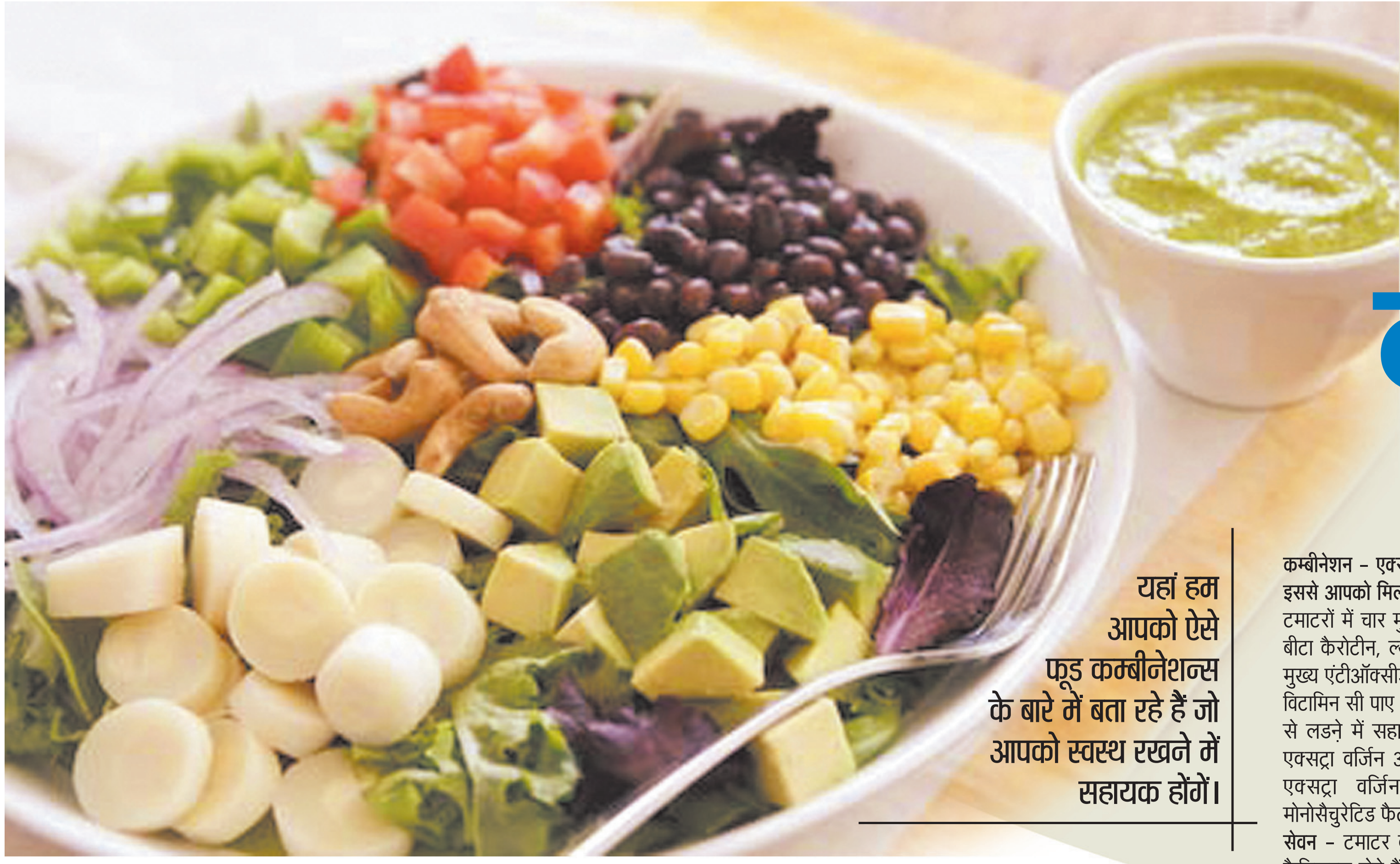

टॉप फूड कम्बीनेशन्स रखेंगे आपको स्वस्थ

यहां हम आपको ऐसे फूड कम्बीनेशन्स के बारे में बता रहे हैं जो आपको स्वस्थ रखने में सहायक होंगें।

कम्बीनेशन - अंडे तथा आम
इससे आपको मिलती है - कठोर त्वचा।
कठोर तथा अच्छी त्वचा पाने के लिए बहुत से उत्पादों की जरूरत नहीं है। आप सिर्फ कुछ अंडों तथा आमों का सेवन करें। अंडे एमीनो एसिड्स से भरपूर होते हैं जो त्वचा में कोलाजैन का निर्माण करने हेतु जरूरी होते हैं। आम में विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है जो इन एसिड्स के साथ कोलाजैन के निर्माण को बढ़ाता है। यह कम्बीनेशन शरीर में से नष्ट हुए तत्वों को पुनः निर्मित करने में सहायक होता है जो महत्वपूर्ण ढंग से त्वचा की रंगत को सुधारते हैं।
सेवन - अपने अगले नाश्ते को और पोषक बनाने के लिए आमलेट के साथ एक कप ताजा आम की कतलियों का सेवन करें जिससे आपको पूरे दिन की विटामिन सी की आपूर्ति होगी।

कम्बीनेशन - लाल शिमला मिर्च तथा ब्लैक बीन्स
इससे आपको मिलती है - बढ़िया रोग प्रतिरोधक क्षमता।
सब्जी बाजार में ये बहुत अच्छे दिखते हैं और काफी महंगे भी होते हैं परन्तु इन्हें खरीदने का एक अच्छा कारण है। आप अपनी प्लेट में लाल शिमला मिर्च को शामिल करके रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले प्लांट आयरन का सेवन अधिक करते हैं। ब्लैक बीन्स में मौजूद आयरन शरीर के लिए जज्ब करना थोड़ा कठिन है। फिर भी विटामिन सी से भरपूर लाल शिमला मिर्च आयरन को ऐसी किस्म में बदल देती है जो शरीर के लिए इस्तेमाल करना आसान होता है।
सेवन - ऑनलाइन आपको बहुत सारी रैसिपीज मिल जाएंगी जो ब्लैक बीन्स को लाल शिमला मिर्च के साथ मिक्स करके आपको एक स्वादिष्ट भोजन देंगी।

कम्बीनेशन - एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल तथा टमाटर
इससे आपको मिलती है - रोगों से बढ़िया सुरक्षा
टमाटरों में चार मुख्य कैरोटीनोएड्स यानी अल्फा कैरोटीन, बीटा कैरोटीन, ल्यूटीन तथा लाइकोपीन के साथ-साथ तीन मुख्य एंटीऑक्सीडैंट्स यानी बीटा कैरोटीन, विटामिन ई तथा विटामिन सी पाए जाते हैं जो आपकी कैंसर तथा हृदय रोग से लडऩे में सहायता करते हैं। यह रक्षात्मक कैमिकल्स एक्सट्रा वर्जिन ऑयल के साथ लिए जाएं तो बढिय़ा हैं। एक्सट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल में स्वास्थ्यवर्धक मोनोसैचुरेटिड फैट्स मौजूद होती हैं।
सेवन - टमाटर का छिलका न उतारें क्योंकि इसमें फाइटो कैमिकल्स होते हैं। एक्सट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल बहुत कम प्रसंस्कृत रूप होता है। इसलिए इसमें बहुत ही लाभदायक यौगिक मौजूद होते हैं। इसे ताप तथा रोशनी से दूर स्टोर करें।

कम्बीनेशन - हरी फूल गोभी तथा टमाटर
इससे आपको मिलती है - कैंसर से सुरक्षा।
हरी फूलगोभी तथा टमाटर में कैंसर से लडऩे वाले गुण मौजूद होते हैं परन्तु एक अध्ययन से पता चला है कि दोनों का कम्बीनेशन कैंसर से लडऩे में दोगुणा प्रभाव डालता है। विज्ञानियों ने शोध में पाया कि एक ही वक्त पर टमाटर तथा हरी फूल गोभी का सेवन करने से कैंसर युक्त प्रोस्टेट ट्यूमर्स के विकास की गति बहुत धीमी हो जाती है।
सेवन - डेढ़ कप हरी फूल गोभी का अढ़ाई कप ताजे टमाटरों के साथ पिकका या स्पाघेटी के साथ सेवन करें।

कम्बीनेशन - ग्रीन टी तथा नींबू
इससे आपको मिलता है - एक स्वस्थ हृदय।
ग्रीन टी शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडैंट्स कैटेचिन्स का भरपूर स्रोत है जो हृदय के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए जाना जाता है। फिर भी अध्ययनों के अनुसार इन यौगिकों को सिर्फ 20 प्रतिशत ही मानवीय शरीर द्वारा जज्ब किया जाता है। ग्रीन टी में नींबू का रस मिलाने से पता चला है कि कैटेचिन्स का स्तर 80 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।
सेवन - ग्रीन टी तैयार करने के बाद इसमें एक पूरे नींबू का रस निचोड़ें और पीएं।

कम्बीनेशन- जौ का दलिया तथा स्ट्राबेरीका
इससे आपको मिलता है - एक स्वस्थ हृदय।
जौ में दो महत्वपूर्ण फाइटो कैमिकल्स ऐवेनैंथ्रामाइड्स तथा फिनोलिक एसिड्स पाए जाते हैं जो विटामिन सी के साथ मिलकर बुरे कोलैस्ट्रॉल के हानिकारक प्रभावों को कम करते हैं और प्लाक के निर्माण को रोक कर हृदयाघात से आपकी रक्षा करते हैं।
सेवन - सुबह के समय एक कटोरी जौ के दलिए के साथ आधा कप कटी हुई स्ट्रॉबेरीका का सेवन करें।

कम्बीनेशन - दालचीनी तथा होलग्रेन टोस्ट
इससे आपको मिलता है - अतिरिक्त ऊर्जा तथा तेजी से वजन कम होना।
टोस्ट पर दालचीनी छिड़कने से ब्लड शूगर एक स्वस्थ स्तर तक रह सकती है जिससे आपकी ऊर्जा में आने वाली कमी रुकती है और साथ ही आपकी भूख का स्तर भी बाधित होता है। अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लीनिकल न्यूट्रीशन में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार दालचीनी भोजन के बाद पेट के खाली होने की दर को धीमा करती है और साथ ही ब्लड शूगर के स्तर को भी कम करती है।
ऐसे करें सेवन - होलग्रेन ब्रैड, ट्रांस फी मारग्रीन तथा एक चम्मच दालचीनी का सेवन करें।

कम्बीनेशन - लहसुन तथा प्याज
इससे आपको मिलती है - पूरे शरीर की सुरक्षा।
इन दोनों सब्जियों में बहुत सारे ऑर्ग्गैनोसल्फर यौगिक तथा हृदय को स्वस्थ रखने वाले प्लांट कैमिकल्स पाए जाते हैं जो आपकी धमनियों को प्लाक से मुक्त रखते हैं। इन यौगिकों में से कुछ में शरीर में से कारसिनोजैन्स को डिटॉक्सीफाई करने की ताकत पाई गई है।
सेवन - अधिकतर भारतीय रसोइयों में लहसुन तथा प्याज का कम्बीनेशन आम देखने को मिलता है। फिर भी यदि आपका मूड कुछ और खाने का हो तो लहसुन तथा प्याज के कम्बीनेशन का सेवन सूप तथा सॉस के माध्यम से भी किया जा सकता है।

कम्बीनेशन - ग्रीन टी तथा काली मिर्च
इससे आपको मिलती है - अत्यधिक पतली कमर।
क्रैश डाइटिंग को भूल जाएं। अपने अगले भोजन में एक कप ग्रीन टी में थोड़ी-सी काली मिर्च मिलाकर पीएं। इस कम्बीनेशन से ई.जी.सी.जी. नामक एंटीऑक्सीडैंट की खपत में बढ़ौतरी होती है। यह एंटीआक्सीडैंट ग्रीन टी में कैलोरी बर्निंग के लिए जाना जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि ग्रीन टी में मौजूद यौगिक हार्मोन्स को प्रभावित कर सकते हैं जो भूख तथा संतुष्टि को नियंत्रित करते हैं।
सेवन - अध्ययनों से पता चला है कि आधा छोटा चम्मच काली मिर्च से ग्रीन टी के लाभदायक यौगिकों की खपत में बढ़ौतरी हो सकती है।

जब आपके घर हो किटी पार्टी

एक दिन पहले ही योजना बना लें

सारे काम समय पर और सही ढंग से हों, इसके लिए आपको एक दिन पहले ही योजनानुसार सारी सामग्री एकत्रित कर लेनी चाहिए और घर की साज-सजावट के अलावा पार्टी में खिलाने वाले गेम्स भी तैयार कर लें ताकि पार्टी वाले दिन इन छोटे-मोटे कामों को करने में समय बर्बाद ना हो।

ड्रेस तैयार करें

ऐसा ना हो कि पार्टी की तैयारी करते हुए आप अपनी ड्रेस के बारे में सोचना ही भूल जाएं। दूसरी महिलाओं के आगे आपकी चमक फीकी ना पड़ जाए। ऐसे में आप थीम के हिसाब से किटी के एक दिन पहले ही पहनने वाली ड्रेस तैयार कर लें।

खाने-पीने की चीजें पहले से बना कर रख लें

किटी पार्टी शुरू होने के बाद आप कम से कम समय किचन में बिताएं, इसके लिए जरूरी है कि पार्टी के लिए तैयार किए गए व्यजंनों को ऐसे बर्तनों में पहले से रख लें, जिसे माइक्रोवेव में गर्म किया जा सके।

गेम्स का भी हो मजा

किटी पार्टी में तंबोला के अलावा पेपर फोल्डिंग गेम्स के साथ-साथ हिंदी फिल्मी गानों पर गेम तैयार किए जा सकते हैं।

ऐसे हों आप तैयार

केले को अच्छे से मसलकर उसे 10 से 15 मिनट के लिए फीजर में रख दें, इसके अलावा आलू काटते समय आलू के रस को अपने हाथों पर रगड़ लें। 15 मिनट बाद फीजर में रखे हुए केले के पैक को पूरे चेहरे और गर्दन पर 10 मिनट के लिए लगा लें। 10 मिनट बाद चेहरे पर लगे पैक को ठंडे पानी से धो लें। किचन में खाना बनाते समय महिलाओं के हाथ पूरी तरह चिकनाई और हल्दी वाले हो जाते हैं। आलू का रस लगा लें। इससे हाथों की चिकनाई हटाने में मदद मिलती है।
सर्दी के मौसम में ब्लैक लेगिंग के साथ किसी भी गहरे रंग का लंबा स्वेटर और साथ में स्टोल का इस्तेमाल कर सकती हैं। इन दिनों चेहरे पर हल्का मेकअप ही अच्छा लगता है। सीनियर ब्यूटीशियन मोनिका का कहना है कि 10 मिनट चेहरे पर लगाया गया केले का पैक डेड स्किन हटाने का काम करता है। पार्टी शुरू होने से पहले चेहरे पर माइस्चराइजर में हल्का फांउडेशन मिलाकर पूरे चेहरे और गर्दन पर लगाएं । हल्का आईलाइनर का इस्तेमाल करते हुए हल्की रंग की लिपिस्टक लगाएं। नाखूनों पर भी हल्के रंग की नेल पॉलिश का इस्तेमाल करें।

पति का काम नहीं करेगा परेशान

रत्नेश अपने करियर में ऊंचाइयों को महसूस करना चाहता है। उसकी पत्नी रुचि का भी यही हाल है, दोनों करियर को बहुत ज्यादा तवज्जो देते हैं। पर दोनों में एक बड़ा अंतर है। दरअसल रुचि काम ऑफिस तक सीमित रखती है, जबकि रत्नेश वर्कोहोलिक की श्रेणी में आते हैं। मतलब सिर्फ काम और काम। वह घर पर हों या ऑफिस में, बात सिर्फ काम की ही करते हैं। न पत्नी के लिए समय और न घर के दूसरे कामों के लिए। कुछ समय पहले इसकी वजह से रुचि खुद को इग्नोर महसूस करने लगी थी। उसको लगने लगा था कि बस, नाम के लिए हम लोग दोस्त और फिर पति-पत्नी बने। अक्सर झगड़े भी होने लगे। पर फिर रुचि ने खुश रहने के कुछ तरीके तलाशे। उसने महसूस किया कि गुस्सा दिखाने की बजाय पति को सपोर्ट करना शायद ज्यादा बेहतर होगा। हो सकता है रुचि का दर्द ही आपका दर्द भी हो। तो आइए जानते हैं उसने आगे और क्या-क्या हल निकाले जो आपके भी काम आ सकते हैं।

जानती हैं उनके काम का नेचर?

इस सवाल का जवाब अगर ना है तो जरा इसे हां में बदलने के बारे में सोचिए। जानिए, आखिर आपके पति के काम का नेचर है कैसा, जो उनको इतना व्यस्त रखता है। कहीं उन्हें ऑफिस में कोई दिक्कत तो नहीं है, कहीं उन पर ही ज्यादातर काम की जिम्मेदारी तो नहीं है। हो सकता है, ऑफिस में सबसे जानकार आपके पति ही हों और इसीलिए उन पर ही सारे काम का बोझ हो। हां, यह सबकुछ जानने के बाद एक काम और करना होगा। उनके सारे काम में लगने वाले समय को जरूर जोडिए। जानिए, इन कामों में आमतौर पर समय कितना लगता है क्योंकि हो सकता है पतिदेव उसी काम में समय ज्यादा लगाते हों। यह सब जानकर या तो आप समझ जाएंगी कि पति सही कारण से ही इतना व्यस्त रहते हैं या फिर आपको उनकी कमियां पता चलेंगी, जिन्हें सुधारने में आप उनकी मदद कर सकती हैं।

घर हो एक आरामदायक जगह

पति घर आएं तो आपके चेहरे पर गुस्से के चलते बारह बजे हों और घर भी अस्त-व्यस्त हो, तो स्थितियां सुधरेंगी नहीं, बल्कि और बिगड़ जाएंगी। ऐसे में जरूरी है कि आप घर का माहौल अच्छा रखें, ताकि जब पति काम की टेंशन से लौटें तो रिलैक्स महसूस कर सकें। खुद अच्छे से तैयार रहें और पति के खानपान और फिटनेस का ध्यान रखें।

आप संतुष्ट हैं?

हो सकता है साथ घूमने जाती सहेलियों को देखकर आपको महसूस होता हो कि 'अरे, बस मैं ही अकेली हूं।' पर जरा भावनाओं पर काबू कीजिए। सबकी जिंदगियां एक सी नहीं हो सकती हैं, सबकी अलग जिम्मेदारी और परिस्थितियां होती हैं और उन्हीं के हिसाब से लोग जिंदगी जीते हैं। इसलिए अकेलेपन वाली भावनाओं को मन में ही रखिए और पति को यह महसूस करवाइए कि आप हमेशा उनके साथ हैं। जब वो फुरसत में होंगे तो जरूर आपके अकेलेपन को महसूस करेंगे और सुधार की पूरी कोशिश करेंगे।

सुझाव तो दे सकती हैं

वो आपके जीवनसाथी हैं, आपने हर मुश्किल में साथ देने का वादा किया है तो उस वादे को निभाइए। वर्कोहोलिक होना उनकी आदत बन गई है, पर इससे वे शरीर और दिमाग दोनों से थक जाते हैं। यह वह समय है जब आपको अपने हिस्से का सपोर्ट दिखाना है। बैठकर पति से बात कीजिए, उनके मन की बातें जानिए, कोई दिक्कत है तो उन्हें सुझाव भी दीजिए।

खुश रहिए और खुश रखिए

जी हां, आप दोनों जितना भी वक्त साथ बिताते हैं उसे खास बनाइए। अपनी तरफ से तो आप इसकी कोशिश कर ही सकती हैं। दो घंटे मिलते हैं तो उसमें भी हंसी-मजाक की बातें, खुश करने के तरीके इन सबको आजमाइए। उन्हें बताइए कि हम दोनों जब साथ होते हैं तो खुश होते हैं। हम दोनों का साथ कितना कीमती और खास है। अपेक्षाओं को खत्म न सही पर कम तो करना ही होगा।

पति के पास काम के अलावा कोई काम नहीं है। उन्हें वर्कोहोलिक का तमगा मिला हुआ। पर यह तमगा आपको पसंद नहीं। हमेशा अकेली-अकेली रह रहकर आप थक चुकी हैं। कुछ पल जो साथ बिताते हैं, उनमें भी झगड़े होते हैं तो जरा इन पलों की कीमत समझिए और पति की मदद कीजिए। उन्हें समझिए और खुश रहिए।